



# दैनिक प्रेरणा

प्रत्येक दिन के लिए एक सुविचार

Rhonda Byrne



# दैनिक प्रेरणा

प्रत्येक दिन के लिए एक सुविचार

Rhonda Byrne





दैनिक प्रेरणा



**दैनिक प्रेरणा**  
प्रत्येक दिन के लिए एक सुविचार

रॉन्डा बर्न

  
**मंजुल पब्लिशिंग हाउस**

*First published in India by*



## **Manjul Publishing House**

*Corporate and Editorial Office*

- 2nd Floor, Usha Preet Complex, 42 Malviya Nagar, Bhopal 462 003 - India

*Sales and Marketing Office*

- 7/32, Ansari Road, Daryaganj, New Delhi 110 002 - India

Website: [www.manjulindia.com](http://www.manjulindia.com)

*Distribution Centres*

Ahmedabad, Bengaluru, Bhopal, Kolkata, Chennai,  
Hyderabad, Mumbai, New Delhi, Pune

**Hindi** translation copyright © 2017 by Manjul Publishing House Pvt. Ltd  
This edition first published in 2017

**The Secret Daily Teachings** by Rhonda Byrne



The Secret Daily Teachings copyright © 2008, © 2013, by Creste LLC.  
THE SECRET text mark and THE SECRET logo are registered trademarks of Creste  
LLC. All rights reserved.  
[www.thesecret.tv](http://www.thesecret.tv)

Published by arrangement with the original publisher, Atria Books, a Division of  
Simon & Schuster, Inc.

**ISBN 978-81-8322-782-7**

Translation by Dr. Sudhir Dixit

Book design by Gozer Media P/L (Australia) [www.gozer.com.au](http://www.gozer.com.au), directed by The  
Secret

The information contained in this book is intended to be educational and not for  
diagnosis, prescription or treatment of any health disorder whatsoever. This  
information should not replace consultation with a competent healthcare  
professional. The content of this book is intended to be used as an adjunct to a  
rational and responsible healthcare programme prescribed by a healthcare  
professional. The author and publisher are in no way liable for any misuse of the  
material.

No part of this publication may be reproduced, stored in or introduced into a  
retrieval system, or transmitted, in any form, or by any means (electronic,  
mechanical, photocopying, recording or otherwise) without the prior written  
permission of the publisher. Any person who does any unauthorized act in relation  
to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for  
damages.

“जब आप इस महान नियम के बारे में जान जाते हैं, तो इस बारे में भी जान जाते हैं कि आप अविश्वसनीय रूप से कितने शक्तिशाली हैं और आपमें अपने **विचारों** के माध्यम से अपनी मनचाही ज़िंदगी पाने की क्षमता है।”

## रॉन्डा बर्न

द सीक्रेट

आपको समर्पित

## विषय-सूची

- दिन 1
- दिन 2
- दिन 3
- दिन 4
- दिन 5
- दिन 6
- दिन 7
- दिन 8
- दिन 9
- दिन 10
- दिन 11
- दिन 12
- दिन 13
- दिन 14
- दिन 15
- दिन 16
- दिन 17
- दिन 18
- दिन 19
- दिन 20
- दिन 21
- दिन 22
- दिन 23
- दिन 24
- दिन 25
- दिन 26
- दिन 27
- दिन 28
- दिन 29
- दिन 30
-

दिन 31  
दिन 32  
दिन 33  
दिन 34  
दिन 35  
दिन 36  
दिन 37  
दिन 38  
दिन 39  
दिन 40  
दिन 41  
दिन 42  
दिन 43  
दिन 44  
दिन 45  
दिन 46  
दिन 47  
दिन 48  
दिन 49  
दिन 50  
दिन 51  
दिन 52  
दिन 53  
दिन 54  
दिन 55  
दिन 56  
दिन 57  
दिन 58  
दिन 59  
दिन 60  
दिन 61  
दिन 62  
दिन 63  
दिन 64  
दिन 65  
दिन 66

दिन 67  
दिन 68  
दिन 69  
दिन 70  
दिन 71  
दिन 72  
दिन 73  
दिन 74  
दिन 75  
दिन 76  
दिन 77  
दिन 78  
दिन 79  
दिन 80  
दिन 81  
दिन 82  
दिन 83  
दिन 84  
दिन 85  
दिन 86  
दिन 87  
दिन 88  
दिन 89  
दिन 90  
दिन 91  
दिन 92  
दिन 93  
दिन 94  
दिन 95  
दिन 96  
दिन 97  
दिन 98  
दिन 99  
दिन 100  
दिन 101  
दिन 102

दिन 103  
दिन 104  
दिन 105  
दिन 106  
दिन 107  
दिन 108  
दिन 109  
दिन 110  
दिन 111  
दिन 112  
दिन 113  
दिन 114  
दिन 115  
दिन 116  
दिन 117  
दिन 118  
दिन 119  
दिन 120  
दिन 121  
दिन 122  
दिन 123  
दिन 124  
दिन 125  
दिन 126  
दिन 127  
दिन 128  
दिन 129  
दिन 130  
दिन 131  
दिन 132  
दिन 133  
दिन 134  
दिन 135  
दिन 136  
दिन 137  
दिन 138

[दिन 139](#)  
[दिन 140](#)  
[दिन 141](#)  
[दिन 142](#)  
[दिन 143](#)  
[दिन 144](#)  
[दिन 145](#)  
[दिन 146](#)  
[दिन 147](#)  
[दिन 148](#)  
[दिन 149](#)  
[दिन 150](#)  
[दिन 151](#)  
[दिन 152](#)  
[दिन 153](#)  
[दिन 154](#)  
[दिन 155](#)  
[दिन 156](#)  
[दिन 157](#)  
[दिन 158](#)  
[दिन 159](#)  
[दिन 160](#)  
[दिन 161](#)  
[दिन 162](#)  
[दिन 163](#)  
[दिन 164](#)  
[दिन 165](#)  
[दिन 166](#)  
[दिन 167](#)  
[दिन 168](#)  
[दिन 169](#)  
[दिन 170](#)  
[दिन 171](#)  
[दिन 172](#)  
[दिन 173](#)  
[दिन 174](#)

दिन 175  
दिन 176  
दिन 177  
दिन 178  
दिन 179  
दिन 180  
दिन 181  
दिन 182  
दिन 183  
दिन 184  
दिन 185  
दिन 186  
दिन 187  
दिन 188  
दिन 189  
दिन 190  
दिन 191  
दिन 192  
दिन 193  
दिन 194  
दिन 195  
दिन 196  
दिन 197  
दिन 198  
दिन 199  
दिन 200  
दिन 201  
दिन 202  
दिन 203  
दिन 204  
दिन 205  
दिन 206  
दिन 207  
दिन 208  
दिन 209  
दिन 210

दिन 211  
दिन 212  
दिन 213  
दिन 214  
दिन 215  
दिन 216  
दिन 217  
दिन 218  
दिन 219  
दिन 220  
दिन 221  
दिन 222  
दिन 223  
दिन 224  
दिन 225  
दिन 226  
दिन 227  
दिन 228  
दिन 229  
दिन 230  
दिन 231  
दिन 232  
दिन 233  
दिन 234  
दिन 235  
दिन 236  
दिन 237  
दिन 238  
दिन 239  
दिन 240  
दिन 241  
दिन 242  
दिन 243  
दिन 244  
दिन 245  
दिन 246

दिन 247  
दिन 248  
दिन 249  
दिन 250  
दिन 251  
दिन 252  
दिन 253  
दिन 254  
दिन 255  
दिन 256  
दिन 257  
दिन 258  
दिन 259  
दिन 260  
दिन 261  
दिन 262  
दिन 263  
दिन 264  
दिन 265  
दिन 266  
दिन 267  
दिन 268  
दिन 269  
दिन 270  
दिन 271  
दिन 272  
दिन 273  
दिन 274  
दिन 275  
दिन 276  
दिन 277  
दिन 278  
दिन 279  
दिन 280  
दिन 281  
दिन 282

दिन 283  
दिन 284  
दिन 285  
दिन 286  
दिन 287  
दिन 288  
दिन 289  
दिन 290  
दिन 291  
दिन 292  
दिन 293  
दिन 294  
दिन 295  
दिन 296  
दिन 297  
दिन 298  
दिन 299  
दिन 300  
दिन 301  
दिन 302  
दिन 303  
दिन 304  
दिन 305  
दिन 306  
दिन 307  
दिन 308  
दिन 309  
दिन 310  
दिन 311  
दिन 312  
दिन 313  
दिन 314  
दिन 315  
दिन 316  
दिन 317  
दिन 318

दिन 319  
दिन 320  
दिन 321  
दिन 322  
दिन 323  
दिन 324  
दिन 325  
दिन 326  
दिन 327  
दिन 328  
दिन 329  
दिन 330  
दिन 331  
दिन 332  
दिन 333  
दिन 334  
दिन 335  
दिन 336  
दिन 337  
दिन 338  
दिन 339  
दिन 340  
दिन 341  
दिन 342  
दिन 343  
दिन 344  
दिन 345  
दिन 346  
दिन 347  
दिन 348  
दिन 349  
दिन 350  
दिन 351  
दिन 352  
दिन 353  
दिन 354

दिन 355  
दिन 356  
दिन 357  
दिन 358  
दिन 359  
दिन 360  
दिन 361  
दिन 362  
दिन 363  
दिन 364  
दिन 365  
रॉन्डा बर्न के बारे में



## दिन 1

---

द सीक्रेट में समाहित स्पष्ट सिद्धांतों में बताया गया है कि सृष्टि के नैसर्गिक नियमों के अनुरूप अपना जीवन कैसे जिएँ और किसी भी व्यक्ति के लिए सबसे अहम बात यह है कि वह इसे **जिए।** आप सिफ़्र इसे **जीकर** ही अपने जीवन के स्वामी बन सकते हैं!

जब हम एक साल के प्रत्येक दिन के सुविचारों की इस यात्रा से गुज़रेंगे, तो आपको हर दिन स्पष्टता, समझ और बुद्धिमत्ता मिलेगी। इससे आपको उन नियमों के अनुरूप जीने में मदद मिलेगी, जिनसे इंसान संचालित होते हैं। इस तरह आप वाक़ई अपने जीवन के स्वामी बन सकते हैं।

आपके साथ खुशियाँ हमेशा बनी रहें,

**रॉन्डा बर्न**

## दिन 2

---

**अ**गर आप अपने जीवन को तेज़ी से बदलना चाहते हैं, तो अपनी ऊर्जा को स्थानांतरित करने के लिए कृतज्ञता व्यक्त करें। जब आप अपनी पूरी ऊर्जा कृतज्ञता में लगा देंगे, तो अपने जीवन में चमत्कार होते देखेंगे।

अपनी परिस्थितियों को तुरंत बदलने के लिए हर दिन सौ ऐसी बातें लिखने का संकल्प लें, जिनके लिए आप धन्यवाद देना चाहते हैं। ऐसा तब तक करते रहें, जब तक कि आपको बदलाव न दिखने लगे। और कृतज्ञता को दिल से **महसूस** करें। आपकी शक्ति कृतज्ञता के कोरे शब्दों में नहीं है; बल्कि उनके पीछे की **भावना** में है।

## दिन 3

---

**अ**पके भीतर जो भी भावनाएँ होती हैं, वही आपके आने वाले कल को आकृष्ट कर रही हैं।

चिंता अधिक चिंता को खींचती है। तनाव अधिक तनाव को खींचता है। दुख अधिक दुख को आकृष्ट करता है। असंतोष अधिक असंतोष को आकृष्ट करता है।

**और...**

प्रसन्नता अधिक प्रसन्नता को लुभाती है। आनंद अधिक आनंद को आकर्षित करता है। शांति अधिक शांति को आकर्षित करती है। कृतज्ञता अधिक कृतज्ञता को आकर्षित करती है। दयालुता अधिक दयालुता को आकर्षित करती है। प्रेम अधिक प्रेम को आकर्षित करता है।

आपका काम अंदरूनी है। अपने संसार को बदलने के लिए आपको बस इतना ही करना है कि अपने अंदर के अहसास को बदल लें। यह कितना आसान है!

## दिन 4

---

सृष्टि ज़िंदगी में हर पल आपका मार्गदर्शन कर रही है और आपसे संवाद कर रही है। यह आपके विचारों पर प्रतिक्रिया कर रही है और आपकी भावनाओं के ज़रिये आपको अमूल्य फ़िडबैक दे रही है। सृष्टि आपकी भावनाओं के ज़रिये आपसे संवाद करती है! अच्छी भावनाओं का मतलब है, **यह आपके लिए अच्छा है**। बुरी भावनाएँ आपको सतर्क करती हैं कि आपका ध्यान जिस बात पर केंद्रित है, उसे बदल दें।

हर दिन अपने साथ हो रहे सृष्टि के संवाद के साथ तालमेल बैठाएँ। आप कभी अकेले नहीं हैं, पल भर के लिए भी नहीं। सृष्टि हर क़दम पर आपके साथ है और आपका मार्गदर्शन कर रही है। लेकिन आपको बस उसकी बात सुननी होती है!

## दिन 5

---

हर चीज़ में उपहारों की तलाश करें, खास तौर पर जब आप कोई नकारात्मक दिखने वाली स्थिति का सामना कर रहे हों। हम जिस भी चीज़ को आकर्षित करते हैं, उसकी बदौलत हम आगे बढ़ते हैं। इसका मतलब है कि हर चीज़ अंततः हमारे ही भले के लिए होती है।

एक नई राह और नई दिशा से सामंजस्य बैठाने के लिए नए गुणों तथा शक्तियों की ज़रूरत होगी। ज़ाहिर है, ये गुण निश्चित रूप से वही होंगे, जिनके बिना हम अपने भावी जीवन में महान चीज़ें हासिल नहीं कर सकते।

## दिन 6

---

इस बात से फ़र्क नहीं पड़ता कि आप कहाँ हैं, न ही इस बात से कि परिस्थितियाँ कितनी मुश्किल नज़र आ रही हैं। आप हमेशा वैभव की ओर बढ़ रहे हैं। हमेशा।

## दिन 7

---

“खुशी हम पर ही निर्भर करती है।”

अरस्तु (384-322 ई.पू.)

## दिन 8

---

एक ऐसा शब्द है, जिसे जब बोला जाता है, तो उसमें आपका पूरा जीवन बदलने की अथाह शक्ति होती है। आपके होंठों से गुज़रने पर यह शब्द आपके लिए पूर्ण आनंद और खुशी का ज़रिया बन जाएगा। ये शब्द आपके जीवन में चमत्कार कर देगा, नकारात्मकता को मिटा देगा और आपको हर प्रकार से समृद्ध कर देगा। इस शब्द को जब बोला जाता है और शिद्दत से महसूस किया जाता है, तो ये सृष्टि की सारी शक्तियों का आह्वान करेगा कि वे सारी चीज़ें आपकी ओर ले आएँ।

आपके, आपकी खुशी और आपके सपनों के जीवन के बीच बस ये शब्द खड़ा है...

**धन्यवाद ।**

## दिन 9

---

हम अपने भीतर जैसी भावनाएँ रखते हैं, अपने जीवन में वैसी ही चीज़ें आकर्षित करते हैं। हम जीवन में जिस भी अवस्था में हैं और जो भी अनुभव करते हैं, वह हर हालात, हर व्यक्ति व हर स्थिति हमारे भीतर के विचारों और भावनाओं की ही देन है। क्या आप इससे अधिक शानदार व्यवस्था की माँग कर सकते हैं?

आपने अपने भीतर जो भी भावनाएँ सँजोई हैं, आपका जीवन उसी का प्रतिबिंब है। और आप अपने भीतर कैसी भावनाएँ रखते हैं, यह हमेशा आपके नियंत्रण में होता है।

## दिन 10

---

अप बेजोड़ और बेहतरीन व्यक्ति हैं। इस धरती पर रहने वाले अरबों लोगों में से कोई भी आप के जैसा नहीं है। आपका अस्तित्व हमारी सृष्टि के संचालन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि आप समूची सृष्टि का एक हिस्सा हैं। जो भी आपको दिख रहा है और जो भी अस्तित्व में है, वह आपके बिना हो ही नहीं सकता था!

## दिन 11

---

**य**हाँ एक आसान, शक्तिशाली प्रक्रिया बताई जा रही है, जिसे आप हर दिन कर सकते हैं। इससे आप खुद को सृष्टि और आकर्षण के नियम के सकारात्मक सामंजस्य में ला सकते हैं।

आराम से बैठ जाएँ। गौर करें कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं। अब अपने पूरे शरीर को तनावरहित कर लें। जब पूरा शरीर तनावरहित हो जाए, तो इसे थोड़ा और शिथिल कर लें। अब इसे थोड़ा और तनावरहित करें। फिर थोड़ा और! गहराई तक तनावरहित होने की यह प्रक्रिया सात बार दोहराएँ। हर बार जितना ज़्यादा शिथिल हो सकते हों, हो जाएँ। इसे पूरा करने के बाद गौर करें कि शुरुआत में आप जैसा महसूस कर रहे थे, उसके मुकाबले अब आपकी भावनाओं में कितना अंतर आया है।

अब आप सृष्टि और आकर्षण के नियम के साथ अधिक सामंजस्य में हैं!

## दिन 12

---

डटे रहें, डटे रहें, डटे रहें, और आखिरकार आप उस मुकाम पर पहुँच जाएँगे, जहाँ रहस्य के सिद्धांत आपका स्वभाव बन जाएँगे। आप लोगों द्वारा बोले जाने वाले शब्दों को लेकर बहुत जागरूक बन जाएँगे, खास तौर पर जब वे अपनी उन चीज़ों के बारे में बोलेंगे, जिन्हें वे नहीं चाहते। आप अपने शब्दों को लेकर भी बहुत जागरूक बन जाएँगे।

जब आप इस मुकाम पर पहुँच जाएँ, तो यह एक संकेत है कि आप ज़्यादा जागरूक बनते जा रहे हैं! आप चेतन रूप से अधिक जागरूक बन रहे हैं!

## दिन 13

---

**जी** वन के हर पल में हम सभी लगातार कुछ न कुछ आकर्षित कर रहे हैं। इसलिए जब मनचाही चीज़ न मिले और आपको लगे कि यह नियम आपकी ज़िंदगी में काम नहीं कर रहा है, तो समझ जाएँ कि नियम आप को प्रतिक्रिया दे रहा है। आप या तो मनचाही चीज़ को आकर्षित कर रहे हैं या फिर उसकी कमी को आकर्षित कर रहे हैं।

यह नियम इस वक्त भी काम कर रहा है।

## दिन 14

---

“हमारे समय की सबसे क्रांतिकारी खोज यह है कि हम अपने मन के अंदरूनी नज़रिये को बदलकर अपने जीवन के बाहरी पहलुओं को बदल सकते हैं।”

**विलियम जेम्स**(1842-1910 )

## दिन 15

---

**ज**ब आप जीवन के बारे में प्रश्न पूछना शुरू करते हैं, तो यह इस बात का संकेत है कि आपके जीवन में एक बड़ा परिवर्तन आ रहा है।

जीवन का सत्य सभी के लिए इसी दुनिया में मौजूद है, जैसे कि यह हमेशा रहा है। लेकिन जवाब सिर्फ उन्हीं को मिलता है, जो प्रश्न करते हैं और अंततः वही सत्य को भी खोज पाते हैं। जब हम प्रश्न करते हैं और जवाब जानने की गहरी इच्छा रखते हैं, तो हम जवाब को एक ऐसे रूप में आकर्षित करेंगे, जिसे हम समझ सकें।

जीवन में उत्तर पाने के लिए आपको प्रश्न करना होगा।

## दिन 16

---

हमारे पास प्रेम ही वह सर्वोच्च शक्ति है, जिससे हम आकर्षण के नियम के पूर्ण सामंजस्य में आ सकते हैं। हम जितना ज़्यादा प्रेम महसूस करते हैं, हमारी शक्ति भी उतनी ही ज़्यादा होती है। हम जितना ज़्यादा निःस्वार्थ प्रेम महसूस करते हैं, हमारी शक्ति भी उतनी ही अथाह होती जाती है।

आकर्षण के नियम को प्रेम का नियम भी कहा गया है, क्योंकि यह नियम अपने आप में मानव जाति को प्रेम का उपहार है। इस पर चलकर हम अपने जीवन को आश्वर्यजनक बना सकते हैं।

हम जितना अधिक प्रेम महसूस करते हैं, हमारे पास प्रेम, खुशी और सद्ब्राव से भरपूर शानदार जीवन का निर्माण करने की शक्ति उतनी ही अधिक होती है।

## दिन 17

---

**सृष्टि** के साथ सामंजस्य में रहने पर कैसा महसूस होता है?

यह पानी में तैरने जैसी भावना होती है। अगर आप तनाव में हैं या आप पानी का प्रतिरोध करते हैं, तो आप ढूब जाएँगे। वहीं, अगर आप पानी के सामने समर्पण कर देते हैं, तो वह आपको सहारा देगा और आप तैरते रहेंगे। इसी तरह की भावना के साथ आप खुद को सृष्टि के सामंजस्य में लाते हैं।

तनाव को दूर जाने दें और तैरते रहें!

## दिन 18

---

**अ**र्थात् कर्षण का नियम कहता है कि बीमारी से लड़कर उससे मुक्ति नहीं पायी जा सकती। अगर आप बीमारी से लड़ने के बारे में निर्णय लेते हैं, तो आप अपना ध्यान बीमारी से लड़ने, यानी बीमारी पर केंद्रित कर लेते हैं और ऐसे में हम बीमारी को ही आकर्षित करते हैं। आपने जिन डॉक्टरों को चुना है, उन्हें अपना काम करने दें और अपना दिमाग़ केवल स्वास्थ्य पर केंद्रित रखें।

तंदुरुस्ती के विचार सोचें। तंदुरुस्ती के शब्दों को बोलें। और स्वयं की एक पूरी तरह स्वस्थ व्यक्ति के रूप में कल्पना करें।

## दिन 19

---

**अ**पनी आर्थिक परिस्थितियों को बदलने के लिए आप एक बड़ा काम यह कर सकते हैं कि आपको जो भी पैसा मिले, उसका दस प्रतिशत दान कर दें। इसे दसवें भाग के दान का आध्यात्मिक नियम कहा जाता है और यह वह सबसे बड़ा काम है, जिसे अपनाकर आप अपने जीवन में और भी अधिक धन ला सकते हैं।

## दिन 20

---

ऐसा क्यों होता है कि बेहतरीन कारों के मालिक अक्सर उन्हें बेदाग़ा और बहुत साफ़-सुधरा रखते हैं, जबकि पुरानी कारें अक्सर अंदर से गंदी होती हैं?

यह फर्क कङ्ग का प्रमाण है।

आपके पास जो है, उसकी कङ्ग करने से आपकी मनचाही चीज़ आपके पास आती है।

लोगों ने इसी तरह बेहतर कारों को अपनी ओर आकर्षित किया है।

## दिन 21

---

कभी भी दूसरों को बदलने के लिए मजबूर न करें; उन्हें स्वाभाविक रूप से व उनकी इच्छानुरूप बदलने के लिए स्वतंत्र छोड़ दें। वे जरूर बदलना चाहेंगे, जब उन्हें यह पता लगेगा कि आपके द्वारा किया गया बदलाव आपके लिए लाभकारी रहा था।

“दूसरों में बेहतर बनने की इच्छा जगाना वाकई महान काम है; लेकिन आप ऐसा तभी कर सकते हैं, जब आप उन्हें अकेला छोड़ दें और खुद को और भी श्रेष्ठ बनाते चलें।”

**क्रिश्ण डी. लार्सन**(1874-1954 )

मास्टरी ऑफ़ सेल्फ़

## दिन 22

---

**न**कारात्मक नज़र आने वाली हर चीज़ में अच्छाई छिपी होती है। अगर हम यह बात जान सकें कि हर चीज़ में, नकारात्मक स्थिति में भी, अच्छाई होती है, तो हमारे देखते ही देखते नकारात्मक स्थिति अच्छी या लाभकारी स्थिति में बदल जाएगी। ज़्यादातर लोग खुद को अच्छाई से सिफ़्र इसलिए दूर कर लेते हैं, क्योंकि वे उस पर बुरे का ठप्पा लगा देते हैं, और फिर ज़ाहिर है वही उनकी हङ्कीकत बन जाती है। लेकिन इस सृष्टि में कोई चीज़ बुरी नहीं है; यह तो हमारी असमर्थता है कि हम व्यापक दृष्टिकोण से चीज़ों को स्पष्ट रूप से देख नहीं पाते हैं।

शांति यह जानने पर मिलती है कि हर ओर केवल अच्छाई ही व्याप्त है।

## दिन 23

---

**अ**प आकर्षण के नियम के साथ साझेदारी में हैं और इस साझेदारी के ज़रिये ही अपने जीवन का सृजन कर रहे हैं। हर व्यक्ति की आकर्षण के नियम के साथ व्यक्तिगत साझेदारी होती है। आप इस नियम का इस्तेमाल अपने लिए करते हैं; और संसार का हर व्यक्ति अपने लिए करता है। आप किसी दूसरे की इच्छा के बगैर उस पर आकर्षण के नियम का इस्तेमाल नहीं कर सकते। और इस बात के लिए ईश्वर को धन्यवाद दें कि यह नियम इस तरह काम करता है। अगर यह इस तरह काम नहीं करता, तो दूसरे लोग आपके जीवन में ऐसी चीज़ का सृजन कर देते, जिसे आप नहीं चाहते हैं।

आप अपने विचारों और भावनाओं के ज़रिये सृजन करते हैं, और सिफ़्र आप ही अपने विचार सोच सकते हैं या अपनी भावनाएँ महसूस कर सकते हैं। यह काम आपके लिए कोई दूसरा नहीं कर सकता।

## दिन 24

---

**अ**गर आपका कोई मित्र किसी मुश्किल दौर से गुज़र रहा है, तो उसकी मदद करने के लिए यह सुनिश्चित करें कि आपका आनंद भी क्रायम रहे। आपकी अच्छी भावनाएँ उसे उबारने में सहायक होंगी। आप ऐसे लोगों की बातचीत को दिशा देकर भी उनकी मदद कर सकते हैं, ताकि वे अपनी मनचाही चीज़ों के बारे में ही बात करें। जब कभी वे अनचाही चीज़ों के बारे में बात करें, तो धैर्य के साथ बातचीत को उनकी मनचाही चीज़ों की दिशा में मोड़ दें। आप उनसे इस तरह भी बात कर सकते हैं, मानो उनका मुश्किल समय खत्म हो गया है। आप उन्हें यह कल्पना करने का सुझाव भी दे सकते हैं कि बुरा दौर गुज़र गया है और सब कुछ ठीक है।

उनसे बात करते समय एक माध्यम बनें और सृष्टि के संपर्क में बने रहने में उनकी मदद करें।

## दिन 25

---

**अप** अपने जीवन के मार्ग को अंधकार से प्रकाश या नकारात्मक से सकारात्मक में बदल सकते हैं। जब भी आप सकारात्मक पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो आप हर बार अपने जीवन में ज़्यादा प्रकाश ला रहे हैं, और आप जानते हैं कि प्रकाश सारे अंधकार को मिटा देता है। कृतज्ञता, प्रेम, अच्छे विचार, शब्द और कार्य प्रकाश लाते हैं तथा अंधकार मिटा देते हैं।

अपने जीवन को सकारात्मकता की रोशनी से भर लें!

## दिन 26

---

**ज**ब आप अपने अस्तित्व (अपने विचारों और भावनाओं के ज़रिये) के स्तर को संतुलित करना शुरू करेंगे, तो कुछ उतार-चढ़ाव आ सकते हैं, और आप एक स्तर से दूसरे स्तर के बीच बदलाव की स्थिति में रह सकते हैं। यह अवस्था बहुत संक्षिप्त रहेगी और थोड़े ही समय में आप ज्यादा ऊँचे स्तर पर स्थिर होने लगेंगे, फिर उससे भी ऊँचे स्तर पर, और इस तरह आप निरंतर ऊपर चढ़ते चले जाएँगे।

आपको शुरूआत में चलने में थोड़े अभ्यास की ज़रूरत पड़ी थी, है न? लेकिन दृढ़ संकल्प की बदौलत आपने चलना सीख लिया था। दोनों की बातों में कोई फ़र्क नहीं है।

## दिन 27

---

“यह मानना बहुत बड़ी ग़लतफ़हमी है कि संपत्तियाँ अथवा वस्तुएँ चाहे वे किसी भी तरह की क्यों न हों, अपने आप में संतुष्टि या खुशी का स्रोत हैं। कोई भी व्यक्ति, स्थान या वस्तु आपको खुशी नहीं दे सकती। वे आपको खुशी का कारण या संतुष्टि का भाव तो दे सकती हैं, लेकिन जीने का आनंद तो आपके भीतर से ही आता है।”

**जेनेवीव बेहरेंड**(1881-1960 )

याँर इनविज़िबल पावर

## दिन 28

---

अपने आने वाले कल का सृजन करने के लिए रात को सोने से पहले अपने आज के दिन के बारे में सोचें और अच्छे पलों के लिए कृतज्ञता महसूस करें। अगर कोई ऐसी चीज़ थी जिसे आप अलग तरीके से होते देखना चाहते थे, तो उसे अपने दिमारा में मनचाहे तरीके से होते हुए देखें। जैसे ही आप सोने को हों, तब मन ही मन कहें, “मैं गहरी नींद में सोऊँगा और ऊर्जा से भरपूर होकर जागूँगा। कल का दिन मेरी ज़िंदगी का सबसे खूबसूरत दिन होगा।”

शुभ रात्रि!

## दिन 29

---

**ज**ब प्रेम संबंधों की बात आती है, तो अक्सर लोग सोचते हैं कि वे किसी खास इंसान को पाना चाहते हैं। लेकिन यदि आप इस बारे में गहराई से विचार करें, तो देखेंगे कि वास्तव में वे किसी खास इंसान को नहीं चाहते हैं। दरअसल वे तो एक आदर्श जीवनसाथी के साथ सुखी जीवन बिताना चाहते हैं। लेकिन इसके बावजूद लोग कोशिश करते हैं और सृष्टि को यह बताते हैं कि वह खास व्यक्ति कौन है। यदि सृष्टि के माध्यम से यह नहीं हो रहा है, तो सृष्टि का संदेश बहुत स्पष्ट है: “मैंने बीस साल बाद तक देख लिया है और आप जिस आनंद या सुख के हक्कदार हैं, वह आपको इस चाहे गये खास संबंध में नहीं मिलेगा।”

हम ऐसा क्यों सोचते हैं कि हम उससे (ब्रह्माण्ड) ज़्यादा जानते हैं, जो हर चीज़ देख सकता है?

## दिन 30

---

पृथ्वी और मानव जाति को आपकी ज़रूरत है। उन्हें आपकी ज़रूरत है, इसीलिए आप यहाँ हैं।

## दिन 31

---

**अपमें** किसी भी चीज़ को आदेश देने की क्षमता है। अगर आप चाहते हैं कि नकारात्मक विचार आपसे दूर चले जाएँ, तो यह आदेश दे सकते हैं:

“दूर चले जाओ! तुम्हारा मुझमें कोई अंश नहीं है। मैं आत्मा हूँ। मैं सिर्फ श्रेष्ठ और पवित्र विचारों को ही रखता हूँ।”

इससे ज्यादा सच्चे शब्द कभी नहीं बोले गए।

## दिन 32

---

**अ**पकी पैदाइश के पल से ही आपका एक ब्रह्मांडीय साथी होता है, जो जीवन भर आपका साथ नहीं छोड़ता है। इस साथी के अविश्वसनीय संपर्क और असीमित साधन व तरीके होते हैं, जिनके माध्यम से यह हर वह चीज़ कर सकता है जो आप चाहते हैं। इस साथी के लिए समय कोई बाधा नहीं है, आकार कोई समस्या नहीं है और दूरी का अस्तित्व ही नहीं है। ऐसा कुछ नहीं है, जो आपका साथी आपके लिए नहीं कर सकता।

आपको तो बस ब्रह्मांड के नियमों का पालन करना है। माँगिए और फिर सचमुच विश्वास कीजिए कि जिस पल आप माँग रहे हैं, आपकी मनचाही चीज़ आपकी हो चुकी है।

कल्पना करें - पूरा ब्रह्मांड आपकी तरफ से खेल रहा है!

## दिन 33

---

**ठ**या आप जानते हैं कि अगर आपके जीवन में बदलाव नहीं आते, तो आपका अस्तित्व ही नहीं होता? हमारी सृष्टि और इसके भीतर मौजूद हर चीज़ लगातार बदल रही है, क्योंकि हमारी सृष्टि का निर्माण ऊर्जा से हुआ है। ऊर्जा सिफ़्र तभी अस्तित्व में रह सकती है, जब यह गतिशील हो और बदलती रहे। अगर ऊर्जा गतिशील रहना छोड़ दे, तो हमारी पूरी सृष्टि और समूचा जीवन विलुप्त हो जाएगा।

हमारा जीवन भी ऊर्जा है, इसलिए इसे भी हमेशा गतिशील रहना चाहिए और लगातार बदलते रहना चाहिए। आप अपने जीवन में गति और परिवर्तन को न तो रोक सकते हैं, न ही आपको इन्हें रोकने की कोशिश करनी चाहिए। ऊर्जा की परिवर्तनशील प्रकृति हमें जीवित रखती है। इसी की बदौलत जीवन का और हमारा विकास होता है।

## दिन 34

---

अच्छे विचार सोचें।  
अच्छे शब्द बोलें।  
अच्छे काम करें।

ये तीन तरीके आपके लिए इतना कुछ लाएँगे, जिसकी आपने कभी कल्पना भी नहीं की होगी।

## दिन 35

---

“विचार शब्द के रूप में व्यक्त होता है। शब्द कर्म के रूप में व्यक्त होता है। यही कर्म हमारी आदत बनकर हमारे चरित्र का निर्माण करता है। इसलिए अपने विचारों पर हमेशा ध्यान दें। इसका उद्भव प्रेम से होना चाहिए, जिसमें सभी प्राणियों की परवाह करना शामिल हो।”

**बुद्ध** (लगभग 563 से 483 ई.पू.)

## दिन 36

---

**अ**कर्षण का नियम अव्यक्तिगत है। यह किसी फ़ोटोकॉपी मशीन की तरह काम करता है। हर पल आप जो सोच रहे हैं और महसूस कर रहे हैं, यह नियम उसकी फ़ोटोकॉपी कर देगा और एक सटीक फ़ोटोकॉपी आपको भेज देगा - जो आपकी ज़िंदगी बन जाती है। इसका मतलब है कि आपके लिए अपने पूरे संसार को बदलना बहुत आसान है।

अपने बाहरी संसार को बदलने के लिए आपको तो बस अपने सोचने और महसूस करने के तरीके में परिवर्तन करना है, और आकर्षण का नियम उस परिवर्तन की फ़ोटोकॉपी कर देगा।

## दिन 37

---

**अ**पने जीवन को बदलने के लिए किसी न किसी मोड़ पर हमें यह निर्णय लेना होता है कि अब कष्ट सहन करने के बजाय हम हमेशा खुश रहेंगे। हम यह सिफ्ऱ एक तरीके से कर सकते हैं - हमें यह निर्णय लेना है कि हम प्रशंसा करने के लिए तत्पर रहेंगे।

जब हम चीज़ों के अच्छे और उजले पहलू पर ध्यान केंद्रित करने लगते हैं, तो आकर्षण का नियम प्रतिक्रिया करता है और हमारे नए विचारों की सटीक फोटोकॉपी हमें भेज देता है। और फिर अच्छी चीज़ों हमारी ओर आने लगती हैं। फिर और ज़्यादा अच्छी चीज़ों, फिर और ज़्यादा...

## दिन 38

---

हम जो भी चाहते हैं, वह चुनने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र हैं। शक्ति अब आपके हाथों में है और आप ही यह चुन सकते हैं कि अपने जीवन में उस शक्ति का इस्तेमाल किस तरह करें। आप चुनाव कर सकते हैं:

कि आज ही अपने जीवन को खुशियों से भर दें, या इसे कल तक के लिए टाल दें।

कौन-सा विकल्प बेहतर महसूस होता है? आप ही तय करें।

## दिन 39

---

**अ**पने जीवन की हर चीज़ के लिए कृतज्ञ रहना बहुत महत्वपूर्ण है। कई लोग अपनी किसी एक मनचाही चीज़ पर ध्यान केंद्रित कर लेते हैं और अपने पास मौजूद बाकी चीज़ों के लिए कृतज्ञ होना भूल जाते हैं। कृतज्ञता के बिना आप आकर्षण के नियम के ज़रिये कुछ भी हासिल नहीं कर सकते, व्योंकि अगर आपके मन से कृतज्ञता प्रकट नहीं हो रही है, तो इसका अर्थ है कि कृतज्ञता प्रकट हो रही है। कर्मठ बनें, तुरंत निर्णय लें और अपनी मनचाही चीज़ पाने के लिए अपने अस्तित्व की क्षमता का इस्तेमाल करें।

## दिन 40

---

**वि** ज़न बोर्ड एक ऐसा साधन है, जो आपकी इच्छित वस्तु की छवि आपके मन पर अंकित कर देता है। जब आप विज़न बोर्ड की ओर देखते हैं, तो अपनी इच्छित चीज़ के चित्र की छाप अपने मन पर अंकित कर रहे होते हैं। जब आप उस बोर्ड पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो वह आपकी इंट्रियों को उत्तेजित कर आपके भीतर एक सकारात्मक भाव उत्पन्न कर देता है। तब आपके पास सृजन के दो तत्व (आपका मन और भावनाएँ) पूरी शक्ति से काम करते हैं।

## दिन 41

---

**अट्ट** इंस्टाइन ने हमें बताया था कि समय सिर्फ़ भ्रम है। जब आप यह समझ लेते हैं और मान लेते हैं कि समय जैसी कोई चीज़ नहीं है, तो आप देख सकते हैं कि आप भविष्य में जो चाहते हैं, वह पहले से मौजूद है। इसीलिए अपनी इच्छा के बारे में लिखते, कल्पना करते या बोलते समय आपको वर्तमान काल का इस्तेमाल करना चाहिए। अपनी इच्छा को अपने मन, हृदय व शरीर में प्रसारित करें और उसे यहीं, और अभी साकार होता देखें।

## दिन 42

---

“इस संसार में उस व्यक्ति से ज्यादा प्रशंसनीय कोई नहीं है, जो किसी दूसरे का बोझ हल्का करता है।”

**अज्ञात**

## दिन 43

---

**अ**प जीवन भर रहस्य का इस्तेमाल करते रहे हैं - ऐसा कोई समय नहीं है, जब आप इसका इस्तेमाल न कर रहे हों। आप इसका प्रयोग लगातार कर रहे हैं, चाहे इसकी बदौलत आपको मनचाही चीज़ों मिल रही हों या अनचाही चीज़ों मिल रही हों। हर व्यक्ति, घटना और परिस्थिति - प्रत्येक दिन - आकर्षण के नियम के ज़रिये आपके पास आते हैं।

## दिन 44

---

**मा**नसिक चित्रण या कल्पना की कुंजी यह है कि आपके मन में चित्र चलते रहें और आप भी चित्र में गतिशील रहें। अगर आप किसी फ़िल्म की तरह चित्र को चलायमान रखते हैं, तो वाक़ई में बहुत जल्द मानसिक चित्रण में माहिर बन सकते हैं। अगर चित्र स्थिर है, तो उसे अपने दिमाग में बनाये रखना काफ़ी कठिन हो जाता है।

अपनी कल्पना को अनेक गतिविधियों के माध्यम से व्यस्त रखें। इससे आपका मन इतना मंत्रमुग्ध हो जाएगा कि किसी दूसरी चीज़ के बारे में सोच ही नहीं पाएगा।

## दिन 45

---

**ज**ब आप इरादा करके सृजन शुरू कर रहे हों, तो एक समय में एक ही चीज़ पर ध्यान केंद्रित करना अक्सर बेहतर होता है। अभ्यास करते-करते आपमें अपनी ऊर्जा का दोहन करने की अधिक शक्ति आ जाएगी और तब आप एक ही समय में कई चीज़ों पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बन जाएँगे।

अपने मन की कल्पना एक आवर्धक (मेग्निफ़ाइंग) लेंस के रूप में करें, जिसमें से सूर्य की किरणें गुज़र रही हैं। जब आप इस लेंस को एक जगह पर स्थिर और केंद्रित रखते हैं, तो आग प्रज्वलित हो जाएगी। लेंस और सूर्य तथा आपके मन और सृष्टि के बीच कोई फ़र्क नहीं है।

## दिन 46

---

**अ**गर आप द सीक्रेट (रहस्य) के सिद्धांतों का इस्तेमाल शुरू करने ही वाले हैं, तो मेरी सलाह है कि पहले आप अपने अस्तित्व के स्तर पर काम करना शुरू कर दें। आप जो चाहते हैं वह माँगें और फिर अपने भीतर **कार्य** करें। अपने विचारों और भावनाओं के ज़रिये अपने अस्तित्व के स्तर को ऊपर उठाने पर **काम** करें।

अपनी आवृत्ति को सृष्टि के सामंजस्य में लाएँ। सृष्टि की आवृत्ति विशुद्ध अच्छाई की आवृत्ति है!

## दिन 47

---

**अ**गर आप ज्यादा पैसा आकर्षित करना चाहते हैं, तो सूची बना लें कि आप उस पैसे से कौन-कौन सी चीज़ें खरीदेंगे। अपने चारों तरफ उन्हीं चीज़ों के चित्र रखें, जिन्हें आप चाहते हैं। सदा यह महसूस करें कि आपकी मनचाही चीज़ें अभी आपके पास हैं। कल्पना करें कि आप अपने प्रियजनों के साथ उन चीज़ों को साझा कर रहे हैं और उनकी खुशी की कल्पना करें।

अब आप सृजन कर रहे हैं!

## दिन 48

---

घृणा की अपनी कोई शक्ति नहीं है। घृणा तो बस प्रेम का अभाव है, जिस तरह अंधकार प्रकाश का अभाव है। गरीबी समृद्धि का अभाव है, रोग स्वास्थ्य का अभाव है और उदासी प्रसन्नता का अभाव है। संपूर्ण नकारात्मकता और कुछ नहीं, बल्कि किसी सकारात्मकता का अभाव है।

यह सब जानना बहुत, बहुत अच्छा है।

## दिन 49

---

“जीवन का उद्देश्य स्वयं का विकास है। हममें से प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वरूप को संपूर्ण तरीके से समझने के लिए यहाँ आया है।”

**ऑस्कर वाइल्ड**(1854-1900 )

द पिक्चर ऑफ डॉरियन ग्रे

## दिन 50

---

**प**ल भर के लिए सोचें कि प्रकृति आपको हर दिन कितना कुछ देती है, ताकि आप ज़िंदा रह सकें। और इसके बावजूद प्रकृति बदले में कभी कुछ नहीं माँगती।

यही सच्चा दान है।

## दिन 51

---

इस बारे में कोई संदेह नहीं है कि जब आप हर एक की भलाई के लिए आकर्षण के नियम का इस्तेमाल करते हैं, तो आप खुद को महान शक्ति से जोड़ रहे हैं। हालाँकि आप व्यक्तिगत रूप से भी इस नियम का प्रयोग कर सकते हैं, ताकि अपना जीवन पूरी तरह से जी सकें। जब आप अपना जीवन पूरी तरह से जीते हैं, तो आपके पास दूसरों को देने के लिए भी ज़्यादा होता है।

आपके दुख-दर्द से संसार को कोई मदद नहीं मिल सकती है। लेकिन आपकी खुशी और पूरी तरह जिया गया जीवन संसार को बेहतर बना देता है।

## दिन 52

---

**य**दि आप पूरे समय मानसिक चित्रण कर रहे हैं, फिर भी कोई परिवर्तन नहीं दिख रहा है, तो इसका मतलब है कि आप अनजाने में किसी दूसरे शक्तिशाली तरीके से अपने इरादे को पूरा होने से रोक रहे हैं। आप क्या सोच रहे हैं? आप कौन से शब्द बोल रहे हैं? आप कौन से कार्य कर रहे हैं? अगर आप इस बारे में आश्वस्त नहीं हैं, तो आकर्षण के नियम से यह दिखाने की माँग करें कि आप कहाँ अपने इरादे को ग़लत दिशा दे रहे हैं; और यह आपको साफ़-साफ़ दिखा देगा।

## दिन 53

---

**अप** जो करते हैं, अगर उसके लिए प्रशंसा आकर्षित करना चाहते हैं, तो जीवन में दूसरों की क़द्र और प्रशंसा करते हुए आगे बढ़ें।

अगर आप किसी दूसरे में दोष निकालते हैं, तो आप दूसरों को आमंत्रित कर रहे हैं कि वे भी आपमें दोष निकालें। अगर आप किसी दूसरे की आलोचना करते हैं, तो आप आलोचना को स्वयं ही अपनी ओर ला रहे हैं। और अगर आप दूसरों की प्रशंसा करते हैं, तो स्वयं की प्रशंसा को भी अपनी ओर ले आएँगे। आपको पहले स्वयं में अपने मनचाहे गुण को प्रमुख बनाना होता है, तभी आप इसे अपने बाहरी जगत में आकर्षित कर सकते हैं।

## दिन 54

---

पूरा संसार और आपके दिन भर के हर पल का प्रत्येक विवरण आपको आपके भीतर की स्थिति दिखा रहा है। आप किस स्तर पर हैं, इसका प्रमाण आपको अपने जीवन में आए लोगों, परिस्थितियों और आपके आसपास घट रही घटनाओं के ज़रिये मिल जाएगा। आपके भीतर जो कुछ है, जीवन आपको आईने में उसी का प्रतिबिंब दिखा रहा है।

## दिन 55

---

**य**दि कोई व्यक्ति किसी दूसरे के बारे में नकारात्मक सोचता है, तो वही नकारात्मक विचार कई गुना होकर उसकी ओर लौटते हैं। इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि कितने लोग किसी के बारे में नकारात्मक सोच रहे हैं; अगर वह व्यक्ति आनंद में है, तो वे विचार उस तक कभी नहीं पहुँच सकते, क्योंकि ऐसे विचार एक अलग आवृत्ति पर स्पंदित होते हैं। वे सारे नकारात्मक विचार कई गुना होकर उन्हीं लोगों की ओर लौट जाएँगे, जो उन्हें सोच रहे थे।

कोई भी व्यक्ति अपने विचारों के ज़रिये हमारे जीवन में नकारात्मकता नहीं ला सकता, जब तक कि हम अपनी आवृत्ति को घटाकर उसकी नकारात्मकता के स्तर तक न ले जाएँ।

## दिन 56

---

“हम हर समय ज्यादा या कम तीव्रता के विचार सृष्टि में भेज रहे हैं, और उन्हीं विचारों के परिणाम भी भोग रहे हैं। न सिफ़्र हमारी विचार तरंगें हमें और दूसरों को प्रभावित कर रही हैं, बल्कि उनमें एक आकर्षण शक्ति भी होती है। जो भी विचार हमारे मन में सबसे ऊपर होता है, उसी के अनुरूप दूसरों के विचार, वस्तुएँ, परिस्थितियाँ, लोग और ‘क्रिस्मत’ हमारी ओर आकर्षित होते हैं।”

## विलियम वॉकर ऐटकिन्सन

(1862-1932 )

थॉट वाइब्रेशन

## दिन 57

---

**ज**हरी कृतज्ञता का अनुभव करने के लिए एक जगह बैठ जाएँ और उन चीजों की सूची बनाएँ, जिनके लिए आप कृतज्ञ हैं। इसमें तब तक लिखते रहें, जब तक कि आपकी आँखें आँसुओं से न छलकने लगें। जब आँसू निकल पड़ते हैं, तो आपको अपने हृदय में और अपने भीतर पूरी तरह सबसे सुंदर भावना महसूस होगी। यही सच्ची कृतज्ञता की भावना है। एक बार जब आप यह भाव महसूस कर लेंगे, तो समझ जाएँगे कि इसे दोबारा कैसे उत्पन्न किया जाए।

कृतज्ञता की इस भावना को आप दिन में जितनी बार चाहें, उत्पन्न कर सकते हैं। बहुत कम समय में आप यह भावना किसी भी समय, लगभग तुरंत ही लाने में सक्षम हो जाएँगे।

अभ्यास के द्वारा आप वहाँ तक पहुँच जाएँगे।

## दिन 58

---

**माँ** गें, विश्वास करें, प्राप्त करें - बस ये तीन सरल चरण अपनाकर आप अपनी मनचाही चीज़ का सूजन कर सकते हैं। हालाँकि, अक्सर दूसरा चरण विश्वास करना सबसे मुश्किल हो सकता है। लेकिन यह ऐसा सबसे बड़ा क्रदम है, जो आप कभी उठा सकते हैं। विश्वास करने में शक का कोई स्थान नहीं होता है। विश्वास करने में इंसान डगमगाता नहीं है। विश्वास करने का मतलब है पूरी निष्ठा होना। विश्वास करने का मतलब है अटल रहना, चाहे बाहरी जगत में कुछ भी हो रहा हो।

जब आप विश्वास करने में माहिर हो जाते हैं, तो आप अपने जीवन पर नियंत्रण हासिल कर लेते हैं।

## दिन 59

---

**क्या** आप जानते हैं कि जब आप यह पता लगाने की कोशिश करते हैं कि आपकी इच्छा “कैसे” पूरी होगी, तो आप दरअसल अपनी इच्छा को खुद से दूर कर रहे हैं? जब आप यह पता लगाने की कोशिश करते हैं कि आप अपनी इच्छा को “कैसे” पूरी कर सकते हैं, तो आप सृष्टि को यह स्पष्ट संदेश भेज रहे हैं कि आपके पास अपनी मनचाही चीज़ नहीं है। और अगर आप अपनी मनचाही चीज़ की सही तरंगों प्रेषित नहीं कर रहे हैं, तो सृष्टि को आपकी मनचाही चीज़ आप तक पहुँचाने का संकेत कैसे मिल सकता है?

## दिन 60

---

**अप** सृष्टि के प्रसारण केंद्र हैं। आप सृष्टि के पास हर पल तरंगें भेज रहे हैं और आपके पास हर पल प्रसारण भी लौट कर आ रहा है। आप जो चाहते हैं, उसकी प्राप्ति के लिए आपको अपनी इच्छा के प्रसारण को बीच में टूटने नहीं देना है। इसके लिए आपको बस अपने अंदर यह विश्वास रखना होता है कि आपकी इच्छा साकार हो चुकी है।

लेकिन अगर आप ये सोचने लगते हैं कि आपकी मनचाही चीज़ आपके पास नहीं है, और शंका करने लगते हैं, तो इसका मतलब है कि आपने प्रसारण रोक दिया है। सृष्टि तक आपका मूल संकेत नहीं पहुँच पाया है। इसके बजाय सृष्टि के पास आपका नया संकेत पहुँच गया है कि आपके पास आपकी मनचाही चीज़ नहीं है। सृष्टि आपके नए संकेत पर अचूक प्रतिक्रिया करती है और आपको वही मिलता है, जो आप प्रसारित कर रहे हैं: मेरी मनचाही चीज़ नहीं है!

आपको तो बस उस स्थिति में वापस लौटना है कि आपके पास आपकी मनचाही चीज़ है; फिर सृष्टि इसे आप तक पहुँचा देगी।

## दिन 61

---

सृष्टि के पास आपका सपना साकार करने के अनेक तरीके हैं। मैं आपको आश्वस्त कर सकती हूँ कि जब आप अपने अंदर किसी सपने का सृजन कर लेते हैं, तो यह बाहरी संसार में किसी ऐसे तरीके से प्रकट हो जाएगा, जिसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते थे।

बस अपने सपने का सृजन करते रहें और बाकी का काम सृष्टि के भरोसे छोड़ दें।

## दिन 62

---

**मैं** ने नज़दीक का चश्मा हटाने के लिए द सीक्रेट का इस्तेमाल कैसे किया?

मैंने यह माँग की और फिर बगैर चश्मे के हर स्थिति में खुद की कल्पना करने लगी। मेरी आँखों की रोशनी तीन दिनों में ही ठीक हो गई। मैंने उन तीन दिनों पर बिलकुल गौर नहीं किया, क्योंकि मैं **जानती थी** कि यह तो उसी पल हो गया था, जिस पल मैंने उसकी माँग की थी। अगर मैं इस बात पर गौर करती कि इसमें तीन दिन लग गए, तो मेरा ध्यान इस बात पर केंद्रित होता कि यह काम अभी तक नहीं हुआ है। मैंने पूरी तरह विश्वास किया और मैं **जानती थी** कि यह हो चुका है। मुझमें पूरा विश्वास था। मैं आसानी से यह कह सकती थी कि यह अहसास होने में मुझे तीन दिन लग गए कि मेरी आँखें स्पष्ट रूप से देख रही थीं या शायद मुझे स्पष्ट दृष्टि से तालमेल बैठाने में तीन दिन लग गए। यह सच होना ही था, क्योंकि मैं जानती थी कि जिस पल मैंने माँगा, यह मुझे दे दिया गया था और इस बारे में मुझे ज़रा भी शंका नहीं थी। ऐसा मानने के कारण ही मेरी आँखों की रोशनी तीन दिनों में ही सही हो गई।

## दिन 63

---

“अगर हम अच्छा जीवन जीते हैं, तो हमारा समय भी अच्छा रहता है। हम जैसे होते हैं,  
वैसा ही समय भी होता है।”

**सेंट ऑगस्टाइन ऑफ हिप्पो** (354-430 )

## दिन 64

---

हम अपनी ओर कभी कोई चीज़ आकर्षित नहीं कर सकते, जब तक कि हम उन चीजों के लिए कृतज्ञ न हों, जो हमारे पास पहले से ही हैं। सच तो यह है कि अगर कोई व्यक्ति हर चीज़ के लिए पूरी तरह से कृतज्ञ है, तो उसे कभी कोई चीज़ माँगने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी, क्योंकि वह उसके माँगने से पहले ही उसे दे दी जाएगी।

यही कृतज्ञता की शक्ति है।

## दिन 65

---

**अपको** तो बस माँगना है और विश्वास करना है। इसके बाद खुद को अच्छाई को ग्रहण करने वाली तरंगों के स्तर पर लाना है। दरअसल इसके बाद आपको और कुछ करने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी। चीज़ों को सक्रिय करने का काम सृष्टि कर देगी, जिसमें आपको सक्रिय करना भी शामिल है।

जब आप कुछ माँगते हैं और उस पर विश्वास करते हैं, तो आप स्वयं को रास्ते से हटा रहे हैं, ताकि सृष्टि अपना काम कर सके।

## दिन 66

---

**न**कारात्मक विचारों की ज़रा भी चिंता न करें और उन्हें नियंत्रित करने की कोशिश न करें। आप तो बस इतना करें कि हर दिन केवल अच्छे विचारों को ही अपने मन में जगह देना शुरू कर दें। हर दिन जितने ज़्यादा अच्छे विचारों के बीज बो सकें, उतने बो दें। जब आप अच्छे विचार सोचना शुरू कर देते हैं, तो अधिक से अधिक अच्छे विचारों को आकर्षित करने लगते हैं और अच्छे विचार अंततः नकारात्मक विचारों को पूरी तरह से मिटा देंगे।

## दिन 67

---

**अ**गर आप चाहते हैं कि सृष्टि आपको जीवन में खुशनुमा और बेहतर चीज़ें दे, तो आपको अपने चारों ओर देखना होगा तथा अच्छी चीज़ों की क़द्र अभी और यहीं करनी होगी। इस वक्त आप जिस स्थिति में हैं, वहीं अच्छी चीज़ें खोजें और स्वयं को मिले वरदानों को गिनें। असंतुष्टि से जीवन में खुशनुमा और बेहतर चीज़ें नहीं आएँगी। असंतुष्टि आपको वहीं स्थिर कर देती है, जहाँ आप हैं। दूसरी ओर, आपके पास जो है, उसकी क़द्र करने से ज़्यादा खुशनुमा और बेहतर चीज़ें आपकी ओर आकर्षित होती हैं।

याद रखें कि आप एक चुंबक हैं! प्रशंसा से प्रशंसा आकर्षित होती है!

## दिन 68

---

**ज**ब ऊर्जा का कोई बड़ा परिवर्तन हमारे जीवन को प्रभावित करता है, तो हम अक्सर उस पर “बुरे” का ठप्पा लगा देते हैं और उस परिवर्तन का प्रतिरोध करके अपने लिए दुख, दर्द और कष्ट पैदा कर लेते हैं। लेकिन आपके पास विकल्प हमेशा रहता है।

सृष्टि का कभी भी सिफ़्र एक ही तरीका नहीं रहता। चाहे जो हुआ हो, आप कभी भी इतनी परेशानी में नहीं हो सकते कि बाहर निकलने का कोई तरीका ही न हो। आपके जीवन की हर परिस्थिति और पल में आपके लिए दो रास्ते उपलब्ध होते हैं। ये दो रास्ते हैं सकारात्मक और नकारात्मक। और **आप ही** चुनाव करते हैं कि आप किस रास्ते पर चलेंगे।

## दिन 69

---

**ज**ब आप खुशी और सुंदर जीवन माँगें, तो सिर्फ़ स्वयं के लिए ही न माँगें, बल्कि सभी के लिए माँगें। जब आप कोई बेहतर चीज़ माँगें, तो सिर्फ़ अपने लिए ही न माँगें, बल्कि सभी के लिए माँगें। बेशक अपने लिए समृद्धि और स्वास्थ्य माँगें, लेकिन इसके साथ ही ये सभी के लिए माँगें।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि अगर छह अरब लोग आपके लिए ये चीज़ें माँगें, तो क्या होगा?

## दिन 70

---

“अगर किसी इंसान का मन शुद्ध है, तो उसके आसपास का माहौल भी शुद्ध बन जाएगा।”

**बुद्ध** (लगभग 563 से 483 ई.पू.)

## दिन 71

---

**य**ह समझने के लिए कि आपके मन में स्वाभाविक रूप से विचार कैसे आ जाते हैं और आपको पता भी नहीं चलता, इसी समय रुक जाएँ, अपनी आँखें बंद कर लें और दस सेकेंड तक एक भी विचार न सोचें।

यदि विचारों को रोकने के निर्णय के बावजूद ये आपके मन में आ रहे हैं, तो यह इस बात का प्रमाण है कि आपके जीवन में जो विचार आते हैं उनके बारे में आपको पता भी नहीं चल रहा। अगर आपका मन आपका आदेश पाकर दस सेकेंड भी नहीं रुक सकता, तो क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि यह एक दिन में कितने सारे विचार उत्पन्न करता होगा?

आप इस स्थिति को बदल सकते हैं और अपने मन के मालिक बन सकते हैं। इसके लिए आपको बस एक प्रक्रिया का अभ्यास करना है कि दस सेकेंड तक एक भी विचार नहीं सोचेंगे। बहुत ही कम समय में आप दस सेकेंड तक, पंद्रह सेकेंड तक, तीस सेकेंड और उसके आगे तक सारे विचार रोकने में सक्षम हो जाएँगे। अंततः आप उस स्थिति में पहुँच जाएँगे, जहाँ यह निर्णय लेना आपके हाथ में होगा कि आप कोई विचार सोचेंगे या नहीं। जब आप अपने मन के स्वामी बन जाते हैं, तो आपको असीम शांति का आभास होगा, जो अवर्णनीय है। इसके अलावा आप आकर्षण के नियम के स्वामी भी बन जाएँगे। ज़रा इसकी कल्पना करके देखें!

## दिन 72

---

**अ**गर आप इस विचार पर अटके हैं कि आपको “पैसे की ज़रूरत” है तो आप पैसे की ज़रूरत को ही आकर्षित करते रहेंगे। आपको पैसे के बिना **इसी समय** खुश होने, **इसी समय** अच्छा महसूस करने और **इसी समय** खुश रहने का तरीका खोजना चाहिए, क्योंकि इन्हीं अच्छी भावनाओं की बदौलत आपके मन में पैसे होने का अहसास आएगा।

पैसा खुशी नहीं लाता है - लेकिन खुशी पैसा लाती है।

## दिन 73

---

**अ**गर अब तक आपका जीवन श्रेष्ठ रहा है, जहाँ हर चीज़ बिलकुल सही हुई है, तो हो सकता है कि आपमें अपना जीवन बदलने का प्रबल संकल्प और कामना न हो। दरअसल “नकारात्मक” लगने वाली तमाम चीज़ें ही हमारे अंदर हालात बदलने की विशाल इच्छा जगाती हैं। आपके भीतर उठने वाली बड़ी कामना किसी चुंबकीय ज्वाला जैसी होती है और यह बहुत शक्तिशाली होती है।

हर उस चीज़ के लिए कृतज्ञ बनें, जिसकी बदौलत उस ज्वाला ने आपके भीतर की विशाल इच्छा को सुलगाया, क्योंकि इच्छा की वह ज्वाला ही आपको शक्ति व संकल्प देगी, जिससे आप अपना जीवन बदल पाएँगे।

## दिन 74

---

**अ**पके बोले गए हर शब्द की एक आवृत्ति तरंगें होती हैं और जिस पल आप उन्हें बोलते हैं, वे सृष्टि में प्रवाहित हो जाती हैं। चूँकि आकर्षण का नियम हर आवृत्ति पर प्रतिक्रिया करता है इसलिए यह आपके शब्दों पर भी प्रतिक्रिया करता है। जब आप अपने जीवन की किसी स्थिति का वर्णन करने के लिए “वीभत्स,” “भयानक” या “दर्दनाक” जैसे नकारात्मक शब्द बोलते हैं, तो आप उतनी ही सशक्त आवृत्ति बाहर भेज रहे होते हैं। अब आकर्षण के नियम को प्रतिक्रिया करनी होगी और उसी आवृत्ति को आपकी ओर लाना होगा।

यह नियम तटस्थ है, और बस आप जिस आवृत्ति पर होते हैं उसी से मेल खाता है। क्या आप देख सकते हैं कि यह कितना महत्वपूर्ण है कि आप सिर्फ़ मनचाही चीज़ों के बारे में ही प्रबल रूप से बोलें और अनचाही चीज़ों के बारे में शक्तिशाली शब्दों का इस्तेमाल न करें?

## दिन 75

---

**अपकी** मनचाही चीज़ इसी समय आपके पास है, अपने अंदर यह भावना उत्पन्न कर लें और इसे महसूस करते रहें। यह संसार की सबसे अद्भुत भावना है। इस भावना का अभ्यास करते रहेंगे, तो यह ज़्यादा मज़बूत बनती जाएगी। आप यह महसूस करने लगेंगे कि आपकी मनचाही चीज़ें आपके पास पहले से हैं। जब आप यह कर लेते हैं, तो नियम को प्रतिक्रिया करनी ही होगी।

याद रखें, इस नियम ने जिस भी काम का ज़िम्मा लिया है उसमें कभी नाकाम नहीं रहा है और आपके मामले में भी नहीं होगा।

## दिन 76

---

**ज**ब आप छोटे बच्चे थे और स्वॉग रचने वाला खेल खेलते थे, तो क्या आपको याद है कि आप अपनी कल्पना पर कितना विश्वास करते थे? जब भी आप कोई चीज़ प्राप्त करना चाहते हैं, तो आपको यही करना चाहिए। गोपनीय तरीके से, मन ही मन यह दिखावा करें कि आपकी मनचाही चीज़ आपके पास पहले से है। मिसाल के तौर पर, अगर आप मित्र चाहते हैं, तो यह सोचें या दिखावा करें कि आपके पास इसी समय बेहतरीन मित्र हैं।

जिस पल आप इस बात पर ध्यान देना छोड़ देते हैं कि आपके पास अच्छे मित्र नहीं हैं और यह कल्पना कर महसूस करते हैं कि अब आपके पास अधिक अच्छे दोस्त हैं, तो आपके बेहतरीन दोस्त बनने लगेंगे।

यह आसान फँर्मूला हर चीज़ पर लागू होता है।

## दिन 77

---

“मनुष्य वही होता है, जिस बात में वह विश्वास करता है।”

एंटन चेखोव (1860-1904 )

द नोटबुक ऑफ एंटन चेखोव

## दिन 78

---

**आकर्षण** के नियम में माहिर बनने में आप कितनी प्रगति करेंगे, यह इस बात को जानने और फिर इसका अभ्यास करने पर निर्भर है कि आपके लिए सबसे अच्छी तरह क्या काम करता है।

आपके जीवन में अभी जो कुछ भी हो रहा है, उसके ज़रिये आप हर दिन यह देख सकते हैं कि आप क्या सोच रहे हैं। आपका पूरा संसार एक फ़िल्म है, जो आपको दिखा रही है कि आप कैसे आगे बढ़ रहे हैं। आप अँधेरे में नहीं हैं - आपको फ़िडबैक मिल रहा है। फ़िडबैक से सीखें। देखें कि आपको कौन सी चीज़ आसानी से मिली थी। फिर इस बारे में सोचें कि आपने क्या किया था, जिससे वह चीज़ आसानी से आपकी ओर आ गई।

स्वयं को जानें और आप आकर्षण के नियम के स्वामी बन जाएँगे।

## दिन 79

---

खुशी हमारे अस्तित्व की स्वाभाविक अवस्था है। नकारात्मक विचार सोचने, नकारात्मक शब्द बोलने और दुखी रहने में बहुत सारी ऊर्जा लग जाती है। आसान रास्ता है अच्छे विचार रखना, अच्छे शब्द बोलना और अच्छे कार्य करना।

आसान रास्ता चुनें।

## दिन 80

---

हजारों वर्षों पहले की प्राचीन बुद्धिमत्ता ने हमें कृतज्ञता के बारे में एक सत्य सिखाया है। हर धर्म धन्यवाद देने को कहता है। संसार के सभी ऋषि-मुनियों और संतों ने अपनी सारी नसीहतों में कृतज्ञता का प्रयोग बताया है। अब तक जितने भी महानतम लोग हुए हैं, उन्होंने हमें कृतज्ञता का मार्ग दिखाया है और इसकी मिसाल बनकर ही वे हमारे इतिहास के प्रकाश स्तंभ बने हैं।

निश्चित रूप से इसीलिए आइंस्टाइन हर दिन सैकड़ों बार “धन्यवाद” कहते थे!

## दिन 81

---

**अ**र्थात् कर्षण का नियम किसी विशाल फ़ोटोकॉपी मशीन जैसा होता है। यह आपको ठीक वही देता है, जो आप सोच रहे हैं और महसूस कर रहे हैं। अगर आपके जीवन में ऐसी चीज़ें आ रही हैं, जिन्हें आप नहीं चाहते हैं, तो यह तय है कि ज़्यादातर वक्त आप अपने विचारों या अपनी भावनाओं के बारे में जागरूक नहीं रहते हैं। अपनी भावनाओं के बारे में जागरूक बनें, ताकि जब आप अच्छा महसूस न कर रहे हों, तो आप रुककर अपनी भावनाओं में बदलाव ला सकें। और यह काम कैसे करें? ऐसे विचार सोचें, जिनसे आपको अच्छा महसूस हो।

याद रखें, यह संभव ही नहीं है कि आप अच्छे विचार सोचें और बुरा महसूस करें, क्योंकि आपकी भावनाएँ आपके विचारों का परिणाम होती हैं।

## दिन 82

---

दृढ़ कथन का प्रभावी इस्तेमाल पूरी तरह इस बात पर निर्भर करता है कि उन्हें कहते समय आप उन पर कितना विश्वास करते हैं। यदि कोई विश्वास नहीं है, तो दृढ़ कथन महज कोरे शब्द हैं, जिनमें कोई शक्ति नहीं है। विश्वास ही आपके शब्दों को शक्ति देता है।

जब आप अपनी बात पर विश्वास करते हैं तो आप उसका सृजन भी कर देते हैं, चाहे वह जो भी हो।

## दिन 83

---

“आप जिस भी शब्द का इस्तेमाल करते हैं, उसमें एक शक्तिशाली अंकुर होता है। यह अंकुर उस दिशा में फैल जाता है, जिधर आपका शब्द संकेत करता है। अंततः यह विकसित होकर भौतिक अभिव्यक्ति में बदल जाता है। मिसाल के तौर पर, आप चैतन्य आनंद की कामना करते हैं। इसलिए ‘आनंद’ शब्द को मन ही मन, लगातार और ज़ोर देकर दोहराएँ। ‘आनंद’ शब्द के दोहराव से उस कंपन की गुणवत्ता तय होती है, जिससे आनंद का अंकुर फैलता है और एक समय ऐसा आता है, जब आपका पूरा अस्तित्व आनंदमय हो जाता है। यह कोरी कल्पना नहीं, बल्कि एक सत्य है।”

**जेनेवीव बेहरेंड**(1881-1960 )

याँ इनविज़िबल पावर

## दिन 84

---

**दि**न में जिस भी समय आपको याद आए, तो कहें “मैं आनंद हूँ।” चाहें तो इसे दिन में सैकड़ों बार दोहराएँ। इसे अक्सर कहें, लेकिन बहुत धीरे से। हर शब्द पर बराबर ज़ोर दें। **मैं — आनंद — हूँ।** धीरे-धीरे बोलते समय इन शब्दों का अर्थ महसूस करें और अपने भीतर आनंद की ज़्यादा से ज़्यादा भावना महसूस करें। हर दिन उस भावना को बढ़ाते जाएँ। फिर आप इसमें बेहतर और बेहतर होते जाएँगे।

बाहरी परिस्थितियों पर प्रतिक्रिया करने के बजाय अपने भीतर उससे अधिक आनंद महसूस करें, बाहरी परिस्थितियाँ अपने आप बदल जाएँगी।

आनंद ही आनंद को आकर्षित करता है।

## दिन 85

---

**अप** जिस भी व्यक्ति को जानते हैं, प्रत्येक के बारे में सारी अच्छी बातें लिख लें। अपने बारे में सभी अद्भुत बातों की एक लंबी सूची बनाएँ। जहाँ भी जाएँ, लोगों की प्रशंसा करें। जो भी देखें, उसकी प्रशंसा करें। जिन लोगों से मिलें, सबके लिए सुखद अहसास का कारण बनें और अपने रवैये से उनका दिन बेहतर बना दें। हर मोड़ पर “धन्यवाद” कहें। प्रशंसा और कृतज्ञता के साथ चलें, बोलें, सोचें और साँस लें।

जब आप यह करते हैं, तो आपका बाहरी जीवन बदल जाएगा और आपकी अंदरूनी अवस्था का प्रतिबिंब दिखाने लगेगा।

## दिन 86

---

**अ**र्थात् कर्षण का नियम अचूक है और हर व्यक्ति को वही मिल रहा है जो वह माँग रहा है, हालाँकि ज़्यादातर समय हर व्यक्ति को इस बारे में जानकारी ही नहीं होती है कि वह अनचाहीं चीज़ें माँग रहा है। इस नियम की यही सुंदरता है कि यह बहुत प्रतिक्रियाशील है और हर पल देता रहता है, ताकि हम अपने जीवन का अनुभव कर सकें।

यह नियम कभी नहीं बदलता है - हमें यह सीखना होता है कि हम इस नियम के सामंजस्य में कैसे रहें। यह हर इंसान के लिए सबसे बड़ा कार्य है।

## दिन 87

---

**अप** अपने जीवन को स्वर्ग स्वरूप बना सकते हैं, लेकिन इसे करने का एकमात्र तरीक़ा यह है कि पहले आप अपने भीतर स्वर्ग बना लें। इसका कोई दूसरा तरीक़ा नहीं है। आप कारण हैं; आपका जीवन परिणाम है।

## दिन 88

---

**ज**ब आप किसी समस्याग्रस्त व्यक्ति पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो आप उसकी या खुद की मदद नहीं कर रहे हैं, क्योंकि आप दोनों ही मिलकर समस्या की ऊर्जा को बढ़ा रहे हैं। आप दोनों अपनी ओर “समान” समस्याओं को आकर्षित भी कर रहे हैं।

इसे जानने के बाद यह बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है कि आप और वह व्यक्ति उस चीज़ पर ध्यान केंद्रित करें, जिसे आप दोनों चाहते हैं। समस्याग्रस्त व्यक्ति को समस्या या अनचाही चीज़ के बजाय उपाय या मनचाही चीज़ के बारे में बोलने के लिए प्रोत्साहित करें। समस्या उत्पन्न ही इसलिए हुई है, क्योंकि वह व्यक्ति अनचाही चीज़ों के बारे में सोच या बोल रहा था, और इस क्रम को रोकना ज़रूरी है। अपने क़रीबी लोगों को प्रोत्साहित कर उनकी मदद करें जिससे वे मनचाही चीज़ों के बारे में बोलें। समाधान हमेशा यही होता है।

## दिन 89

---

**न**कारात्मक विचार आपका मूल या वास्तविक स्वरूप नहीं हैं। आपकी सच्ची प्रकृति हर तरह से अच्छी है। इसलिए जब संयोग से कोई नकारात्मक विचार आ जाए, तो खुद से कहें, “ये विचार मेरे नहीं हैं और मुझसे संबंधित नहीं हैं। मैं केवल अच्छाई ही हूँ और मेरे मन में खुद के तथा हर एक के प्रति सिर्फ़ अच्छे विचार ही रहते हैं।”

अब आप सच बोल रहे हैं!

## दिन 90

---

**न**कारात्मक विचारों को रोकने का एक तरीका यह है: अपने ध्यान को अपने हृदय पर केंद्रित करें। गहरी साँस लें और हृदय पर ध्यान केंद्रित करें। अपने हृदय में प्रेम महसूस करने पर पूरी तरह एकाग्रचित्त हो जाएँ। साँस छोड़ते समय भी हृदय पर ध्यान केंद्रित रखें और हृदय में प्रेम महसूस करने पर एकाग्रचित्त रहें। इसे सात बार दोहराएँ।

अगर आप इसे सही तरीके से करेंगे, तो आपको अपने मन और पूरे शरीर में बहुत बड़ा फ़र्क महसूस होगा। आप ज़्यादा शांतिपूर्ण तथा तनावरहित महसूस करेंगे और आप उन नकारात्मक विचारों को रोक देंगे।

## दिन 91

---

“हमारे स्वयं के विचारों के अलावा कोई भी चीज़ पूरी तरह हमारे नियंत्रण में नहीं है।”

रेने देकार्ट (1596-1650 )

## दिन 92

---

**य**ह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यह हमारे विचार और भावनाएँ आकर्षण के नियम के साथ मिलकर सृजन करते हैं। आप इन दोनों को अलग-थलग नहीं कर सकते। यह भी याद रखें कि आपकी भावनाएँ आपकी समस्त आवृत्ति तरंगों का सार बता रही हैं और यह भी कि आप इस पल क्या सृजन कर रहे हैं।

तो आप इस वक्त कैसा महसूस कर रहे हैं? क्या आप इससे ज़्यादा अच्छा महसूस कर सकते हैं? तो फिर इस वक्त बेहतर महसूस करने के लिए जो कुछ कर सकते हों, करें।

## दिन 93

---

**अप** जब भी गाड़ी से कहीं जाएँ, तो सृष्टि की शक्ति का इस्तेमाल करें। यात्रा शुरू करने से पहले यह इरादा कर लें कि ट्रैफ़िक बाधारहित रहेगा, आप तनावरहित व खुश होंगे और सही समय पर गंतव्य स्थान तक पहुँच जाएँगे।

शुभ यात्रा!

## दिन 94

---

**अ**पने जीवन में न्यायोचित आदान-प्रदान के नियम को शामिल कर लेना आकर्षण के नियम को जीवन में उतारना है।

व्यवसाय और निजी जीवन में हमेशा न्यायोचित आदान-प्रदान सुनिश्चित करें। व्यवसाय में आपको जितना पैसा मिलता है, हमेशा उससे अधिक मूल्य की सेवाएँ/प्रदर्शन देने की कोशिश करें। अपने निजी जीवन में आपको जो मिला है, उसे हमेशा लौटाएँ। अगर आपको दूसरों से उस वक्त समर्थन मिला था, जब आपको उसकी ज़रूरत थी और फिर कोई आपसे समर्थन माँगता है, तो खुद को मिले समर्थन को लौटाना सुनिश्चित करें। आपकी ओर सारा समर्थन सृष्टि के ज़रिये आता है, इसलिए जब आप समर्थन लौटाते हैं, तो आप सृष्टि को लौटा रहे हैं।

यह न्यायोचित आदान-प्रदान के नियम के अनुसार जीना है और यह आकर्षण के नियम के अनुसार जीना भी है।

## दिन 95

---

**अप**का जीवन आपके हाथों में है, लेकिन आपको अपने विचारों पर नियंत्रण हासिल करना सीखना ही होगा। डर, असफलता और शंकाओं की सारी समस्याएँ इसलिए हैं, क्योंकि आपका **मन** आप पर शासन कर रहा है। आपका मन हावी है और आप अपने अनियंत्रित नकारात्मक विचारों के गुलाम भी हैं और शिकार भी। यह बड़ी सीधी सी बात है। अपने मन और विचारों की बागडोर थामें। हर दिन, हर पल अपने विचारों पर नज़र रखें।

जब भी कोई नकारात्मक विचार आए, तो उसे दूर भगा दें। किसी अच्छी चीज़ के बारे में सोचकर नकारात्मक विचार को जड़ें न जमाने दें। ज़्यादा से ज़्यादा अच्छे विचार सोचें और जल्द ही वे अपने आप आने लगेंगे।

## दिन 96

---

अपने मन को स्थिर करने के लिए हर दिन अपनी आँखें बंद करके बैठें और बस विचारों को देखते रहें। विचारों का बिल्कुल प्रतिरोध न करें, बस उन्हें मन में आते देखते रहें। जब आप हर विचार पर निगाह रखेंगे, तो वह ग़ायब होने लगेगा। इसका हर दिन अभ्यास करेंगे, तो आप इसमें बेहतर होते जाएँगे। आप पाएँगे कि आपका मन पाँच सेकंड तक, फिर दस सेकंड तक और फिर बीस सेकंड तक बिना किसी विचार के रहने लगेगा।

जब आप अपने मन को स्थिर होने का आदेश देंगे और वह मान लेगा, तो कल्पना करें कि आपके पास अपनी मनचाही चीज़ का सृजन करने की कितनी शक्ति होगी।

## दिन 97

---

हमेशा याद रखें कि आपकी भावनाएँ आपकी खातिर आपके विचारों की निगरानी कर रही हैं। आपकी भावनाएँ आपको बता रही हैं कि क्या आप ऐसे विचार सोच रहे हैं जो आपके लिए अच्छे हैं या फिर ऐसे विचार सोच रहे हैं, जो आपके लिए अच्छे नहीं हैं। आप कैसा महसूस कर रहे हैं, इस बारे में अगर आप अधिकाधिक चेतन बन जाते हैं, तो आप इस बारे में भी जागरूक बन जाएँगे कि आप कैसे विचार सोच रहे हैं। आपकी भावनाएँ आपको लगातार संदेश भेज रही हैं।

अपने भीतर की बात सुनें!

## दिन 98

---

“हर चीज़ का उद्भव हमारे मन में ही है और जिसे आप बाहर खोज रहे हैं, वह पहले से आपके पास है। कोई भी व्यक्ति किसी विचार को भविष्य में नहीं सोच सकता। किसी चीज़ के बारे में आपका विचार ही उसकी शुरूआत होती है।”

**जेनेवीव बेहरेंड**(1881-1960 )

याँर इनविजिबल पावर

## दिन 99

---

**अप** जो भी करते हैं, उसमें कभी अकेले नहीं होते, जब तक कि आप खुद को अकेला न मान लें। यह किसी के लिए भी एक भयावह विचार है। जब आप जान लेते हैं कि आपके पास सृष्टि की शक्ति है, जो आपके हर विचार पर प्रतिक्रिया कर रही है और हर चीज़ हासिल करने में आपकी मदद करने का इंतज़ार कर रही है, तो आपका डर ग़ायब हो जाएगा।

आपके पास सबसे बड़ा साथी है, जिसकी पहुँच हर जगह व्याप्त ऊर्जा तक है। कोई भी इसकी रूकावट नहीं बन सकता - और आपको तो अपने सर्वव्यापी साथी के लिए बस इतना करना है कि उस पर विश्वास करें।

## दिन 100

---

**अनंद** हमारी स्वाभाविक अवस्था है, और आप यह बात जानते हैं, क्योंकि जब आप इसकी विपरीत अवस्था में होते हैं तो आपको बुरा महसूस होता है। अगर आप सचमुच आनंद की अवस्था में हैं, तो क्या आप देख सकते हैं कि स्वाभाविक रूप से आनंदित रहने में जितनी ऊर्जा लगती है, नकारात्मकता उत्पन्न करने में आपको उससे कहीं ज़्यादा ऊर्जा लगानी पड़ती है?

## दिन 101

---

**अ**पने फ़ायदे के लिए आकर्षण के नियम का इस्तेमाल करने का एक और आसान तरीका यह है:

हर रात सोने से पहले अपने मन में दिन के अच्छे पलों को दोहराएँ और उनमें से प्रत्येक के लिए दिल से धन्यवाद दें। अगले दिन के बारे में भी सोचें और यह मान लें कि यह शानदार होने वाला है, कि यह प्रेम और आनंद से भरपूर होने वाला है और सारी अच्छाई आपकी ओर आने वाली है। यह मान लें कि यह आपके जीवन का सर्वश्रेष्ठ दिन होने वाला है। फिर जब आप सुबह जागें, तो बिस्तर छोड़ने से **पहले** दिनभर के लिए अपने कार्यों का स्मरण करें और गहरा धन्यवाद दें, मानो आपने उन सभी को पूर्ण कर लिया हो।

## दिन 102

---

“अगर” शब्द में शंका की शक्तिशाली तरंगें होती हैं। जब आप अपनी मनचाही चीज़ के बारे में सोच या बोल रहे हों, तो अपनी शब्दावली से “अगर” शब्द हटा दें। क्या आप देख सकते हैं कि जब आप “अगर” शब्द का इस्तेमाल करते हैं, तो आपको यह यक्कीन नहीं होता है कि आपकी मनचाही चीज़ आपके पास आ चुकी है?

आकर्षण का नियम आपको अपनी मनचाही चीज तब तक नहीं दे सकता, जब तक आप “अगर” शब्द से शंका प्रकट करते रहेंगे। आप जो चाहते हैं, उसके बारे में सोचते या बोलते समय केवल “जब” शब्द का इस्तेमाल करें; “जब यह होता है,” “जब मैं यह करता हूँ,” “जब मैं वहाँ रहता हूँ,” “जब यह आता है,” “जब मेरे पास वह होता है!” **जब, जब, जब !**

## दिन 103

---

**चा**हे आप यह बात जानते हों या नहीं, आज आप सृष्टि के कैटलॉग से अपने आने वाले कल के लिए ऑर्डर दे रहे हैं। आज आपके प्रबल विचार और भावनाएँ एक आवृत्ति का निर्माण कर रहे हैं, जो आपके आने वाले कल के जीवन को अपने आप तय कर देते हैं।

इस वक्त और आज के पूरे दिन अच्छा महसूस करें; आपका कल अपने आप शानदार बन जाएगा।

## दिन 104

---

**अ**र्थात् कर्षण के नियम के ज़रिये अपने जीवन में खुशी लाने के लिए आपको इसी पल खुश रहना होगा। यह बड़ा ही सरल फ़ॉर्मूला है। खुशी ही खुशी को आकर्षित करती है। हालाँकि लोग कई बहाने बनाने लगते हैं कि वे खुश क्यों नहीं हो सकते। वे कर्ज़ के बहाने बनाते हैं, सेहत के बहाने बनाते हैं, संबंधों के बहाने बनाते हैं और सभी तरह की चीज़ों के बहाने बनाते हैं कि वे इस सरल फ़ॉर्मूले का इस्तेमाल क्यों नहीं कर सकते। लेकिन यह फ़ॉर्मूला ही नियम है।

चाहे बहाना जो भी हो, उसके बावजूद जब तक आप खुशी महसूस नहीं करते हैं, तब तक आप खुशी को आकर्षित नहीं कर सकते। आकर्षण का नियम आपसे कह रहा है, “इस पल खुश रहें और जब तक आप यह करते रहेंगे, मैं आपको असीमित खुशी देता रहूँगा।”

## दिन 105

---

“मानव उस संपूर्ण का एक हिस्सा मात्र है, जिसे हम ‘सृष्टि’ कहते हैं। एक ऐसा हिस्सा जिसमें समय और दूरी की सीमा है। वह स्वयं और अपने विचारों व भावनाओं का अनुभव इस तरह करता है, मानो ये बाक़ी से अलग हों - उसकी चेतना एक तरह का दृष्टि भ्रम होती है। यह भ्रम हमारे लिए एक जेल की तरह है, जो हमें अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं और हमारे चंद क़रीबी लोगों के स्नेह तक सीमित रखता है। हमारा उद्देश्य यह हो कि हम अपनी करुणा का दायरा बढ़ाकर इस क्रैंड से खुद को आज़ाद करें, जिसमें सारे जीवित प्राणी और समूची प्रकृति समा जाए। कोई भी इसे पूरी तरह हासिल करने में सक्षम नहीं होता है, लेकिन इसकी कोशिश ही स्वतंत्रता का हिस्सा और आंतरिक सुरक्षा की बुनियाद है।”

**ऐल्बर्ट आइंस्टाइन**(1879-1955 )

## दिन 106

---

**बी** सर्वीं शताब्दी के पहले दशक में फ्रांसीसी मनोवैज्ञानिक और फार्मासिस्ट एमील कूए उपचार में सकारात्मक विचारों के इस्तेमाल के पुरोधा थे। उनकी सफल उपचार विधियों की प्रक्रिया के एक भाग के रूप में उनके रोगी हर दिन यह दोहराते थे: “हर दिन, हर तरीके से मैं बेहतर और बेहतर होता जा रहा हूँ।” यह सिर्फ स्वास्थ्य के क्षेत्र में ही शक्तिशाली कथन नहीं है। जैसा इन शब्दों से ही झलकता है, यह हमारे जीवन के सभी क्षेत्रों के लिए शक्तिशाली वक्तव्य है।

जब आप इस कथन का इस्तेमाल करें, तो इसे बहुत धीरे-धीरे और शब्दों के अर्थ पर पूरे विश्वास के साथ कहें। हम शब्दों में जो ऊर्जा भरते हैं, उसी से वे शक्तिशाली बनते हैं।

## दिन 107

---

**कृ**त्यना करें कि आप अपनी मनचाही चीज़ के बारे में सृष्टि को एक ईमेल लिख रहे हैं। जब आप खुश होते हैं कि आपका ईमेल बहुत स्पष्ट है, तो आप “सेंड” बटन दबा देते हैं और आप जान जाते हैं कि आपका आग्रह आकाश में चला गया है। आप यह भी जानते हैं कि सृष्टि का सर्वर एक स्वचालित प्रणाली है और यह ईमेल के आग्रहों पर सवाल नहीं उठाता है। इसका काम तो बस हर आग्रह को पूरा करना है।

अगर आप चिंता करने लगते हैं और तनाव में आ जाते हैं कि आपकी मनचाही चीज़ आपको अब तक नहीं मिली है, तो अनजाने में ही आप सृष्टि को एक और ईमेल भेज देते हैं कि वह आपके ऑर्डर को रोक दे। और फिर इसके बाद आप हैरान होते हैं कि आपने जो माँग था, वह आपको क्यों नहीं मिला।

एक बार जब आप माँग लें, तो यह विश्वास रखें कि सृष्टि का सर्वर एक स्वचालित अचूक प्रणाली है, जो कभी असफल नहीं होता और फिर अपने आग्रह के पूरा होने की अपेक्षा रखें!

## दिन 108

---

**अ**र्थात् कर्षण के नियम के सबसे शक्तिशाली उपयोगों में से एक ऐसा है, जिसका आप प्रयोग कर सकते हैं। यह तीस दिन का अभ्यास अथाह दान के बारे में है।

तीस दिनों तक लगातार हर दिन कुछ न कुछ दें। आप जिससे भी मिलें, चाहे वे अजनबी हों, मित्र हों या परिवार वाले हों, सबको प्रसन्नता, मुस्कान, गर्मजोशी भरी बातें, प्रेम, प्रशंसा और बधाई दें। अपने दिल की गहराई से बात करें, दिन के हर पल अपना सर्वश्रेष्ठ दें और नेक विचारों व बातों से सभी के दिन को बेहतर बनाने का उद्देश्य रखें।

जब आप अपना सर्वश्रेष्ठ देते हैं, तो आप इसे ही अपनी ओर तेज़ रफ्तार से लौटते देखकर दंग रह जाएँगे।

## दिन 109

---

एक बार जब आप आकर्षण के नियम को जान जाते हैं, तो आप अपनी बातों को सुनकर अपने बारे में सबसे अच्छी खोज कर सकते हैं।

जब आप किसी चीज़ को पूर्ण सत्य के रूप में दर्शाते हैं, तो यह महसूस करें कि यह एक ऐसी चीज़ है जिसमें आप सचमुच यक़ीन करते हैं और यह विश्वास आपके जीवन में इसका सृजन कर रहा है। अगर अपनी बात सुनते समय आपको लगता है कि आप कोई ऐसी बात कह रहे हैं, जिसे आप नहीं चाहते हैं, तो तुरंत अपने वाक्य को बदलकर दोबारा इस तरह कहें कि आपके शब्द आपकी मनचाही चीज़ों को प्रदर्शित करें। जब आप अपनी बात सुनते हैं, तो अतीत के अनुभवों के बारे में बहुत कुछ सीख लेंगे और यह भी कि आपने अब तक क्या और कैसे सृजित किया है। और फिर, जब आप अपने शब्दों को सुनते और बदलते हैं, तो अपने भविष्य की पूरी दिशा को बदल रहे हैं!

## दिन 110

---

**नि**राशा का नकारात्मक भाव आपकी मनचाही वस्तु को आपसे दूर रखता है। निराशा को सकारात्मक भाव में बदलने के लिए यह सोचना और कहना शुरू करें, “जब मेरी मनचाही चीज़ आती है, तो मैं...” और खाली जगह को भर दें।

यह खुद को विश्वास करने योग्य बनाने का एक बढ़िया तरीका है। विश्वास करना ही वह मंज़िल है, जहाँ आप जाना चाहते हैं।

## दिन 111

---

### मैं स्वयं से वादा करता हूँ कि...

मैं इतना शक्तिशाली बनूँगा कि कोई चीज़ मेरी मानसिक शांति भंग न कर सके।

मैं जिस भी व्यक्ति से मिलूँगा, उससे स्वास्थ्य, खुशी और समृद्धि की बात करूँगा।

मैं अपने सारे मित्रों को यह महसूस कराऊँगा कि उनमें बहुत कुछ अच्छा है।

मैं हर चीज़ के उजले पक्ष को देखूँगा और अपनी आशावादिता को सच करूँगा।

मैं केवल सर्वश्रेष्ठ सोचूँगा, सर्वश्रेष्ठ के लिए ही काम करूँगा और सर्वश्रेष्ठ की ही अपेक्षा करूँगा।

मैं दूसरों की सफलता के बारे में भी उतना ही उत्साहित रहूँगा, जितना अपनी सफलता के बारे में रहता हूँ।

मैं अतीत की ग़लतियों को भूल जाऊँगा और भविष्य की महान उपलब्धियों की ओर ध्यान दूँगा।

## दिन 112

---

मैं हर समय खुशनुमा भाव रखूँगा और हर प्राणी को देखकर मुस्कराऊँगा।

मैं खुद को बेहतर बनाने में इतना समय लगा दूँगा कि मेरे पास दूसरों की आलोचना का समय ही न रहे।

मैं इतना बड़ा बनूँगा कि चिंता ही न रहे, इतना विनम्र कि क्रोध ही न आए, इतना शक्तिशाली कि डर ही न रहे और इतना खुश कि मुश्किलों को आने का मौका ही न मिले।

मैं अपने बारे में अच्छा सोचूँगा और संसार के सामने इस तथ्य को लाऊँगा, शब्दों से नहीं, बल्कि महान कार्यों से।

मैं इस विश्वास के साथ रहूँगा कि जब तक मैं अपने भीतर के सर्वश्रेष्ठ के प्रति सच्चा हूँ, तब तक पूरा संसार मेरी तरफ है।

**क्रिश्मियन डी. लार्सन** (1874-1954 )  
द ऑप्टिमिस्ट्स क्रीड

## दिन 113

---

**को** ई बाहरी शक्ति आपके जीवन को तब तक प्रभावित नहीं कर सकती, जब तक कि आप अपने विचारों से उसे यह शक्ति न दें। सबसे महान् शक्ति आपके भीतर ही है।

अपने भीतर की शक्ति का इस्तेमाल करें और यह अनुभव करें कि आपके जीवन के लिए इस संसार में इससे ज़्यादा शक्तिशाली कुछ भी नहीं है।

## दिन 114

---

**ज**ब आप धन को आकर्षित करने की कोशिश कर रहे हों, तो बिल/भुगतानों से अपना ध्यान कैसे हटाएँ? आप दिखावा करें, स्वयं को यक्तीन दिलाएँ और उन बिलों के साथ कुछ युक्ति लगाएँ, ताकि आपका मन अच्छे विचार सोचने के जाल में उलझ जाए। अपनी मनचाही चीज़ को पाने का दिखावा रखने की इन युक्तियों से अपने दिमाग़ को इतना व्यस्त कर लें कि इसमें अभाव के विचार सोचने की जगह ही न बचे।

आप एक सृजनात्मक जीव हैं, इसलिए अपने बिलों और बैंक स्टेटमेंट को समुद्धि के नाटकीय खेल में बदलने के ऐसे सृजनात्मक तरीकों की तलाश करें, जो आपके लिए सर्वश्रेष्ठ हों।

## दिन 115

---

हर दिन, या कम से कम सप्ताह में एक-दो बार, कुछ मिनट का समय निकालें और खुद को आनंदित देखने पर ध्यान केंद्रित करें। खुद को आनंद में महसूस करें। कल्पना करें कि आपके जीवन में आगे आनंद ही आनंद है और आप उसमें डूबे हुए हैं। ऐसा करने पर सृष्टि तमाम लोगों, परिस्थितियों और घटनाओं को प्रेरित करेगी, ताकि वह आनंद आपको मिल जाए। अगर आपके मन में पैसे की चिंताएँ, सेहत की चिंता, मित्रों या परिवार वालों के साथ संबंधों की समस्या हैं, तो आप आनंदमय नहीं रह सकते। इसलिए बार-बार सृष्टि के बैंक में आनंद जमा करते रहें। इससे ज्यादा लाभकारी कोई और निवेश नहीं हो सकता।

आप आनंद में रहें।

## दिन 116

---

हमारी सर्वोच्च शक्ति प्रेम है और यह एक ऐसी चीज़ है, जो हममें से हर एक के पास असीमित मात्रा में है। आप एक दिन में दूसरों को कितना अधिक प्रेम दे सकते हैं? हर दिन हमारे पास यह अवसर होता है कि हम अपने पास मौजूद इस महान्, असीमित शक्ति के साथ बाहर निकलें और इसे हर व्यक्ति व परिस्थिति को बहुतायत में दें।

प्रेम का मतलब है क़द्र करना, प्रशंसा करना, कृतज्ञता महसूस करना और दूसरों से अच्छे शब्द बोलना।

हमारे पास देने के लिए बहुत सा प्रेम है और हम इसे जितना देते हैं, यह हमें उतना ही ज़्यादा मिलता है।

## दिन 117

---

**स**मूची सृष्टि अच्छी है; मगर मुश्किल स्थितियों में हम अक्सर कुछ बड़ा नहीं सोच पाते हैं। यहाँ तक कि हम जिन स्थितियों को “बुरा” कहते हैं, उनके पीछे भी कुछ अच्छाई होती है। स्थिति को नए नज़रिये से देखें और अच्छाई की तलाश करें। अगर आप इसकी तलाश करते हैं, तो विश्वास मानिए यह आपको निश्चित रूप से मिल जाएगी। फिर आपका मुश्किल परिस्थितियों का भ्रम टूट जाएगा और आप अच्छाई को आगे आने का अवसर देंगे।

## दिन 118

---

**अ**गर आप जीवन में किसी के साथ खुद को नकारात्मक स्थिति में पाएँ, तो हर दिन कुछ मिनट दिल में उस व्यक्ति के लिए प्रेम महसूस करें और उसे ब्रह्माण्ड में प्रेषित कर दें। बस यह एक काम करने से उस व्यक्ति के प्रति आपके द्वेष, क्रोध या नकारात्मकता को दूर करने में मदद मिलती है।

याद रखें कि द्वेष, क्रोध या किसी भी नकारात्मक भाव को महसूस करने से यह पलटकर आपकी ओर आकर्षित होता है। प्रेम महसूस करने से प्रेम ही पलटकर आपकी ओर आकर्षित होता है। आप दूसरे के लिए जो भी महसूस कर रहे हैं, उसे आप दरअसल अपनी ओर ला रहे हैं।

## दिन 119

---

“महत्वपूर्ण यह नहीं है कि आपके साथ क्या होता है; महत्वपूर्ण तो यह है कि आप उस पर कैसी प्रतिक्रिया करते हैं।”

**एपिकिटस** (55 ई. से 135 ई. के मध्य)

## दिन 120

---

**अपके** ज़रिये सृजन करना सृष्टि के लिए मुश्किल नहीं है। आप जो चाहते हैं, उस चीज़ का सृजन कर सकते हैं और इसके लिए आपको बस आकर्षण के नियम के सामंजस्य में जीना है। आप अपनी मनचाही चीज़ का साँचा तय करते हैं और फिर सृष्टि उस साँचे को भर देती है।

आपका काम आसान है - अपना मनपसंद साँचा बना लें!

## दिन 121

---

लेटो ने कहा था, “स्वयं को जानो” और इससे अधिक महत्वपूर्ण शब्द कभी नहीं बोले गए। आपको खुद को जानना ही चाहिए; कि आप क्या कर रहे हैं, क्या कह रहे हैं, क्या महसूस कर रहे हैं, और क्या सोच रहे हैं, ताकि आप खुद को नियम के सामंजस्य में लासकें।

स्वयं को जानिए।

## दिन 122

---

**अ**गर आप अपने जीवन में परिस्थितियों या चीज़ों के बारे में शिकायत कर रहे हैं, तो आप शिकायत करने के आवृत्ति स्तर पर हैं, और आप अपनी मनचाही चीज़ों को आकर्षित करने की स्थिति में नहीं हैं।

अपने विचारों और शब्दों के ज़रिये स्वयं को अच्छाई की आवृत्ति पर ले आएँ। सबसे पहले तो आपको अच्छा महसूस करना होगा और फिर आप अधिक अच्छाई को ग्रहण करने की स्थिति में पहुँच जाएँगे।

## दिन 123

---

**अ**गर आप कोई विशेष मकान या विशेष संबंध या विशेष नौकरी चाहते थे, लेकिन वे आपको नहीं मिले, तो समझ लीजिए कि सृष्टि आपको बता रही है कि वह आपके लिए अच्छा नहीं था और आपके सपनों से मेल नहीं खाता था। वह आपको यह भी बता रही है कि उसके पास इससे भी बेहतर चीज़ है, जो आपके लिए ज़्यादा मुनासिब है।

कोई बेहतर चीज़ आ रही है... आप रोमांचित हो सकते हैं!

## दिन 124

---

**अ**पके पास नकारात्मक को सकारात्मक में बदलने की शक्ति है, लेकिन आप परिवर्तन का प्रतिरोध करके ऐसा नहीं कर सकते। परिवर्तन का प्रतिरोध करना नकारात्मक मार्ग को चुनना है - यदि आप नकारात्मक पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, तो उससे और ज़्यादा नकारात्मकता, दर्द तथा दुख आना तय है।

नकारात्मक को सकारात्मक में बदलने के लिए पहले तो उस स्थिति में अच्छी और सकारात्मक चीज़ों की तलाश करें। हर स्थिति में अच्छाई होती है और जब आप अच्छी चीज़ों की तलाश करते हैं, तो आकर्षण का नियम उन्हें आपके सामने प्रस्तुत कर देगा। इसके अलावा, यह आदेश दें कि यह परिवर्तन असीमित अच्छाई और सकारात्मकता लाएगा। अपने दिल की गहराई से यह बात जान लें और विश्वास करें कि जब आप आदेश देते हैं, तो इसे ज़रूर पूरा किया जाएगा। यहीं सकारात्मक मार्ग को चुनना है।

## दिन 125

---

**अ**र्थात् कर्षण का नियम सबसे अद्भुत नियम है। यह नियम अटल है और हर व्यक्ति को वही देता है, जिस पर वह सबसे अधिक ध्यान केंद्रित कर रहा है। आप भी इस नियम के अपवाद नहीं हैं और जिस तरह चाहें, इसका इस्तेमाल कर सकते हैं।

नियम कभी असफल नहीं हो सकता। हमें तो बस सही तरीके से इसका इस्तेमाल करना सीखना होगा।

## दिन 126

---

“हम वही हैं जो हम सोचते हैं। हम जो हैं, वह हमारे विचारों से ही उत्पन्न होता है। अपने विचारों से ही हम अपना संसार बनाते हैं।”

**बुद्ध** (लगभग 563 से 483 ई.पू.)

## दिन 127

---

कृतज्ञता तब तक सिफ्ऱ शब्द, शब्द और केवल शब्द हैं, जब तक कि आप इसे गहराई तथा गहनता से महसूस न करें। कृतज्ञता की शक्ति का सचमुच दोहन करने के लिए आपको अभ्यास, अभ्यास और अभ्यास करना होगा, जब तक कि आप भावना की अधिकतम गहराई तथा सर्वोच्च आवृत्ति के स्तर तक न पहुँच जाएँ।

यही कृतज्ञता है और परम शक्तिशाली है।

## दिन 128

---

**जो** चीज़ें आपके जीवन में सबसे जल्दी आ जाती हैं, वे वही होती हैं जिनमें आप सबसे ज़्यादा **विश्वास** करते हैं। आप अपने पास सिर्फ़ वही ला सकते हैं, जिसमें आप **विश्वास** करते हैं। इसलिए आपमें मनचाही चीज़ पाने का **विश्वास** होना चाहिए।

## दिन 129

---

**ज**ब आप किसी चीज़ के घटित होने से डरते हैं, तो नियम के अनुसार आप इसे आकर्षित करते हैं, हालाँकि तसल्ली की बात यह है कि इसे आप तक लाने के लिए सच्ची एकाग्रता और निरंतर भय की ज़रूरत होती है। किसी चीज़ को न पाने की इच्छा में आप भावनाओं का जितनी मात्रा में निवेश करते हैं, वह उतनी ही शक्तिशाली होती है। साथ ही मनचाही चीज़ मिलना तब भी असंभव हो जाता है, जब आप अनचाहे परिणाम से बहुत डर महसूस करते हों।

आप जिसे नहीं होने देना चाहते हैं, उसमें से डर का व्यक्तिगत निवेश हटा लें। फिर उस शक्तिशाली ऊर्जा का इस्तेमाल करें और इसे अपनी मनचाही चीज़ की ओर मोड़ लें।

चाहे आप कुछ भी सोच रहे हों या महसूस कर रहे हों, किसी नई चीज़ का सृजन करने की आपकी शक्ति **अभी**, इसी समय है।

## दिन 130

---

**न**कारात्मक विचार क्या हैं? अच्छे विचारों का अभाव।

नकारात्मक भावनाएँ क्या हैं? अच्छे विचारों का अभाव!

## दिन 131

---

**कि**सी चीज़ के प्रति प्रशंसा या कृतज्ञता महसूस करना एक बात है और किसी चीज़ के प्रति आसक्ति महसूस करना दूसरी बात है। दोनों में अंतर होता है। प्रशंसा और कृतज्ञता विशुद्ध प्रेम की अवस्थाएँ हैं, जबकि आसक्ति में डर शामिल होता है - आप जिसके प्रति आसक्त हैं, उसके न मिल पाने का या उसे गँवाने का डर। आप अपने जीवन में जो चीज़ चाहते हैं, उसे प्रशंसा और कृतज्ञता आपकी ओर आकर्षित करती हैं, जबकि आसक्ति दूर कर देती है। अगर आप डर महसूस करते हैं कि आपको आपकी मनचाही चीज़ नहीं मिलेगी या आप अपने पास मौजूद चीज़ को गँवा देंगे, तो आप आसक्ति से ग्रस्त हैं।

आसक्ति को अलग करने के लिए खुद को प्रशंसा और कृतज्ञता की अवस्था में तब तक पहुँचाते रहें, जब तक कि यह महसूस न हो कि डर जा चुका है।

## दिन 132

---

**अप** जो चीज़ चाहते हैं, उसे आकर्षित करने के मामले में आप सही रास्ते पर हैं या नहीं, यह जाँच करने के लिए यहाँ एक तरीका बताया जा रहा है। क्या आप तनावपूर्ण और चिंतित महसूस करते हैं? क्या आप दबाव या तनाव महसूस कर रहे हैं कि मनचाही चीज़ कब मिलेगी? अपने शरीर को भी महसूस करें। क्या यह नर्म और शांत महसूस हो रहा है? या फिर यह तनावग्रस्त है? अगर आप तनाव की भावनाएँ महसूस करते हैं, तो आप ग़लत राह पर हैं और ये भावनाएँ आपकी इच्छित चीज़ को आपसे दूर रख रही हैं। पूरी तरह शिथिल हो जाएँ, पूरी तरह शांत हो जाएँ और इस बारे में कोई चिंता न करें कि आपकी मनचाही चीज़ कब, कहाँ या कैसे प्राप्त होगी।

आप जब भी अपनी इच्छित चीज़ के बारे में सोचें, तो हर बार अधिक से अधिक विश्रांत और तनावरहित हो जाएँ और अपने शरीर को तब तक शिथिल करते रहें, जब तक यह महसूस न हो कि तनाव पूरी तरह जा चुका है।

## दिन 133

---

“जो तमाम खूबसूरती आपके चारों ओर अब भी बाकी है, उसके बारे में सोचें और खुश हों।”

एन फ्रैंक (1929-1945 )

डायरी ऑफ अ यंग गर्ल

## दिन 134

---

**ज**ब हमारे जीवन में परिस्थितियाँ बदलती हैं, तो हम अक्सर परिवर्तन का प्रतिरोध करते हैं। लेकिन अगर आप सृष्टि, जीवन और सृजन के तंत्र को समझते हैं, तो जान जाएँगे कि जीवन परिवर्तन का ही दूसरा नाम है और कोई भी चीज़ कभी स्थिर नहीं रहती है। हर चीज़ ऊर्जा है, और ऊर्जा सतत गति व परिवर्तन की प्रक्रिया में रहती है। अगर ऊर्जा स्थिर रहे, तो आपका अस्तित्व समाप्त हो जाएगा और कोई जीवन शेष नहीं रहेगा।

परिवर्तन हमेशा आपके और सभी के भले के लिए होता रहता है। यह जीवन का विकास है।

## दिन 135

---

**अ**गर आप उन सभी चीजों की सूची बनाने का समय निकालें, जिनके लिए आप कृतज्ञ हैं, तो आप हर दिन बहुत अच्छा महसूस करेंगे। आप एक ऊँचे स्तर पर पहुँच जाएँगे। आप हर दिन जीवन से प्रेम करेंगे, जहाँ भी जाएँगे वहाँ खुशी बिखेरेंगे और मिलने वाले हर व्यक्ति को सकारात्मक तरीके से प्रभावित करेंगे।

जब आप इस तरह की जिंदगी जीते हैं, तो आपकी हर मनचाही चीज़ आपके माँगने से पहले ही आपके पास आ जाएगी।

## दिन 136

---

**न**कारात्मक विचारों और नकारात्मक भावनाओं को जीवित रहने के लिए आपके ध्यान और एकाग्रता की ज़रूरत होती है। अगर आप उन पर ध्यान ही न दें, तो वे जीवित नहीं रह सकते। यदि आप उन्हें नज़रअंदाज़ कर देते हैं और उन पर ध्यान देने से इंकार कर देते हैं, तो आप उनकी शक्ति कम कर रहे हैं और वे समाप्त हो जाएँगे।

## दिन 137

---

जूँयादातर लोग अपने जीवन में छोटी चीज़ों को जल्दी प्राप्त कर लेते हैं। ऐसा इसलिए, क्योंकि छोटी चीज़ों को लेकर उनके मन में कोई प्रतिरोध नहीं होता और वे ऐसे विचार नहीं सोचते, जो उनका विरोध करें। लेकिन जब ज्यादा बड़ी चीज़ों की बात आती है, तो लोग अवसर शंका या चिंता के विचार प्रकट करते हैं, जो उन बड़ी चीज़ों का विरोध करते हैं। किसी चीज़ को प्रकट होने में कितना समय लगेगा, यह हमारे विरोधी विचार ही तय करते हैं।

सृष्टि के लिए कोई चीज़ बड़ी या छोटी नहीं होती।

## दिन 138

---

**सू**जन की प्रक्रिया सिफ़र आपको स्वयं की मनचाही चीज़ के सामंजस्य में लाने के लिए है। यह कभी भी आकर्षण के नियम के बारे में नहीं है। एक दिन आप अच्छे विचार सोचते हैं, लेकिन अगले दिन उतने अच्छे विचार नहीं सोचते हैं और फिर उसके अगले दिन अच्छे विचार सोचते हैं, और यह प्रक्रिया इसी तरह चलती है।

बिना किसी शंका के विश्वास करने की स्थायी अवस्था एक ऐसी चीज़ है जो आपको सीखनी होती है, तथा अभ्यास के साथ आप इसमें बेहतर बनते चले जाते हैं।

## दिन 139

---

“ज्यादातर लोग जो चाहते हैं, उसे पाने में असफल क्यों रहते हैं? इसका [एक] अहम कारण यह है कि वे यह पक्के तौर पर जानते ही नहीं हैं कि वे क्या चाहते हैं या फिर वे लगभग हर दिन अपनी इच्छाएँ बदलते रहते हैं।

“पहले यह जान लें कि आप क्या चाहते हैं और फिर उसे पाने की चाहत बरकरार रखें। अगर आप अपनी इच्छा को विश्वास के साथ मिला लेते हैं, तो आप उसे पा लेंगे। जब इच्छा की शक्ति के साथ विश्वास की शक्ति मिल जाती है, तो यह एक अजेय तालमेल होता है।”

**क्रिश्मियन डी. लार्सन**(1874-1954 )

यॉर फ्रोर्सेस एंड हाऊ टु यूज़ देम

## दिन 140

---

**लोग** दो तरह के होते हैं:

एक वे जो कहते हैं, “जब मैं इसे देख लूँगा, तभी इस पर विश्वास करूँगा।”

और दूसरे वे जो कहते हैं, “मैं जानता हूँ कि मुझे पहले विश्वास करना होगा, तभी मैं इसे देख पाऊँगा।”

## दिन 141

---

इस बात से अवगत रहें कि प्रेरित कर्म और गतिविधि के बीच बड़ा अंतर होता है।

गतिविधि मस्तिष्क से उत्पन्न होती है और इसकी जड़ें अविश्वास व आस्था के अभाव में स्थित होती हैं - जबकि दूसरी ओर, आप अपनी इच्छा को घटित "कराने" के लिए कर्म करते हैं। प्रेरित कर्म का अर्थ है नियम को अपने ज़रिये काम करने और आपको प्रेरित करने की अनुमति देना।

कोई कार्य करना मुश्किल महसूस हो सकता है। परंतु प्रेरणा से भरपूर कार्य अद्भुत महसूस होता है।

## दिन 142

---

**अपके** जहाज़ का कप्तान कौन है? आप जानते हैं कि अगर कोई जहाज़ को दिशा नहीं देगा, तो वह समुद्र में हिचकोले खाएगा और चट्टानों से टकराकर तबाह हो जाएगा। अपने शरीर को एक जहाज़ मानें और मस्तिष्क को इंजन, और स्वयं को अपने जहाज़ का कप्तान मान लें!

अपने जहाज़ का प्रभार लें, ताकि आप उसे अपनी मनचाही मंज़िल तक पहुँचाने के लिए अपने इंजन की शक्ति का इस्तेमाल कर सकें।

## दिन 143

---

**नि**श्चित रूप से आप अपने विचारों के ज़रिये दूसरों की मदद कर सकते हैं और वे भी आपकी मदद कर सकते हैं। आप किसी दूसरे को जो भी अच्छा विचार भेजते हैं, वह एक सजीव शक्ति होता है। हालाँकि, जिस व्यक्ति को आप विचार भेज रहे हैं, उसे वही चीज़ माँगनी होती है, जो आप भेज रहे हैं। अगर वह व्यक्ति इसे नहीं चाहता है, तो वह आपके विचारों की आवृत्ति के सामंजस्य में नहीं होगा और आपका विचार उस तक नहीं पहुँच पाएगा।

आप किसी दूसरे की इच्छा के खिलाफ उसके जीवन में कोई सृजन नहीं कर सकते, लेकिन अगर उसकी इच्छा आपसे मेल खाती है, तो आपके विचार उसकी मदद करने वाली सच्ची शक्ति बन जाते हैं।

## दिन 144

---

**ज**ब आप कृतज्ञता की सुंदर अवस्था में रहते हैं, तो आप ऐसे व्यक्ति बन जाते हैं जो केवल देना चाहता है। आप इतने कृतज्ञ बन जाते हैं कि यह आपके जीवन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य बन जाता है। आपको लगता है कि दिन भर में दूसरों को देने के लिए पर्याप्त अवसर ही नहीं मिल पा रहे हैं। आप खुशी देते हैं, आप प्रेम देते हैं, आप पैसे देते हैं, आप प्रशंसा देते हैं, आप बधाई देते हैं और आप दयालुता देते हैं। आप अपनी नौकरी में, अपने संबंधों में और अजनबियों को भी अपना सर्वश्रेष्ठ देते हैं।

आपको पता चल जाएगा कि आप सचमुच कृतज्ञ कब बन गए हैं, क्योंकि तब आप दानी बन जाएँगे। जो सचमुच कृतज्ञ है, वह और कुछ ही नहीं सकता।

## दिन 145

---

**ज**ब लोग पहले-पहल द सीक्रेट (रहस्य) का इस्तेमाल शुरू करते हैं, तो वे नकारात्मक विचार सोचने के बारे में थोड़े भयभीत हो सकते हैं। इस डर के फलस्वरूप यह हो सकता है कि जब वे कोई अच्छा विचार सोचें, तो उनके दिमाग़ में तुरंत ही उसका विपरीत विचार आ जाए। ऐसा होना स्वाभाविक है। लेकिन यह दौर जल्दी, बहुत जल्दी गुज़र जाता है। और इससे गुज़रने का सबसे आसान रास्ता यह है कि आप नकारात्मक विचारों पर ज़रा भी ध्यान न दें। बस उन्हें नज़रअंदाज़ कर दें और एक अच्छा विचार सोच लें। जब कोई नकारात्मक विचार आए, तो उसे अपने से इस तरह दूर कर दें, मानो आपको उसकी रक्षी भर भी परवाह न हो और उसकी जगह एक अच्छा विचार सोचें।

## दिन 146

---

**अ**गर आप धन को आकर्षित करना चाहते हैं, तो उन चीज़ों के अपने पास होने की कल्पना करने से ज़्यादा शक्ति मिलती है, जिनकी खातिर आप पैसे चाहते हैं। अगर आपके जीवन में धन का अभाव है, तो समझ लीजिए कि आपकी धन संबंधी भावनाएँ और विश्वास संभवतः बहुत अच्छे नहीं हैं। इससे बहुत बेहतर तो तब महसूस होगा, जब आप उस पैसे से खरीदी जा सकने वाली चीज़ों के बारे में सोचेंगे। आपको अपनी भावनाओं को समझना सीखना चाहिए। फिर आपको उन विचारों को चुनना सीखना चाहिए, जो आपको बेहतर महसूस कराते हैं।

जो विचार बेहतर महसूस होते हैं, वही आपकी शक्ति है।

## दिन 147

---

“यदि आप किसी बाहरी चीज़ के कारण कष्ट में हैं, तो दर्द उस चीज़ के कारण नहीं है, बल्कि उसके बारे में आपके विचारों के कारण है; और आपके पास इसे किसी भी पल खारिज करने की शक्ति है।”

**मार्क्स ऑरेलिअस** (121-180 )

## दिन 148

---

**वि** शुद्ध कृतज्ञता भी दान देने की एक अवस्था ही है। जब आप हार्दिक कृतज्ञता की अवस्था में होते हैं, तो आप अपने चारों ओर एक शक्तिशाली विद्युत-चुंबकीय क्षेत्र प्रसारित करते हैं। आपके प्रसारण इतने शुद्ध और शक्तिशाली होते हैं कि वे आपके संपर्क में आने वाले सभी लोगों को छू लेते हैं। आप जो प्रसारित कर रहे हैं, उसे प्राप्त करने वाले लोगों पर कितना असर होता है, इसका पता लगाना असंभव है - एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुँचने वाला प्रभाव कभी खत्म नहीं होता।

## दिन 149

---

दे ने की क्रिया आपके लिए प्राप्त करने के द्वार खोल देती है। आपके पास हर दिन देने के बहुत से अवसर होते हैं।

अच्छे शब्द बोलें। मुस्कान दें। प्रेम और प्रशंसा दें। गाड़ी चलाते वक्त दूसरे वाहन चालकों को शिष्टाचार दें। आप कार पार्किंग वाले को मुस्कान दे सकते हैं। अखबार बेचने वाले या कॉफ़ि बनाने वाले को गर्मजोशी भरा अभिवादन दे सकते हैं। आप लिफ्ट में किसी अजनबी को अपने से आगे निकलने दे सकते हैं और यह भी पूछ सकते हैं कि वे किस मंज़िल पर जा रहे हैं और फिर उनके लिए बटन दबा सकते हैं। अगर किसी के हाथ से कुछ गिर जाए, तो मदद का हाथ बढ़ा सकते हैं और उसे उठाकर दे सकते हैं। आप जिनसे प्रेम करते हैं, उन्हें स्नेहिल आलिंगन दे सकते हैं। और आप हर व्यक्ति को प्रशंसा तथा प्रोत्साहन दे सकते हैं।

आपके पास देने के बहुत सारे अवसर होते हैं, इसलिए आपके पास पाने के भी बहुत सारे अवसर होते हैं।

## दिन 150

---

**ज**ब आप कृतज्ञता के सर्वोच्च स्तर पर पहुँच जाते हैं, तो आप जो भी विचार सोचते हैं, जो भी शब्द बोलते हैं और जो भी कार्य करते हैं, उनमें से प्रत्येक विशुद्ध अच्छाई से आता है।

## दिन 151

---

**अ**प एक विद्युतचुंबकीय प्राणी हैं, जो आवृत्ति का उत्सर्जन कर रहे हैं। आप जिस आवृत्ति को बाहर भेज रहे हैं, उसी आवृत्ति पर रहने वाली चीज़ों का आप अनुभव कर सकते हैं। आपको दिन में मिलने वाला हर व्यक्ति, घटने वाली हर घटना और परिस्थिति बता रही है कि आप किस आवृत्ति पर हैं।

अगर आपका दिन अच्छा नहीं जा रहा है, तो ठहर जाएँ और प्रयास द्वारा अपनी आवृत्ति को बदल लें। अगर आपका दिन अच्छी तरह गुज़र रहा है, तो जो कर रहे हैं वही करते रहें।

## दिन 152

---

**क**ई बार एक समय में एक ही चीज़ पर ध्यान केंद्रित करना बेहतर होता है, ताकि आप उस एक चीज़ के लिए अपनी सारी ऊर्जा का इस्तेमाल कर लें। लेकिन इसके बावजूद आप अपनी कई मनचाही चीज़ों की सूची बना सकते हैं। उनमें से प्रत्येक पर बारी-बारी से पूरे दिन ध्यान केंद्रित करें और यह महसूस करें कि आपने उन्हें पा लिया है। जिन चीज़ों के बारे में आप सबसे कम चिंता करते हैं, संभवतः सबसे पहले वही आएँगी, क्योंकि आपकी चिंता का अभाव सृष्टि को उन्हें आप तक आसानी से पहुँचाने देता है।

## दिन 153

---

**प्र**तिरोध आपकी मनचाही चीज़ को आप तक पहुँचने में बाधा डालता है। आप जो चाहते हैं, उसके बारे में तनावपूर्ण या चिंतित महसूस कर आप खुद प्रतिरोध बनाते हैं। तनाव प्रतिरोध उत्पन्न कर देता है और उस चीज़ के पहुँचने में बाधा डालता है।

आप जो चाहते हैं, उसके बारे में सोचते समय अगर आप तनाव महसूस करते हैं, तो यह विश्रांत, पूर्ण रूप से विश्रांत होने का समय है। अपने शरीर को पानी की तरह तरल और निष्क्रिय बना लें। इस तरह आप अपने शरीर के ज़रिये अपने मस्तिष्क को शांत बना लेते हैं। जब भी आप खुद को तनाव में महसूस करें, तो हर बार अपने शरीर को शिथिल कर लें, जब तक कि आप दोबारा निष्क्रिय महसूस न करने लगें।

## दिन 154

---

“मनुष्य और कुछ नहीं, बल्कि अपने विचारों का परिणाम है। वह जो भी सोचता है, वही बन जाता है।”

**महात्मा गांधी**(1869-1948 )

## दिन 155

---

**अपने** अपने बारे में जो कहानी गढ़ी है, उससे आप खुद को सीमित कर सकते हैं। यहाँ कुछ आसान उदाहरण बताए जा रहे हैं कि कैसे हम अपनी बनाई कहानी से ही सीमित हो जाते हैं:

मैं गणित में बिलकुल अच्छी नहीं हूँ। मैं कभी नहीं नाच पाऊँगी। मैं बहुत अच्छा लेखक नहीं हूँ। मैं बहुत ज़िद्दी हूँ। मुझे ठीक से नींद नहीं आती है। मैं बहुत मूँड़ी हूँ। मेरा वज़न कभी कम नहीं होगा। मेरी अँग्रेज़ी अच्छी नहीं है। मुझे कहीं जाने में हमेशा देर हो जाती है। मैं बहुत अच्छी ड्राइवर नहीं हूँ। मैं अपने चश्मे के बिना नहीं देख सकता। मेरे लिए मित्र बनाना मुश्किल है। पैसा मेरे हाथों में रुकता ही नहीं है।

आप जो कह रहे हैं, उसके बारे में आप जिस समय जागरूक हो जाते हैं, उसी पल आप इन चीज़ों को मिटा कर अपनी कहानी दोबारा लिख सकते हैं!

## दिन 156

---

यहाँ पर बताया जा रहा है कि आप सचमुच कौन हैं:

मैं संपूर्ण हूँ।

मैं आदर्श हूँ।

मैं शक्तिशाली हूँ।

मैं मज़बूत हूँ।

मैं प्रेमपूर्ण हूँ।

मैं सद्गावपूर्ण हूँ।

मैं खुश हूँ।

क्या कुछ करने की ज़रूरत है?

## दिन 157

---

**अ**पने जीवन में मौजूद सारी शानदार चीज़ों के बारे में जानकारी बढ़ाते जाएँ। उन सभी लोगों के प्रति कृतज्ञता महसूस करें, जिन्होंने अपने कार्य और आविष्कारों के ज़रिये इतना कुछ दिया है, जिससे आप ज़्यादा आसान ज़िंदगी जी सकें। क्या आपने आज सुबह स्नान किया था? क्या आपने बिजली का इस्तेमाल किया था? आप ऑफिस तक कैसे पहुँचे? कार से, ट्रेन, बस या फिर आप जूते पहनकर पैदल गए थे? क्या आपने कॉफ़ी पी थी या रेडियो सुना था या सेल फ़ोन से कॉल किया था या लिफ्ट में सवार हुए थे? आप अपनी ज़िंदगी में हर दिन बहुत सारे आविष्कारों का इस्तेमाल करते हैं। क्या आप उन्हें नज़रअंदाज़ कर रहे हैं या उनके प्रति कृतज्ञ हैं?

हम सौभाग्यशाली हैं - वास्तव में।

## दिन 158

---

**मा**नसिक चित्रण की कला के अभ्यास के लिए अपने आज के दिन के बीते हुए समय के बारे में सोचें। दिन के किसी अद्भुत दृश्य या पल को चुन लें और उसे अपने मन में दोहराएँ। मन में इसकी फ़िल्म चलाते समय उस जगह, लोगों, पृष्ठभूमि की आवाज़ें, रंग, बोले गए शब्दों और उस दृश्य के हर विवरण का चित्र देखें।

यह मानसिक चित्रण की योग्यताओं को बेहतर बनाने का बहुत शक्तिशाली तरीक़ा है। इसके अलावा, इस तरह आप अपने जीवन में बेहतर दृश्यों को भी आकर्षित करते हैं।

## दिन 159

---

सृष्टि की सर्वोच्च शक्ति सभी चीज़ों की आपूर्ति करती है और आकर्षण का नियम इन चीज़ों को बाँटने का काम करता है। आप पृथ्वी पर सृजन के एक केंद्रीय बिंदु हैं। आपके ही ज़रिये सृष्टि हमारे भौतिक संसार में सृजन कर सकती है।

कितनी बढ़िया व्यवस्था है!

## दिन 160

---

अज आपके जीवन का सर्वश्रेष्ठ दिन है!

## दिन 161

---

“इंसान जो जानता है, वही देखता है।”

योहान वूल्फ़गैंग वॉन गोएटे  
(1749-1832 )

## दिन 162

---

इस बात की लगातार निगरानी रखें कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं। जीवन को तनावपूर्ण ढंग से जकड़ कर रखने के बजाय इसे किसी नदी की तरह बहता हुआ महसूस करना चाहिए। आप तनावरहित और प्रवाहपूर्ण हैं या फिर अपने भीतर तनाव को थामे हुए हैं, इसे अपने अहसास से समझ सकते हैं।

तनाव को मुक्त करने का एक तरीका यह निर्णय लेना है कि आप हर व्यक्ति को अपना सर्वश्रेष्ठ देंगे। जब आप अपना सर्वश्रेष्ठ देते हैं, तो आप खुद को प्रस्तुत कर रहे हैं, ताकि सृष्टि का प्रवाह आपके ज़रिये बह सके। और यह बहुत अच्छा महसूस होता है!

## दिन 163

---

**अ**पने हृदय और अपने मस्तिष्क के बीच समान रूप से संतुलन बनाकर जीवन जीना ही आनंदमय जीवन है। जब हृदय और मस्तिष्क संतुलित होते हैं, तो आपका शरीर पूर्ण सामंजस्य में होता है। और आपका जीवन भी।

## दिन 164

---

दयालुतापूर्ण विचार सोचें। दयालुता भरे शब्द बोलें। दयालुता भरे काम करें। अपने विचारों, शब्दों तथा कार्यों में दयालुता समाहित कर लें और इसे अपने जीवन की स्थायी अवस्था बना लें। दयालुता के कई स्तर होते हैं और यह महसूस करना रोचक है कि जिसे लोग “बुरा” कहते हैं, वह और कुछ नहीं बस दयालुता का अभाव है। बुराई का कोई स्रोत नहीं है - सिर्फ़ दयालुता का अभाव है।

केवल एक ही शक्ति है - और यह संपूर्ण रूप से सकारात्मक व अच्छी है।

## दिन 165

---

**अ**पनी इच्छाशक्ति का प्रयोग करें और ऐसे काम करें, जिनसे आपकी ज़िंदगी बदल जाए। हर दिन द सीक्रेट (रहस्य) के सिद्धांतों का अभ्यास करें। इच्छाशक्ति का प्रयोग करें और इन सिद्धांतों के अनुरूप जीने का संकल्प लें। प्रकृति के सभी नियमों का इस्तेमाल अपने लाभ के लिए करें। बिना अपवाद हर दिन अभ्यास करने का अनुशासन रखें।

केवल आप ही अपनी इच्छाशक्ति को मज़बूत बना सकते हैं। आप जो परिवर्तन देखेंगे, वे ठीक उसी अनुपात में होंगे, जिस अनुपात में आप उन्हें करने के लिए समर्पित होंगे।

## दिन 166

---

**अ**ब हम विज्ञान के ज़रिये यह निश्चित रूप से कह सकते हैं कि न तो कभी ऊर्जा का सृजन किया जा सकता है, न ही उसे नष्ट किया जा सकता है - इसका केवल रूप बदल सकता है। हमारा सृजन ऊर्जा से हुआ है, इसलिए हमें भी बनाया या नष्ट नहीं किया जा सकता - हम बस रूप बदलते हैं।

कई लोगों में मृत्यु का बड़ा डर होता है, लेकिन हमारा जीवन अनंत है, जिसका बस बाहरी रूप बदलता है।

## दिन 167

---

इतिहास में एक भी ऐसी मिसाल नहीं है, जहाँ नफ़रत से लोगों को खुशी मिली हो। जिन लोगों ने भी मन और शरीर में नफ़रत को पाला है, इसने उन्हें नष्ट कर दिया है। अगर मानव जाति नफ़रत, डर व द्वेष से मुक्त हो जाए, तो कभी कोई तानाशाह नहीं होगा और पूरी पृथ्वी पर शांति होगी।

पृथ्वी पर शांति हममें से प्रत्येक की आंतरिक शांति के ज़रिये ही उत्पन्न हो सकती है।

## दिन 168

---

“यदि आपके विचार सकारात्मक हैं तो आपका मन हमेशा आपके साथ सामंजस्य बनाए रखेगा, वहीं यदि आपका झुकाव नकारात्मकता की ओर है तो आपका अपने मन के साथ तालमेल गड़बड़ा जाएगा और इस तरह आप अपनी शक्ति का काफ़ी बड़ा हिस्सा गँवा देते हैं... यदि मन में सकारात्मक विचार हों तो मानसिक तंत्र के सभी कार्य सामंजस्य में होते हैं और स्पष्ट उद्देश्य की ओर पूरी तरह निर्देशित होते हैं, यदि मन में नकारात्मक विचार हों तो यही कार्य बिखरे हुए, बेचैन, घबराए हुए, विचलित, यहाँ-वहाँ भटकते हुए होते हैं; कई बार दिशा में होते हैं, लेकिन ज़्यादातर समय ऐसा नहीं होता। इसलिए यह स्पष्ट है कि सकारात्मक विचार रखने वाले इंसान को हमेशा सफल होना चाहिए और यह भी इतना ही स्पष्ट है कि नकारात्मक विचार रखने वाले को अवश्यंभावी रूप से विफल होना चाहिए।”

**क्रिश्णन डी. लार्सन (1874-1954 )**

यॉर फोर्सेस एंड हाऊट टू यूज देम

## दिन 169

---

**अ०** कर्षण के नियम के लिए कोई अतीत या भविष्य नहीं है, सिफ़्र वर्तमान है। इसलिए अपने अतीत के जीवन को बहुत मुश्किल, तंगहाल और दुखमय कहना छोड़ दें। अतीत के बारे में किसी भी तरह की नकारात्मक बातें बोलना बंद कर दें।

याद रखें कि नियम सिफ़्र वर्तमान में ही काम करता है, इसलिए जब आप अपने अतीत के जीवन के बारे में नकारात्मक बातें करते हैं, तो नियम आपके शब्दों को वर्तमान में प्राप्त करता है और वही चीजें वर्तमान में आपकी ओर भेज देता है।

## दिन 170

---

**सृ**जन की प्रक्रिया सभी चीजों के लिए समान होती है, चाहे आप किसी भी चीज़ को अपने जीवन में लाना चाहते हों या किसी नकारात्मक चीज़ को अपने जीवन से हटाना चाहते हों।

अगर आप किसी आदत या नकारात्मक चीज़ को छोड़ना या अपने जीवन से हटाना चाहते हैं, तो आपको उस पर ध्यान केंद्रित करना ही होगा, जिसे आप चाहते हैं। इसका मतलब है कि आप मानसिक चित्रण करें और उसी समय कल्पना करें कि आप नकारात्मकता से रहित अवस्था में हैं। जहाँ नकारात्मक स्थिति पूरी तरह अनुपस्थित हो, ऐसे ज़्यादा से ज़्यादा दृश्यों में अपनी कल्पना करें। कल्पना में खुद को खुश और स्वतंत्र देखें। अपने मन से नकारात्मक स्थिति वाली अपनी हर तस्वीर हटा दें। बस अपनी कल्पना उस अवस्था में करें जिसमें आप रहना चाहते हैं और महसूस करें कि आप इस समय वैसे ही हैं।

## दिन 171

---

हर दिन, चाहे आप दिन में किसी से भी मिलें - मित्र, परिजन, सहकर्मी, अजनबी - उन्हें खुशी दें। चाहे आप मुस्कान दें या प्रशंसा करें या अच्छे शब्द बोलें या अच्छे काम करें, लेकिन बस खुशी दें! यह सुनिश्चित करने की पूरी कोशिश करें कि जिस भी व्यक्ति से आप मिलते हैं, आपसे मिलने के बाद उसका दिन बेहतर हो जाए। ऐसा लग सकता है कि इसका आपसे और आपके जीवन से कोई संबंध नहीं है, लेकिन मेरा यक्कीन मानें, यह ब्रह्मांडीय नियम के ज़रिये अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है।

जब आप हर मिलने वाले व्यक्ति को खुशी देते हैं, तो आप खुशी को **अपनी** ओर लाते हैं। आप दूसरों को जितनी ज़्यादा खुशी देते हैं, उतनी ही ज़्यादा खुशी आप अपनी ओर ले आएँगे।

## दिन 172

---

**डॉ** इटिंग करने वाले कई लोग वज़न तो कम कर लेते हैं, लेकिन बाद में उनका वज़न फिर बढ़ जाता है, क्योंकि उनका ध्यान वज़न कम करने पर केंद्रित होता है। इसके बजाय, अपने आदर्श वज़न पर ध्यान केंद्रित करें।

आपका सबसे प्रबल केंद्रबिंदु जिस भी चीज़ पर होता है, उसे ही आप आकर्षित करेंगे। नियम इसी तरह काम करता है।

## दिन 173

---

रवयं की अद्भुत और बेहतरीन चीज़ों पर ध्यान केंद्रित करें। आपका मन जब भी आपकी आलोचना शुरू करे, तो उन विचारों को निकाल बाहर करें। उन्हें तत्काल रोक दें और अपने मन को अपनी अच्छाइयों पर ले जाएँ। अगर आप अपनी अच्छाइयों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो आप बहुत सारी अच्छाइयों को आकर्षित कर लेंगे।

खुद के प्रति दयालु रहें, क्योंकि आप इसके हक्कदार हैं!

## दिन 174

---

हमें से प्रत्येक खुद के जीवन का निर्माता है। हम किसी दूसरे के जीवन का निर्माण तब तक नहीं कर सकते, जब तक कि सामने वाला व्यक्ति भी वही चीज़ चेतन रूप से न माँग रहा हो। मिसाल के तौर पर, अगर कोई अच्छा बनना चाहता है, तो उस व्यक्ति के आसपास के दूसरे लोग उसकी विशुद्ध अच्छाई पर अपनी प्रबल एकाग्रता का इस्तेमाल कर सकते हैं। इससे उस व्यक्ति को इस सकारात्मक ऊर्जा से बहुत मदद मिलेगी, क्योंकि वह खुद इसे माँग रहा है।

## दिन 175

---

“हम गुरुत्वाकर्षण के नियम के बारे में बहुत ज्ञानपूर्वक बोलते हैं, लेकिन एक उतने ही अद्भुत नियम को नज़रअंदाज़ कर देते हैं, जो विचार जगत में आकर्षण का नियम है। हम उस नियम के अद्भुत प्रकटीकरण से परिचित हैं, जो पदार्थ बनाने वाले अणुओं को खींचता और एक साथ जोड़े रखता है - हम उस नियम की शक्ति को पहचानते हैं, जो वस्तुओं या व्यक्तियों को पृथ्वी की ओर आकर्षित करती है, जो धूमते हुए ग्रहों को उनकी जगह पर थामे रखती है, लैकिन हम उस शक्तिशाली नियम के प्रति अपनी आँखें मूँद लेते हैं, जो हमें उन चीज़ों की ओर खींचता है, जिनकी हम इच्छा करते हैं या जिनसे हम डरते हैं और जो हमारे जीवन को बनाता या बिगाड़ता है।”

“जब हम यह देखते हैं कि विचार एक शक्ति और ऊर्जा का प्रकटीकरण है, जिसमें आकर्षण की चुंबक जैसी शक्ति है, तो हम कई चीज़ों से जुड़े क्यों और कैसे समझने लगेंगे, जिनके बारे में हम अब तक अंधकार में रहे हैं।”

**विलियम वॉकर ऐटकिन्सन (1862-1932 )**

थॉट वाइब्रेशन

## दिन 176

---

**र**वयं को जानें! देखें कि आप जीवन में छोटी-छोटी चीज़ों को कैसे प्रकट करते हैं और इस बारे में सोचें कि उन चीज़ों की मौजूदगी में आपने अपने भीतर कैसा महसूस किया था। इस बारे में सोचें कि वे कितनी आसानी से आ गईं। आप पाएँगे कि आपने किसी छोटी चीज़ का विचार सिर्फ़ एक ही बार सोचा था और दोबारा कभी नहीं, और फिर वह प्रकट हो गई।

दरअसल हुआ यह था कि आपने अपनी मनचाही चीज़ के विरोध वाले कोई विचार नहीं सोचे या कोई शब्द नहीं बोले, इसलिए आकर्षण के नियम को अपना काम करने का मौका मिल गया।

## दिन 177

---

**कृतज्ञता** की शक्ति और जादू को समझने के लिए आपको खुद इसका अनुभव करना होता है। तो क्यों न हर दिन सौ चीज़ों के लिए कृतज्ञ होकर शुरुआत करें?

यदि आप हर दिन कृतज्ञता का अभ्यास करते हैं, तो ज़्यादा समय नहीं लगेगा और कृतज्ञता आपके जीवन की स्वाभाविक अवस्था बन जाएगी। जब ऐसा होने लगता है, तो आप जीवन के एक महान रहस्य को जान लेंगे।

## दिन 178

---

**व**ह सबसे शक्तिशाली चीज़ क्या है, जो आप अपनी मनचाही चीज़ का सृजन करने की प्रक्रिया में जोड़ सकते हैं? जिस तरह आप खुद की खातिर माँगते हैं, उसी तरह दूसरों की खातिर भी माँगें। इसका एक आसान तरीका सबके लिए माँगना है, जिसमें ज़ाहिर है आप भी शामिल हैं। सभी के लिए अच्छा जीवन माँगें, सभी के लिए शांति माँगें, सभी के लिए समृद्धि माँगें, सभी के लिए सेहत माँगें, सभी के लिए प्रेम माँगें और सभी के लिए खुशी माँगें।

जब आप दूसरों की खातिर माँगते हैं, तो यह पलटकर आपकी ओर आता है, इसलिए इस नियम में **सभी** शामिल हैं।

## दिन 179

---

**अ**र्थात् कर्षण का नियम आपके जीवन की किसी ऐसी चीज़ को नहीं बदल सकता, जिससे आप नफरत करते हैं, क्योंकि नफरत परिवर्तन को आने से रोक देती है। चूँकि यह नियम हमें एकदम सटीक रूप से वही दे रहा है, जो हम प्रेषित कर रहे हैं। इसलिए जब आप किसी चीज़ से नफरत करते हैं, तो नियम के लिए यह झरूरी हो जाता है कि यह आपको वही चीज़ ज्यादा दे, जिससे आप नफरत करते हैं। आप इससे दूर जाने में सफल नहीं हो पाएँगे। प्रेम ही एकमात्र तरीका है।

अगर आप अपनी प्रिय चीजों पर पूरी तरह ध्यान केंद्रित करते हैं, तो आप एक सुंदर जीवन जीने की राह पर चल रहे हैं।

## दिन 180

---

**अ**लोचना बहुत सूक्ष्मता से रेंगकर हमारे विचारों में समा सकती है। यहाँ आलोचना के कुछ उदाहरण दिए गए हैं, ताकि आप इसकी सूक्ष्मता के बारे में जागरूक बन सकें और इसे अपने विचारों से मिटा सकें:

आज मौसम बड़ा खराब है।

ट्रैफिक बहुत ज़्यादा है।

इन लोगों की सर्विस वाकई बेकार है।

ओह नहीं, कितनी लंबी क्रतार है।

वह हमेशा देर से आता/आती है।

हमें अपने ऑर्डर का कितनी देर तक इंतज़ार करना होगा?

वह कार वाला पागल है।

यहाँ बहुत गर्मी है।

मुझे कितने लंबे समय तक इंतज़ार करना पड़ रहा है!

ये बहुत सूक्ष्म या छोटी बातें हैं, लेकिन आकर्षण का नियम इन सबको सुन रहा है। आपमें यह क्षमता है कि आप किसी भी परिस्थिति में किसी भी चीज़ की प्रशंसा कर सकते हैं। हमारे पास कृतज्ञ होने के लिए हमेशा कुछ न कुछ होता है।

## दिन 181

---

**अ**प जो चाहते हैं, उसे साकार करने की प्रक्रिया समान है, भले ही वह कुछ भी हो। प्रक्रिया की रूपरेखा द सीक्रेट (रहस्य) फ़िल्म और पुस्तक में पूरी तरह बताई गई है, इसलिए अगर आप स्पष्ट रूप से नहीं समझ पाए हों, तो आपको फ़िल्म बार-बार देखनी चाहिए या पुस्तक बार-बार पढ़नी चाहिए, जब तक कि यह आपके दिमाग में पूरी तरह बैठ न जाए। फिर आप द सीक्रेट के सिद्धांतों को अपनी चेतना व जीवन में शामिल कर लेंगे और यह जान जाएँगे कि कोई कार्य कैसे करना है।

## दिन 182

---

“पहले अपने भीतर शांति रखें, फिर आप दूसरों के लिए भी शांति ला सकते हैं।”

थॉमस ए केम्पिस (1380-1471 )

द इमिटेशन ऑफ़ क्राइस्ट

## दिन 183

---

**कृ**ल्पना करें कि आपकी अच्छी भावनाएँ बारिश का पानी हैं और आपका शरीर इस पानी का संग्रहण क्षेत्र।

जब आप यथासंभव अधिक से अधिक अच्छी भावनाएँ महसूस करते हैं, तो आपका जल-संग्रहण क्षेत्र भरा हुआ रहता है। लेकिन अगर आप अच्छी भावनाओं को इरादतन अंदर रखना भूल जाते हैं, तो पानी का स्तर कम होते-होते तलहटी तक आ जाएगा, जहाँ मिट्टी और कीचड़ जमा रहता है। नकारात्मक भावनाएँ आपके लिए सिफ्ऱ एक संकेत हैं कि आपका जल-संग्रहण क्षेत्र कीचड़ तक आ गया है और आपको अच्छी भावनाओं से खुद को दोबारा भरने की ज़रूरत है। हर दिन अच्छी भावनाओं से खुद को लबालब रखें।

## दिन 184

---

**अ**प जो भी सकारात्मक क्रदम उठाते हैं, वह हर क्रदम आपके अस्तित्व का कायाकल्प कर देता है। अगर आप अपनी इच्छाशक्ति का निरंतर इस्तेमाल करते हैं और सीखी हुई बातों का नियमित अभ्यास करते हैं, तो आप यह देखकर हैरान रह जाएँगे कि कायाकल्प कितनी तेज़ी से होता है। आपके अस्तित्व के कायाकल्प से इतनी शांति और खुशी आती है जो बयान नहीं की जा सकती। इसे जानने के लिए आपको इसका अनुभव करना होगा, लेकिन एक बार जब आप यह कर लेते हैं, तो दोबारा कभी पलटकर पीछे नहीं देखेंगे।

## दिन 185

---

**अ**प कभी नहीं कह सकते कि आकर्षण का नियम काम नहीं कर रहा है, क्योंकि यह हर वक्त काम कर रहा है। अगर आपके पास वह नहीं है जो आप चाहते हैं, तब भी आप नियम के प्रयोग का ही परिणाम देख रहे हैं। अगर आपके पास वह नहीं है, जो आप चाहते हैं, तो आप अपनी मनचाही चीज़ के न होने का सृजन कर रहे हैं। आप अब भी सृजन कर रहे हैं और नियम अब भी आप पर प्रतिक्रिया कर रहा है।

अगर आप यह समझ लेते हैं, तो आप अपनी अविश्वसनीय शक्ति को नई दिशा दे सकते हैं, ताकि यह आपकी मनचाही चीज़ को आकर्षित करे।

## दिन 186

---

**जी** वन में लहर के साथ बहें और जब चुनौतियाँ आएँ, तो उनका प्रतिरोध करने की कोशिश न करें। प्रतिरोध करेंगे तो वे आपको जकड़ लेंगी। अपने मन को अपनी इच्छा पर केंद्रित करें और फिर चुनौतीपूर्ण या नकारात्मक चीज़ों के ऊपर बने रहें। कल्पना करें कि आप आसमान में हैं और नीचे की तरफ़ नकारात्मकता के छोटे से बिंदु को देख रहे हैं। जब आप ऐसा करते हैं, तो आप नकारात्मकता से खुद को अलग कर रहे हैं और उसे उसी रूप में देख रहे हैं, जैसी कि वह सचमुच है।

यह छोटी सी प्रक्रिया आपको किसी नकारात्मक स्थिति में ढूबने से रोकेगी।

## दिन 187

---

कृतज्ञ महसूस करते हुए अपना दिन शुरू करें। जिस बिस्तर पर आप सोए थे, उसके लिए कृतज्ञ बनें। अपने सिर के ऊपर की छत के लिए, अपने क्रदमों के नीचे के गलीचे या फ़र्श के लिए, पानी के लिए, साबुन, शॉवर, टूथब्रश, कपड़ों, जूतों, आपके भोजन को ठंडा रखने वाले फ्रिज़, अपनी कार, नौकरी, मित्रों के लिए कृतज्ञ हों। उन दुकानों के लिए कृतज्ञ हों, जो आपकी ज़रूरत की चीज़ें खरीदने को आसान बनाती हैं। उन सेवाओं, रेस्तराँ, जनोपयोगी सेवाओं, और विद्युत उपकरणों के लिए कृतज्ञ हों, जो आपके जीवन को सरल बनाते हैं। उन पत्रिकाओं और पुस्तकों के लिए कृतज्ञ हों, जिन्हें आप पढ़ते हैं। उस कुर्सी के लिए कृतज्ञ हों, जिस पर आप बैठते हैं और उस फुटपाथ के लिए भी, जिस पर आप चलते हैं। मौसम, सूरज, आसमान, पक्षियों, वृक्षों, धास, बारिश और फूलों के लिए कृतज्ञ हों।

धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद!

## दिन 188

---

अप कोई अवसर चूक ही नहीं सकते, क्योंकि सृष्टि आपके सामने अवसर पेश करती रहेगी। अगर आपको लगता है कि आप कोई अवसर चूक गए हैं, तो आपको अच्छा महसूस नहीं होगा और आप निश्चित रूप से सही अवसर हासिल करने की आवृत्ति पर नहीं होंगे। विश्वास बनाए रखें। सृष्टि के पास आपके सामने पेश करने के लिए असीमित अवसर हैं और आपका ध्यान खींचने के असीमित तरीके भी।

आप सही अवसर को पकड़ लेंगे।

## दिन 189

---

“हर व्यक्ति महान बन सकता है... क्योंकि कोई भी सेवा कर सकता है। सेवा करने के लिए आपके पास कॉलेज की डिग्री होने की ज़रूरत नहीं है। सेवा करने के लिए आपको किसी भाषा का व्याकरण जानने की ज़रूरत भी नहीं है। आपको तो सिर्फ़ दया से भरे हृदय की ज़रूरत है। सिर्फ़ प्रेम से उत्पन्न आत्मा की ज़रूरत है।”

**डॉ. मार्टिन लूथर किंग जूनियर**

(1929-1968 )

## दिन 190

---

**कि**सी अच्छी चीज़ को पाने के लिए आपको स्वयं को अच्छाई की आवृत्ति पर लाना होगा। उस आवृत्ति पर खुद को बनाए रखने के लिए अच्छे विचार सोचें, अच्छे शब्द बोलें और अच्छे कार्य करें।

## दिन 191

---

**अट**पके भीतर हर उस प्रश्न के सटीक जवाब हैं, जिन्हें जानने की आपको ज़रूरत है। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि आप जवाब खुद खोजें। आपको खुद पर और अपने असल स्वरूप पर भरोसा करना चाहिए। द सीक्रेट (रहस्य) पुस्तक और फ़िल्म आपके भीतर की शक्ति को समझने में आपकी मदद करती हैं। वे आपको उस शक्ति के बारे में जागरूक बनाती हैं, ताकि आप उसका इस्तेमाल कर सकें।

प्रश्न पूछें और फिर सजगता के साथ जागरूक बने रहें, क्योंकि जवाब आपके पास किसी भी पल आ जाएगा।

## दिन 192

---

अपको तीन बुद्धिमान बंदर याद हैं?

बुरा मत देखो।

बुरा मत सुनो।

बुरा मत बोलो।

इसका मतलब है: नकारात्मक को मत देखो, नकारात्मक बातें मत सुनो, और नकारात्मक बातें मत बोलो।

वे तीन बंदर निश्चित रूप से समझदार थे!

## दिन 193

---

ध्यवाद! ध्यवाद! ध्यवाद! गहरी भावना से जुड़ने पर यह शब्द आपके जीवन को इतना बेहतर बना सकते हैं, जितनी कि आप कल्पना भी नहीं कर सकते। लेकिन इसके लिए आपको अपने हृदय में कृतज्ञता की भावना से इन शब्दों को समाहित करना होगा।

जब कोई बिना किसी भावना के “ध्यवाद” कहता है, तो आप कैसा महसूस करते हैं? आप कुछ भी महसूस नहीं करते। और आप जानते हैं कि जब कोई तहेदिल से “ध्यवाद” कहता है, तो आप कैसा महसूस करते हैं। दोनों ही प्रकरणों में शब्द समान रहते हैं, लेकिन जब कृतज्ञता की भावना जुड़ जाती है, तो आपको महसूस होता है कि उस ऊर्जा का प्रभाव आप तक तत्काल पहुँच रहा है।

जब आप “ध्यवाद” शब्द में भावना भर देते हैं, तो आप शब्दों को पंख लगा रहे हैं।

## दिन 194

---

**अ**गर आप प्रेम की तलाश में हैं, तो आदर्श व्यक्ति (चाहे वह जो भी हो) के साथ पूर्ण आनंद पाने की सर्वश्रेष्ठ संभावना तब होती है, जब आप सृष्टि के सामने समर्पण कर देते हैं। सृष्टि को मौका दें कि वह आपके जीवन के प्रेम को आपकी ओर लाए और आपको उसकी ओर ले जाए। इसका मतलब है कि आपको रास्ते से हटना होगा और उन संभावनाओं के प्रति ग्रहणशील बनना होगा, जो सृष्टि आपके सामने पेश करती है।

हमारे संकुचित दृष्टिकोण से हम हर चीज़ नहीं देख सकते, लेकिन अपने समग्र दृष्टिकोण से सृष्टि आदर्श जोड़ी बनाना जानती है।

## दिन 195

---

“शब्दों में दयालुता से विश्वास उत्पन्न होता है। सोच में दयालुता से गहराई उत्पन्न होती है।  
दान में दयालुता से प्रेम उत्पन्न होता है।”

**लाओ-त्सू**(लगभग चौथी शताब्दी ई.पू.)

## दिन 196

---

**त**नाव, चिंता और दबाव अपने विचारों को भविष्य में पहुँचाने और किसी बुरी चीज़ की कल्पना करने से आते हैं। यह उस चीज़ पर ध्यान केंद्रित करना है, जिसे आप नहीं चाहते हैं! अगर आपको यह लगने लगे कि आपका मन नकारात्मक ढंग से भविष्य की ओर जा रहा है, तो **वर्तमान** पर गहराई से ध्यान केंद्रित करें। खुद को वर्तमान में बनाए रखें।

अपनी संपूर्ण इच्छाशक्ति का इस्तेमाल करें और इसी पल अपने मन को केंद्रित करें, क्योंकि इस पल में ही पूर्ण शांति है।

## दिन 197

---

**Q**या आपने भी इस विचार को पकड़ रखा है?

“मेरे पास दान देने के लिए पैसा नहीं है; लेकिन जब मेरे पास पैसा होगा तब मैं दान दूँगा।”  
अगर ऐसी बात है, तो आपके पास कभी पैसा नहीं होगा। किसी चीज़ को आकर्षित करने का सबसे तेज़ तरीक़ा इसे किसी दूसरे को देना है, इसलिए अगर आप पैसे को आकर्षित करना चाहते हैं, तो इसे दान में दें। आप 10, या 5 या 1 या कितने भी रुपए दे सकते हैं। इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि आप कितनी राशि देते हैं। इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि कितना और कहाँ दिया, बस दे दें!

## दिन 198

---

**अप** कृतज्ञता का जितना ज़्यादा अभ्यास करते हैं, अपने दिल में उसे उतनी ही गहराई से अनुभव करेंगे और भावना की गहराई ही असली कुंजी है। आप इसे जितनी ज़्यादा गहराई और सच्चाई से महसूस करते हैं, आप हर क्षेत्र में अपनी ओर उतनी ही ज़्यादा खुशी ले आएँगे।

जब आप हर दिन, हर अवसर पर कृतज्ञता का अभ्यास करते हैं, तब देखें कि आपके जीवन में क्या होता है!

## दिन 199

---

**ज**ब भी आप खुद के लिए कोई चीज़ माँगें, तो संसार के लिए भी माँगने की कोशिश करें।

अपने लिए अच्छी चीजें - संसार के लिए अच्छी चीजें। अपने लिए समृद्धि - संसार के लिए समृद्धि। अपने लिए सेहत - संसार के लिए सेहत। अपने लिए आनंद - संसार के लिए आनंद। अपने लिए प्रेम और सद्ग्राव - संसार के प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रेम और सद्ग्राव।

यह एक छोटी सी चीज़ है, जिसके कमाल के परिणाम होते हैं।

## दिन 200

---

**ज**ब हमारे जीवन की परिस्थितियाँ बदलती हैं, तो अक्सर हम परिवर्तन का बहुत प्रतिरोध करते हैं।

ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि जब लोग किसी बड़े परिवर्तन को आता देखते हैं, तो वे डर जाते हैं कि यह कोई बुरी चीज़ है। लेकिन यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जब हमारे जीवन में कोई बड़ा बदलाव होता है, तो इसका केवल एक ही अर्थ है कि कोई और बेहतर चीज़ हमारी ओर आ रही है। सृष्टि में शून्य (निर्वात) नहीं रह सकता, इसलिए जब कोई चीज़ बाहर जाती है, तो उसकी जगह किसी दूसरी चीज़ को आना ही होता है। परिवर्तन आने पर तनावरहित हों, पूरा विश्वास रखें और यह जान लें कि यह परिवर्तन **पूरी तरह अच्छा है**।

कोई अधिक शानदार चीज़ आपकी तरफ़ आ रही है!

## दिन 201

---

**अ**गर आप अभी वाली से बेहतर नौकरी या किसी अन्य बेहतर चीज़ को आकर्षित करना चाहते हैं, तो यह समझना महत्वपूर्ण है कि आकर्षण का नियम कैसे काम करता है।

आप जानते हैं कि किसी बेहतर चीज़ को जीवन में लाने के लिए आपको मन में यह कल्पना करनी होगी कि वह चीज़ कैसी दिखती है। फिर उस तस्वीर में इस तरह जीना होगा, मानो वह इसी समय मौजूद हो। लेकिन आपको यह भी पता होना चाहिए कि अगर आप अपनी वर्तमान नौकरी के बारे में शिकायत करते हैं और सारी नकारात्मक चीज़ों पर ध्यान केंद्रित करते रहते हैं, तो आप कभी बेहतर नौकरी को आकर्षित नहीं कर पाएँगे। आपको अपनी वर्तमान नौकरी में कृतज्ञ होने के लिए चीज़ें खोजनी होंगी। आप कृतज्ञ होने के लिए जो भी चीज़ खोजते हैं, वह हर चीज़ उस बेहतर नौकरी को आपकी ओर लाने में मदद करती है। यह सचमुच नियम का सही इस्तेमाल है!

## दिन 202

---

**कि** सी व्यक्ति की कार का मुआयना कर आपको उसके मालिक के बारे में थोड़ा-बहुत पता चल जाता है। जो कारें चमचमाती दिखती हैं, वे इस बात का प्रमाण होती हैं कि उनके मालिक उनकी क़द्र करते हैं। जो कारें बहुत गंदी और बदहाल होती हैं, उनकी क़द्र नहीं होती। एक व्यक्ति ज़्यादा अच्छी कारों को आकर्षित कर रहा है और दूसरा कमतर कारों को आकर्षित कर रहा है।

वर्तमान में आपके पास जो भी है उसकी क़द्र और प्रशंसा करें। यह आकर्षण के नियम का समझदारी भरा इस्तेमाल है।

## दिन 203

---

“विपत्ति की सबसे अँधेरी रात में भी उतने ही शक्तिशाली, संकल्पवान और उत्साहित बने रहने का संकल्प लें, जितने कि आप समृद्धि के सबसे उजले दिन में रहते हैं। जब परिस्थितियाँ निराशजनक दिखें, तो निराश न हों। परिस्थितियों, स्थितियों या घटनाओं के बावजूद उसी उज्ज्वल भविष्य पर अपनी निगाह जमाए रखें। जब चीज़ें ठीक न हों, तो उम्मीद न हारें। सभी परिस्थितियों के सही होने के अपने मूल संकल्प पर डटे रहें...”

“परिस्थितियाँ विपरीत होने के बावजूद जो इंसान कभी कमज़ोर नहीं होता, वह ज्यादा शक्तिशाली बनता जाएगा और एक वक्त ऐसा आएगा, जब उसके लिए सारी परिस्थितियाँ अनुकूल बन जाएँगी। उसके पास अंततः वह सारी शक्ति होगी, जिसकी उसे इच्छा या ज़रूरत होगी। हमेशा शक्तिशाली बनें और इस तरह आप अधिक शक्तिशाली बनते चले जाएँगे।”

**क्रिश्चिय डी. लार्सन**(1874-1954 )

यॉर फ्रोर्सेस एंड हाऊट टु यूज़ देम

## दिन 204

---

**अ**र्थात् कर्षण का नियम एक विशाल फ़ोटोकॉपी मशीन जैसा है; हमारे मन में जो रहता है, यह उसकी फ़ोटोकॉपी करता है और हमारे जीवन की परिस्थितियों व घटनाओं के रूप में हमारी ओर वापस भेज देता है। यह बहुत अच्छी बात है, क्योंकि इस तरह हमें बहुत स्पष्ट फ़िडबैक मिल रहा है कि हम अपने जीवन में कैसा कार्य कर रहे हैं। मिसाल के तौर पर, अगर आपको अपने जीवन में पर्याप्त पैसा नहीं मिल रहा है, तो आप जान जाते हैं कि आपको अपने मन और कल्पना में समृद्धि का सृजन करना होगा, ताकि नियम उसकी फ़ोटोकॉपी करके उसे आपकी ओर भेज सके।

## दिन 205

---

**अपके** विचार चाहे किसी वास्तविक चीज़ के बारे में हों या काल्पनिक चीज़ के बारे में, चाहे आपके विचार इस बारे में हों जैसा आपका जीवन इस वक्त है या फिर उस बारे में हों जैसा आप अपने जीवन को बनाना चाहते हों, आकर्षण का नियम उन सभी विचारों पर प्रतिक्रिया कर रहा है। दूसरे शब्दों में, आकर्षण का नियम यह नहीं जानता है कि आप किसी चीज़ की कल्पना कर रहे हों या वह असली है।

क्या अब आप अपनी कल्पना की शक्ति को समझ गए हैं?

## दिन 206

---

**अ**र्थ कर्षण के नियम का इस्तेमाल करके पैसा कमाने के लिए यहाँ चार बुनियादी बातें बताई जा रही हैं।

1. आप दिन भर में पैसे की कमी के जितने भी विचार सोचते हैं, उनसे ज्यादा समृद्धि के विचार सोचें।
2. इस समय खुश रहें, बिना धन के भी।
3. आपके पास इस वक्त जो कुछ भी है, उस सब के लिए कृतज्ञ बनें।
4. दूसरों को अपना सर्वश्रेष्ठ दें।

चार आसान क़दम। अगर आपमें पैसे को आकर्षित करने की इच्छा है, तो आप ये क़दम उठा सकते हैं।

## दिन 207

---

**अ**र्थात् कर्षण के नियम ने कभी किसी को निराश नहीं किया है और आपको भी नहीं करेगा। यह नियम कभी असफल नहीं होता। अगर मनचाही परिस्थितियाँ नज़र नहीं आ रही हैं, तो ऐसा इसलिए होता है क्योंकि वह व्यक्ति नियम का सही तरीके से इस्तेमाल नहीं कर रहा है।

यह नियम अचूक है, इसलिए जब आप नियम के पूर्ण सामंजस्य में काम करते हैं, तो आपको परिणाम अवश्य दिखेंगे!

## दिन 208

---

**क**ई बार जब हममें परिवर्तन करने का साहस नहीं होता है, तो हमें नई राह दिखाने के लिए हमारे आसपास की हर चीज़ बदल जाती है।

आप खुद को प्रगति करने से नहीं रोक सकते - विकास के लिए यह ज़रूरी होता है।

## दिन 209

---

ऐसा कोई काम नहीं है जो आप नहीं कर सकते। अगर आप सही क्रम में जीवन में सारी चीज़ों को करते हैं, तो हर मनचाही चीज़ प्राप्त कर लेंगे। सबसे पहले अपने सपने को पूरी तरह से अपने अंदर जिएँ, और फिर यह आपके जीवन में फलीभूत होने लगेगा। जब आप अंदर से खुद को पूरी तरह से अनुकूल बना लेते हैं, तो आप अपने सपने को हक्कीकत में बदलने के लिए ज़रूरी हर चीज़ को चुंबक की तरह आकर्षित कर लेंगे।

यही नियम है। आपके जीवन का सारा सृजन आपके अंदर ही शुरू होता है।

## दिन 210

---

“प्रथम स्थान पर आने की कोशिश करें: सहमत होने में प्रथम, मुस्कराने में प्रथम, प्रशंसा करने में प्रथम, और क्षमा करने में प्रथम।”

अज्ञात

## दिन 211

---

**अप**के शब्दों में बहुत शक्ति होती है, क्योंकि वे ऐसे विचार हैं, जिन्हें आपने अतिरिक्त ऊर्जा दी है। अपने शब्दों पर ग़ौर करें। जब आप अनचाहे शब्दों को बोलते समय बीच में ही पकड़ लेते हैं, तो वह एक भव्य पल होता है, क्योंकि इसका मतलब है कि आप ज़्यादा चेतन और जागरूक बन रहे हैं। जी हाँ!

## दिन 212

---

**अ**नंत ब्रह्माण्ड हमारे सूर्य जैसा है। प्रकाश और जीवन देना सूर्य की प्रकृति है। अगर यह प्रकाश और जीवन नहीं देता, तो सूर्य का अस्तित्व ही नहीं हो सकता था। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि सूर्य एक दिन सुबह उठकर यह सोचने लगे, “मैं प्रकाश और जीवन देते-देते उकता चुका हूँ!” जिस पल सूर्य जीवन देना बंद कर देगा, वह अस्तित्व में ही नहीं रहेगा। यह अनंत ब्रह्माण्ड भी सूर्य जैसा ही है और देना ही इसका सार व प्रकृति है - और यह ऐसा किये बिना अस्तित्व में नहीं रह सकता।

जब हम सृष्टि के नियमों के सामंजस्य में रहते हैं, तो हम इसके दान की खुशी अनुभव करते हैं।

## दिन 213

---

**Y**ह याद रखना महत्वपूर्ण है कि आप हर पल किसी न किसी आवृत्ति पर स्पंदित होते हैं। बाहरी परिस्थितियों को बदलने और अपने जीवन को ज़्यादा ऊँचे स्तर तक ले जाने के लिए आपको अपने भीतर की आवृत्ति को बदलना होगा। अच्छे विचार, अच्छे शब्द और अच्छे कार्य आपकी आवृत्ति को उच्च स्तर पर ले जाते हैं।

आपकी आवृत्ति जितनी ज़्यादा ऊँची होती है, आप उतनी ही ज़्यादा अच्छाई को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

## दिन 214

---

**ज**ब आप नियम के सामंजस्य में नहीं होते हैं, तो जीवन में अभाव को अनुभव करते हैं। लेकिन दरअसल आप खुद ही इस अनुभव का सृजन कर रहे हैं। सृष्टि लगातार दे रही है, इसलिए आपको सीखना होगा कि खुद को सृष्टि के सामंजस्य में कैसे लाएँ। और आदर्श लय यह है: अच्छे विचार, अच्छे शब्द और अच्छे कार्य।

## दिन 215

---

सृष्टि आपसे संपूर्ण और अथाह प्रेम करती है। चाहे आप कितनी भी ग़लतियाँ कर लें, चाहे आप अपने जीवन में किसी भी मुकाम पर हों, चाहे आप अपने बारे में कुछ भी सोचते हों, सृष्टि आपको अनंत काल तक प्रेम करती है।

## दिन 216

---

**अप** सचमुच क्या चाहते हैं? आप कौन-सा परिणाम चाहते हैं? आपका काम यह है कि अपने मनचाहे परिणाम को मन में रखें और उसे इस तरह महसूस करें, मानो यह इस वक़्त आपके पास हो। आपको बस इतना ही करना है। वह परिणाम साकार **कैसे** होगा, यह सृष्टि का काम है। बहुत सारे लोग यहीं पर गलती कर जाते हैं और कैसे को समझने के चक्कर में उलझ जाते हैं।

इसका एक उदाहरण देखें। एक व्यक्ति एक महँगे कॉलेज में पढ़ना चाहता है, इसलिए वह यह समझने की कोशिश करता है कि उसे कॉलेज की पढ़ाई के लिए पैसे कहाँ से मिलेंगे। देखिए, परिणाम कॉलेज में पढ़ना है। उस व्यक्ति को उस कॉलेज में रहने या पढ़ने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए - यही उसका काम है।

परिणाम पर ध्यान केंद्रित करें, ताकि सृष्टि इसे साकार करने के लिए अपने असीमित तरीकों का इस्तेमाल कर सके।

## दिन 217

---

“पानी में फेंके गए किसी पत्थर की तरह ही विचारों से लहरें पैदा होती हैं, जो विचार के पूरे महासागर में फैल जाती हैं। बहरहाल, दोनों में यह फ़र्क है: पानी की लहरें सिर्फ़ समतल धरातल पर ही सब दिशाओं में फैलती हैं, जबकि विचार-तरंगें सूर्य की किरणों की तरह एक साझे केंद्र से सब दिशाओं में फैलती हैं।”

**विलियम वॉकर ऐटकिन्सन**(1862-1932 )

थॉट वाइब्रेशन

## दिन 218

---

**अ**गर कोई मुश्किल में है, तो आप उसके लिए प्रेरणा बन सकते हैं। लेकिन इसके लिए आपको उनके साथ दुखी नहीं होना है, बल्कि अपने आनंद के प्रकाश के ज़रिये उन्हें ऊपर उठाना है।

आप कैसा महसूस कर रहे हैं, इससे आपको पता चल जाएगा कि क्या आप प्रेरणा के स्रोत बन पा रहे हैं या नहीं। अगर आप अपनी अच्छी भावनाओं को क्रायम रखते हैं, तो इसका मतलब है कि आपके आनंद का प्रकाश चमकदार और दीप्तिमान है। जिस पल आप भारीपन या उदासी महसूस करने लगें, तो समझ लें कि समस्या की नकारात्मकता आपको प्रभावित कर रही है। तब आपको अलग हटते हुए खुद को अच्छा महसूस करने की ओर ले जाना चाहिए।

जब तक आपके भीतर का आनंद बाहर की ओर न फैल रहा हो, तब तक आपके पास किसी को देने के लिए कुछ भी नहीं होता।

## दिन 219

---

वर्तमान में आप चाहे जैसी भी आर्थिक स्थिति में हों, अपने विचारों के ज़रिये आप खुद ही इसे वास्तविकता में लाए हैं। अगर यह वैसी नहीं है जैसी आप चाहते हैं, तो आपने अचेतन रूप से इसका सृजन किया है, लेकिन फिर भी सृजन तो आप ही ने किया है। जब आप इसे समझ लेंगे, तो यह भी समझ जाएँगे कि आपका सृजन कितना शक्तिशाली है। और अब आपको चेतन होकर बस अपनी मनचाही चीज़ों का सृजन करना है!

## दिन 220

---

**ज**ब आप अपनी आँखें बंद करके पैसे होने का मानसिक चित्र बनाते हैं और उस पैसे की बदौलत मिलने वाली सारी मनचाही चीज़ों की कल्पना करते हैं, तो आप एक नई वास्तविकता का सृजन कर रहे हैं। आपका अवचेतन मन और आकर्षण का नियम यह नहीं जानते कि आप जिस चीज़ की कल्पना कर रहे हैं वह वास्तविक है या नहीं। इसलिए जब आप कल्पना करते हैं, तो आकर्षण का नियम उन विचारों और चित्रों को इस तरह मान लेता है, मानो आप उन्हें सचमुच जी रहे हों। इसके बाद उसे आपके चित्रों को परिस्थितियों और घटनाओं के रूप में आपको लौटाना ही होता है।

जब आप उस स्थिति में पहुँच जाएँ, जहाँ कल्पना आपको वास्तविक महसूस होने लगे, तो समझ लें कि यह आपके अवचेतन मन के भीतर तक पहुँच गई है। अब आकर्षण के नियम को इसे साकार करके आप तक पहुँचाना ही होगा।

## दिन 221

---

**ज**ब आप अपने बिल चुकाएँ, तो कल्पना का इस्तेमाल करें और अपनी पसंद का कोई भी खेल बना लें। कल्पना करें कि वे आपके बिल नहीं चेक हैं या बिल चुकाते वक्त आप उस पैसे को तोहफ़े के रूप में दे रहे हैं। अपने बैंक खाते की राशि में कुछ शून्य जोड़ लें। या फिर द सीक्रेट वेबसाइट पर दिए बैंक ऑफ़ द युनिवर्स के चेक को अपने बाथरूम के आईने पर, फ्रिज पर, टेलीविज़न स्क्रीन के नीचे, कार में अपने सामने, अपनी मेज़ पर या कंप्यूटर पर चिपका लें।

नाटक करें और खेल बनाएँ, ताकि समृद्धि का भाव आपके अवचेतन मन में समा जाए।

## दिन 222

---

**पा**ने का सबसे तेज़ तरीका देना है, क्योंकि देना पाने के पारस्परिक कार्य से शुरू होता है। हम सभी को उतना ही मिलता है, जितना हम देते हैं। जहाँ भी जाएँ, हर जगह अपना सर्वश्रेष्ठ दें। मुस्कान बाँटें। धन्यवाद दें। दयालु बनें। प्रेम प्रदर्शित करें।

आप जो भी दें, वापसी की उम्मीद रखे बिना दें - देने के शुद्ध आनंद के लिए दें।

## दिन 223

---

इस धरती पर हर धर्म ने **आस्था** रखने की बात कही है। आस्था का मतलब यह है कि आपको बिलकुल पता नहीं होता कि कोई काम कैसे होगा, लेकिन फिर भी आपको पूरा विश्वास होता है कि जिस पल आपने कोई सपना देखा, उसी पल वह चीज़ आपको दी जा चुकी है। इसके बाद आपको आराम से रहना है और सृष्टि को अनुमति देना है कि वह आपको चुंबक बनाकर सपने की ओर खींचे और सपने को चुंबक बनाकर आपको उसकी ओर खींचे।

## दिन 224

---

“हम जो भी हैं, वह हमारी सोच का ही परिणाम है... अगर कोई व्यक्ति किसी बुरे विचार से बोलता या काम करता है, तो उसका परिणाम उसे दुःख के रूप में भोगना होगा... अगर कोई व्यक्ति शुद्ध विचार से बोलता या काम करता है, तो उसका परिणाम उसे खुशी के रूप में प्राप्त होगा - एक ऐसी परछाई की तरह जो उसका साथ कभी नहीं छोड़ेगी।”

**बुद्ध** (लगभग 563 से 483 ई.पू.)  
द ट्रिन वर्सेस

## दिन 225

---

चूँकि हर चीज़ आध्यात्मिक संसार में पहले से मौजूद होती है, इसलिए आप जो चाहते हैं, वह भी मौजूद है। दरअसल यह हमेशा से मौजूद रही है, क्योंकि आध्यात्मिक संसार में समय का कोई अस्तित्व नहीं होता है। इसे समझना हमारे सीमित भौतिक मन के लिए मुश्किल हो सकता है। लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि अगर आपकी मनचाही चीज़ पहले से मौजूद है, तो आप समझ जाएँगे कि जिस पल आप इसे माँगते हैं, उसी पल यह आपको दे दी जाती है। आप जो चाहते हैं, उसे आध्यात्मिक से भौतिक संसार में लाने के लिए आपको बस इतना करना है कि अपनी इच्छा के सामंजस्य में तरंगे प्रेषित करें। आपको अपनी मनचाही चीज़ का सृजन नहीं करना है, क्योंकि यह तो पहले से मौजूद है।

स्वयं अपनी मनचाही चीज़ की तरंगे बन जाएँ और आप इसे खुद के माध्यम से भौतिक संसार में ले आएँगे।

## दिन 226

---

**ज**ब आप किसी चीज़ या व्यक्ति की आलोचना करते हैं या उसे दोष देते हैं, तो गौर करें कि आप कैसा महसूस करते हैं। ये बुरी भावनाएँ आपको स्पष्ट रूप से बता रही हैं कि आप नकारात्मकता को आकर्षित कर रहे हैं। उस अचूक मार्गदर्शन पर गौर करें, जो सृष्टि आपकी भावनाओं के ज़रिये आप तक पहुँचा रही है।

अच्छा महसूस करने के अलावा बाकी सारे अहसास बेकार हैं।

## दिन 227

---

**य**हाँ एक जाँचसूची दी जा रही है, ताकि आपको यक़ीन हो जाए कि आपके प्राप्त करने के द्वार खुले हुए हैं:

क्या आप प्रशंसा को अच्छी तरह ग्रहण करते हैं? क्या आप अप्रत्याशित तोहफों को आसानी से स्वीकार कर लेते हैं? क्या आप मदद की पेशकश को स्वीकार कर लेते हैं? जब कोई मित्र आपके लंच या डिनर का भुगतान करना चाहता है, तो क्या आप मान जाते हैं?

ये बहुत छोटी-छोटी बातें हैं, लेकिन इनसे आपको यह जानने में मदद मिलेगी कि क्या आप ग्रहण और स्वीकार करने के लिए तैयार हैं। याद रखें, आपको देने के लिए सृष्टि हर व्यक्ति और हर परिस्थिति के माध्यम से काम कर रही है।

## दिन 228

---

**अ**पके विचार व भावनाएँ कारण हैं और जो प्रकट होता है, वह परिणाम है। इसलिए अगर आप अपनी मनचाही चीज़ को आत्मसात कर लेते हैं, तो आपने अपना काम पूरा कर दिया है और इससे ज्यादा आपको कुछ नहीं करना है। जैसा भीतर है, वैसा ही बाहर है। जैसा आपके अंदर है, वैसा ही आपके बाहर है।

याद रखें, कारण आपके भीतर है और बाहरी संसार परिणाम है।

## दिन 229

---

**य**दि ऐसा लगे कि आपके जीवन का कोई कार्य आपकी मनचाही चीज़ का विरोध करता है, तो उसे करते वक्त अपनी कल्पना का इस्तेमाल करें। अपनी मनचाही चीज़ के सूजन में मदद करने के लिए आप अपने कार्यों का हर दिन इस्तेमाल कर सकते हैं। मिसाल के तौर पर, अपनी पुरानी कार चलाते वक्त कल्पना कर सकते हैं कि आप दरअसल वह नई कार चला रहे हैं, जिसे आप चाहते हैं। अपने पर्स को निकालते वक्त कल्पना कर सकते हैं कि वह नोटों से भरा हुआ है। अपने किसी भी कार्य को बनावटी खेल बना सकते हैं, जो आपकी मनचाही चीज़ के तारतम्य में हो।

याद रखें, आकर्षण के नियम को यह पता नहीं होता कि कोई चीज़ वास्तविक है या काल्पनिक।

## दिन 230

---

जब मैं द सीक्रेट फ़िल्म बना रही थी, तो साथ-साथ नियम को भी सीख रही थी और कुछ समय के लिए मैं मदद की तलाश बाहरी संसार में करने की ग़लती कर बैठी। मैं एक ऐसी फ़िल्म बना रही थी, जिसकी लागत लाखों डॉलर थी और शुरुआत में मैं कर्ज़ में डूबी हुई थी। मैं जहाँ भी गई, मैंने जहाँ भी मदद की तलाश की, निराशा ही हाथ लगी। मेरे देखते ही देखते एक के बाद एक दरवाज़े बंद होते गए। मैं मदद की तलाश ग़लत जगह पर कर रही थी, क्योंकि सृष्टि की समूची शक्ति तो मेरे भीतर ही थी।

जब मैंने अपना नज़रिया बदला और अपने भीतर की शक्ति से जुड़ी और सिफ़्र उसी पर ध्यान केंद्रित किया, तो मैंने सृष्टि को आदर्श रास्ता खोजने का अवसर दे दिया। मैंने अपना काम किया और परिणाम को अपने दिल, दिमाग़ व शरीर में रखा, और मेरा रास्ता रोशन हो गया।

## दिन 231

---

“आप क्या सोचते हैं, यह चुनने के लिए आप स्वतंत्र हैं, लेकिन आपके विचार का परिणाम एक अपरिवर्तनशील नियम से शासित होता है।”

**चार्ल्स हानेल** (1866-1949 )

द मास्टर की सिस्टम

## दिन 232

---

**ज**ब आप अपना उद्देश्य जान लेते हैं, तो ऐसा लगता है मानो आपका हृदय जोश से भर गया हो। आप इसे पूरी तरह, बिना किसी शंका के जान लेते हैं।

## दिन 233

---

**अ**प अपनी आवृत्ति तरंगों को कितना ऊपर उठा सकते हैं, इसकी कोई सीमा नहीं है, क्योंकि इस बात की कोई सीमा नहीं है कि आप कितने अधिक अच्छे विचार सोच सकते हैं या कितने अच्छे शब्द बोल सकते हैं या कितने अच्छे काम कर सकते हैं। अपनी आवृत्ति का स्तर उठाकर अपने जीवन को बदलने के साथ ही आप दूसरों के जीवन की गुणवत्ता को भी ऊपर उठा देते हैं। आपकी ऊर्जा से सकारात्मक तरंगें उसी तरह प्रकट होती हैं, जिस तरह पानी में फेंके गए पत्थर की लहर; यह हमारी पृथ्वी और इस पर रहने वाले हर जीवित प्राणी को छूती हैं।

जब आप आगे बढ़ते हैं, तो संसार को भी अपने साथ बढ़ाते चलते हैं।

## दिन 234

---

**बा**हरी संसार के किसी भी व्यक्ति या शक्ति की तुलना उस ताक़त से नहीं की जा सकती, जो आपके भीतर है। शक्ति को भीतर खोजें, क्योंकि यह आपके लिए आदर्श राह जानती है।

## दिन 235

---

**अ**गर आप तनाव महसूस कर रहे हैं, तो मनचाही चीज़ अपने पास नहीं ला सकते। किसी भी तरह का तनाव या दबाव एक ऐसी चीज़ है, जिसे आपको अपने अंदर से हटाना होगा।

तनाव को स्वयं के भीतर जगह न दें - यह एकमात्र तरीक़ा है, जिससे आप अपनी मनचाही चीज़ पा सकते हैं। तनाव का भाव रखने का मतलब प्रबलता से यह कहना है कि आपके पास आपकी मनचाही चीज़ **नहीं** है। दबाव या तनाव का अर्थ आस्था का अभाव है, इसलिए इसे हटाने के लिए आपको बस अपनी आस्था को बढ़ाना है!

## दिन 236

---

अट्ट स्था का अर्थ है अच्छाई में विश्वास करना।

डर का अर्थ है बुराई में विश्वास करना।

## दिन 237

---

**अप** अपने जीवन में जो भी लाना चाहते हों, उसे आपको **देना** होगा। क्या आप प्रेम चाहते हैं? तो प्रेम दें। क्या आप प्रशंसा चाहते हैं? तो प्रशंसा दें। क्या आप समझदारी चाहते हैं? तो इसे दें। क्या आप आनंद और खुशी चाहते हैं? तो दूसरों को यही दें।

आप हर दिन कई लोगों को बहुत सारा प्रेम, प्रशंसा, समझदारी और खुशी दे सकते हैं!

## दिन 238

---

“जब आप यह तय कर लें कि आप क्या करना चाहते हैं, तो प्रतिदिन हज़ार बार खुद से कहें कि आप इसे कर लेंगे। सर्वोत्तम रास्ता जल्दी ही खुल जाएगा और आपके पास अपना मनचाहा अवसर होगा।”

**क्रिश्मियन डी. लासन**(1874-1954 )

यॉर फोर्सेस एंड हाऊट टु यूज देम

## दिन 239

---

अच्छाई की तलाश किए बिना, दिल में अच्छा महसूस किए बिना, प्रशंसा किए बिना, सराहना किए बिना, दुआ किए बिना और कृतज्ञ हुए बिना एक भी दिन न गुज़रने दें।  
इसे अपने जीवन का संकल्प बना लें। इसके बाद आपकी ज़िंदगी में जो होगा, उसे देखकर आप हैरान रह जाएँगे।

## दिन 240

---

**ज**ब आपके जीवन में कोई बड़ा परिवर्तन होता है, तो यह आपको दिशा बदलने पर मजबूर कर देता है। हो सकता है कि नया रास्ता आसान न हो, लेकिन आप पूरी तरह सुनिश्चित हो सकते हैं कि नए मार्ग पर आपके लिए कोई न कोई शानदार चीज़ जरूर होगी। आप सुनिश्चित हो सकते हैं कि नए मार्ग पर ऐसी चीज़ें होंगी, जिनका अनुभव आपको उस परिवर्तन के बिना नहीं होता।

जब हम अतीत में हुई किसी नकारात्मक घटना को पलटकर देखते हैं, तो हमें अक्सर नज़र आता है कि उसने हमारे जीवन का रुख कैसे बदल दिया था। हम देख पाते हैं कि वह घटना हमें एक ऐसे जीवन की ओर ले गई, जिसे आज हम किसी भी क्रीमत पर नहीं बदलना चाहेंगे।

## दिन 241

---

**प्रा**चीन बैबीलॉन निवासी एक अत्यंत महत्वपूर्ण नियम का पालन करते थे, जो उनकी बेशुमार समृद्धि का कारण था। वे दशमांश दान के नियम का इस्तेमाल करते थे, जिसमें आप अर्जित किए जाने वाले सारे पैसों या दौलत का दसवाँ हिस्सा दान करते हैं। दशमांश दान का नियम कहता है कि आपको कुछ पाने के लिए पहले देना होगा और बैबीलॉन निवासी जानते थे कि इस नियम पर चलने से समृद्धि का बहाव खुल जाता है।

अगर आप सोच रहे हैं, “जब मेरे पास पर्याप्त पैसा होगा, तभी दान दूँगा,” तो दशमांश दान का नियम कहता है कि आपके पास कभी पर्याप्त पैसा नहीं होगा, क्योंकि आपको पहले दान देना होगा। दुनिया के कई सबसे दौलतमंद लोगों ने दशमांश दान देकर दौलत का सफ़र तय किया है और उन्होंने कभी ये दान देना नहीं छोड़ा!

## दिन 242

---

**ज**ब जब आप खुद की ओर देखते हैं और अपने प्रति असंतुष्टि महसूस करते हैं, तो आप असंतुष्टि की भावनाओं को ही आकर्षित करते रहेंगे, क्योंकि जो आपके भीतर है, नियम आपको बिलकुल उसी का प्रतिबिंब दिखाता है।

आपके भीतर कितना वैभव छिपा हुआ है इस पर चकित और विस्मित तो हुआ ही जा सकता है!

## दिन 243

---

**चा**हे कितनी भी विषमताएँ हों, हम इस जीवन को सर्वश्रेष्ठ संभव जीवन बना सकते हैं। द सीक्रेट फ़िल्म में बताई मॉरिस गुडमैन की कहानी के बारे में सोचें। मॉरिस अस्पताल में पूरी तरह अपाहिज पड़े थे और बस अपनी पलकें ही झापका सकते थे। लेकिन वे जानते थे कि वे अब भी मानसिक चित्रण के लिए अपने मन का इस्तेमाल कर सकते हैं। और सारी विषमताओं के बावजूद मॉरिस चलने में कामयाब हो गए।

अपने जीवन के मानसिक चित्र को भव्य बनाएँ। मानसिक चित्रण में खुद को पूर्ण आनंद में देखें और इसे क्रायम रखें, चाहे जो हो जाए!

## दिन 244

---

**अप** एक चुंबक हैं। आप भीतर जो भी महसूस कर रहे हैं, उसे आप अपनी ओर ला रहे हैं। इसलिए आनंद को आकर्षित करने वाला चुंबक बनें और अपनी पूरी शक्ति से इस पर लगातार काम करते रहें। आनंद आपके अंदर की भावना है और बाहरी संसार में चाहे जो हो रहा हो, आप इसे महसूस कर सकते हैं।

यह जान लें कि नियम के अनुसार जीने के लिए आपको आनंद में होना चाहिए, ताकि आनंद से भरपूर जीवन आपकी ओर आ सके।

## दिन 245

---

“ज्यादातर लोग लगभग उतने ही खुश रहते हैं, जैसा वे अपने मन में सोच लेते हैं।”

**अब्राहम लिंकन**(1809-1865 )

## दिन 246

---

**लोग** जीवन भर भौतिक संसार की चीज़ों के पीछे दौड़ते रहते हैं, लेकिन अपने उस सबसे बड़े खजाने को नहीं खोज पाते हैं, जो उनके भीतर है। बाहरी संसार के प्रति आँखें मृद लें। अपने विचारों और शब्दों को भीतर की ओर मोड़ें। आपके भीतर का नायक ही संसार के सारे खजानों की चाबी है।

## दिन 247

---

**अपके** भीतर एक नायक विराजमान है और जीवन में हर पल आपको मार्गदर्शन दिया जा रहा है। अपने लिए सोचें और अपने लिए चुनें।

## दिन 248

---

**अट**पका शरीर एक फ़िल्म प्रोजेक्टर की तरह है और प्रोजेक्टर में जो फ़िल्म चल रही है, वह आपके सभी विचारों और भावनाओं की है। आप अपने जीवन के पर्दे पर जो भी देखते हैं, वह हर चीज़ आपके भीतर से प्रक्षेपित हुई है और आप ही ने ये सभी चीज़ें इस फ़िल्म में डाली हैं।

अधिक ऊँचे विचारों और भावनाओं को चुनकर आप किसी भी समय पर्दे पर दिखने वाले दृश्यों को बदल सकते हैं। आपकी फ़िल्म में क्या चलेगा, इस पर आपका पूरा नियंत्रण होता है!

## दिन 249

---

**अट्ट**पके जीवन की फ़िल्म कैसी चल रही है? क्या आपको पैसा, सेहत या संबंधों के मामले में पटकथा में कोई परिवर्तन करने की ज़रूरत है? क्या आप इसे संपादित करना चाहते हैं? आज ही अपनी फ़िल्म में मनचाहे परिवर्तन करने का दिन है, क्योंकि आज के परिवर्तन ही कल पर्दे पर दिखेंगे।

आप अपने जीवन की फ़िल्म बना रहे हैं और यह आपके हाथों में है - प्रत्येक दिन।

## दिन 250

---

**हा**लाँकि सीखने को बहुत कुछ है और अध्ययन करने के लिए भी बहुत कुछ है, लेकिन जीवन का सत्य आपके आसपास के संसार की हर चीज में है, बशर्ते आपके पास उसे देखने वाली आँखें हों। यह सिफ़्र हमारा अज्ञान और बनी-बनाई मान्यताएँ हैं, जो हमें सत्य के प्रति अंधा कर देती हैं।

अपने भीतर प्रश्न पूछना जारी रखें, सीखना जारी रखें, निश्चित मान्यताओं को छोड़ना जारी रखें, और सत्य आपके सामने प्रकट हो जाएगा।

## दिन 251

---

“जब आप किसी महान उद्देश्य, किसी असाधारण योजना से प्रेरित होते हैं, तो आपके सारे विचार बंधन तोड़ देते हैं; आपका मन सीमाएँ पार कर जाता है, आपकी चेतना का हर दिशा में विस्तार होता है और आप खुद को एक नए, महान तथा अद्भुत संसार में पाते हैं। निष्क्रिय शक्तियाँ, योग्यताएँ तथा प्रतिभाएँ सजीव बन जाते हैं और आप जान जाते हैं कि आप उससे ज़्यादा महान इंसान हैं, जितना आपने सपने में भी कभी नहीं सोचा था।”

### पतंजलि योग (लगभग 200 ईपू)

सूत्र

## दिन 252

---

**अप**को इस तरह बोलना चाहिए, मानो आपकी मनचाही चीज़ इसी समय आपके पास हो। यह बहुत महत्वपूर्ण है। नियम आपके विचारों और शब्दों पर सटीकता से प्रतिक्रिया करता है। इसलिए अगर आप किसी चीज़ को भविष्य में देखते हैं, तो आप दरअसल इसे अभी होने से रोक रहे हैं।

आपको ऐसा महसूस करना चाहिए, मानो यह इसी समय आपके पास हो।

## दिन 253

---

**जै** से-जैसे आप आकर्षण के नियम का अभ्यास करते हैं, आपके विचारों और भावनाओं की तरंगें ज्यादा ऊँची होती जाती हैं। वे कितनी ऊँची हो सकती हैं, इसकी कोई सीमा नहीं है। जब वे उच्च से उच्च स्तर पर कार्य करते हैं, तो आप का जीवन भी और अधिक ऊँचाई पर पहुँच जाता है। लेकिन यह क़दम-दर-क़दम प्रक्रिया है और ज्यादा उच्च स्तर पर जाने का एकमात्र तरीक़ा क़दम-दर-क़दम ही है।

इसलिए हर दिन ज्यादा से ज्यादा अच्छा महसूस करें, हर दिन ज्यादा से ज्यादा अच्छे विचार सोचें और एक दिन आप लक्ष्य पर पहुँच जाएँगे।

## दिन 254

---

**नि**यम पर पूरा नियंत्रण पाने का तरीका खुद पर पूरा नियंत्रण पाना है। अगर आप अपने विचार और भावनाओं को नियंत्रित कर लेंगे, तो आकर्षण के नियम के स्वामी बन जाएँगे, क्योंकि आप खुद के स्वामी बन चुके होंगे।

## दिन 255

---

**कोई** भी इंसान जान-बूझकर किसी ऐसी चीज़ को अपनी ओर नहीं लाएगा, जिसे वह न चाहता हो। लेकिन यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि मानव जाति के पूरे इतिहास में बहुत से लोगों ने दर्द, दुख और नुकसान सहा है, और सिफ़्र इसलिए क्योंकि वे उस नियम के बारे में जागरूक नहीं थे, जो उनके जीवन को बाक़ी किसी भी नियम से ज़्यादा प्रभावित करता है।

इतिहास की दिशा अब बदल चुकी है, क्योंकि अब आपके पास आकर्षण के नियम का ज्ञान आ गया है। अब आप उस जीवन का सृजन कर सकते हैं, जिसके आप हक़दार हैं। आप इतिहास बदल रहे हैं!

## दिन 256

---

**अ**पका कार्य सिर्फ़ और सिर्फ़ स्वयं पर कार्य करना है। अगर आप नियम के सामंजस्य में काम कर रहे हैं, तो आपके और सृष्टि के बीच कोई नहीं आ सकता। बहरहाल, अगर आप ऐसा सोचते हैं कि आपकी मनचाही चीज़ की राह में कोई बाधा डाल सकता है, तो आप नकारात्मक हो रहे हैं। आप जो चाहते हैं, उसके सृजन पर ध्यान केंद्रित करें।

आप अपने जीवन में दैवी संचालन के केंद्र हैं और सृष्टि आपकी साझेदार है। आपके सृजन की राह में कोई भी बीच में नहीं आ सकता।

## दिन 257

---

**अ**गर आप निर्णय नहीं ले पा रहे हों कि क्या करें या किस मार्ग पर चलें, तो याद रखें कि कोई है जो यह सब जानता है और वह आपके हर निर्णय में व आपके जीवन के हर मोड़ पर आपका मार्गदर्शन करेगा। आपको तो बस माँगना है, फिर विश्वास करना है कि आपके द्वारा चाहा गया मार्गदर्शन आपको मिलेगा, और फिर जवाब पाने के लिए सतर्क रहना है। सृष्टि की सर्वोच्च शक्ति हर क़दम पर आपके साथ है। आपको तो बस इसकी शक्ति पर विश्वास करना है और माँगना है।

## दिन 258

---

**ज**ब आपको पैसे की ज़रूरत महसूस नहीं होती है, तब पैसा आता है। पैसे की ज़रूरत महसूस करने का अहसास इस विचार से आता है कि आपके पास पर्याप्त पैसा नहीं है। नतीजा यह होता है कि आप पर्याप्त पैसे न होने का सृजन जारी रखते हैं।

आप हमेशा सृजन कर रहे हैं और धन के मामले में या तो आप इसके अभाव का सृजन कर रहे हैं या फिर इसकी प्रचुरता का।

## दिन 259

---

“हमारे लिए हमारी तकदीर किसी बाहरी शक्ति ने नहीं बनाई है; हम अपने लिए इसका निमार्ण खुद करते हैं। हम वर्तमान में जो सोचते और करते हैं, उसी से यह तय होता है कि भविष्य में हमारे साथ क्या होगा।”

“जब आप अपने विचारों को नियंत्रित करना सीख लेते हैं, तो आपके जीवन में ऐसा कुछ नहीं होता, जिसे आप संशोधित, परिवर्तित या बेहतर न बना सकें।”

**क्रिश्मियन डी. लार्सन** (1874-1954 )

योर फोर्सेस एंड हाऊट टु यूज़ देम

## दिन 260

---

**अ**गर आपको किसी चीज़ को खो बैठने का डर है और आप उसे अपने मन में जमा कर बैठे हैं, तो यह जान लें कि आप उसे खुद से उतनी ही दूर धकेल रहे हैं। ये विचार डर से भरे हुए हैं और अगर आप इन्हें लगातार सोचते रहे, तो आपको जिसका सबसे ज़्यादा डर है, वही आपके जीवन में घटित हो जाएगा।

किसी भी बात से भयभीत न हों - सिर्फ़ इस बारे में सोचें कि आप क्या चाहते हैं। इससे बहुत बेहतर महसूस होता है!

## दिन 261

---

**सत्य** आपको स्वतंत्र कर देगा। संसार में सारा दर्द और कष्ट उन लोगों की वजह से है, जो सृष्टि के अपरिवर्तनशील ब्रह्मांडीय नियमों को नहीं जानते हैं। द सीक्रेट के सिद्धांत हर व्यक्ति के लिए हैं, ताकि वे स्वयं ब्रह्मांडीय नियम को साबित करें। खुद के लिए इसे साबित करें और सत्य आपको स्वतंत्र कर देगा।

## दिन 262

---

**वि** चारों को बार-बार, कई बार सोचने से वे विश्वास बन जाते हैं। विश्वास एक सतत प्रक्रिया है, जिसे आप प्रेषित कर रहे हैं और हमारे विश्वास ही वे सबसे शक्तिशाली चीज़ हैं, जो आकर्षण के नियम के ज़रिये हमारे जीवन का सृजन करते हैं। आकर्षण का नियम उसी पर प्रतिक्रिया करता है, जिस पर आप विश्वास करते हैं!

इसीलिए जब आप किसी चीज़ का सृजन करना चाहते हों, तो आपको माँगना और विश्वास करना होगा, और फिर वह आपको मिल जाएगी।

## दिन 263

---

**प्रे**म आपका सच्चा स्वभाव है और इसका प्रमाण यह है कि आपके भीतर यह असीमित रूप में मौजूद है। किसी भी इंसान के पास यह कम मात्रा में नहीं होता है, न ही किसी पर यह बंधन है कि वह कितना प्रेम प्रदर्शित करता है।

प्रेम का सर्वशक्तिमान बल आकर्षण के नियम को तीव्रता प्रदान करता है - यह सृष्टि की सबसे शक्तिशाली चुंबकीय ताक़त है।

## दिन 264

---

**Y**दि किसी व्यक्ति का ध्यान बीमारी पर केंद्रित है, तो वह अनजाने में बीमारी को आकर्षित कर रहा है। दूसरी ओर, अगर कोई व्यक्ति बीमारी से ज़्यादा सेहत पर ध्यान केंद्रित करता है, तो आकर्षण के नियम को आज्ञा माननी होगी और सेहत प्रदान करनी होगी। आकर्षण के नियम के सिद्धांत हमारी अंदरूनी उपचारक शक्ति के आह्वान का शक्तिशाली औज़ार हैं। इसका प्रयोग आज उपलब्ध आश्वर्यजनक चिकित्सा तकनीकों के पूर्ण सामंजस्य में किया जा सकता है।

याद रखें, अगर हमारे भीतर कोई उपचारक शक्ति नहीं होती, तो किसी चीज़ का उपचार संभव नहीं था।

## दिन 265

---

**अ**गर आप कोई चीज़ माँगते हैं, लेकिन अपने दिल की गहराई में आपको यह यक्कीन नहीं होता कि यह जल्द हासिल हो सकती है, क्योंकि यह बहुत बड़ी है, तो आप ही हैं, जो अपने सृजन में समय को बाधा बना रहे हैं। आप ही हैं, जो अपनी माँगी हुई चीज़ के आकार के आधार पर इसमें लगने वाले समय को तय कर रहे हैं। देखिए, सृष्टि में आकार या समय का कोई बंधन नहीं होता। सृष्टि के हृदय में हर चीज़ वर्तमान में मौजूद है!

## दिन 266

---

“कोई शक्तिशाली या लंबे समय तक बने रहने वाला विचार हम सभी को दूसरों की ठीक वैसी ही विचार-तरंगों के लिए आकर्षण का केंद्र बना देगा। विचार जगत में समान ही समान को आकर्षित करता है - जैसा आप बोते हैं, वैसा ही काटेंगे...

“जो पुरुष या महिला प्रेम से भरे हुए हैं उन्हें हर तरफ प्रेम ही दिखाई देता है और वे दूसरों के प्रेम को आकर्षित करते हैं। अपने हृदय में नफ़रत रखने वाले मनुष्य को भरपूर नफ़रत मिलती है, जिसे वह झेल सकता है। जो व्यक्ति लड़ाई के विचार रखता है, उसे आम तौर पर लड़ाई ही मिलती है, इसके बाद ही वह आगे बढ़ पाता है। और यह सिलसिला चलता रहता है; हर व्यक्ति को वही मिलता है, जिसका आह्वान वह मन की बेतार प्रणाली (टेलीग्राफ़ी) पर करता है।”

**विलियम वॉकर ऐटकिन्सन (1862-1932 )**

थॉट वाइब्रेशन

## दिन 267

---

**अप** अपनी कार को ईंधन से भरा रखने में सावधान रहते हैं। क्या आप खुद को अच्छे विचारों और अच्छी भावनाओं से भरा रखने में भी इतने ही सावधान रहते हैं?

जब आपके पास सही ईंधन हो और वह पर्याप्त हो, तभी आप जीवन में अपनी मनचाही दिशा में जा सकते हैं।

## दिन 268

---

**अ**पको हर दिन सृष्टि से हज़ारों संदेश मिल रहे हैं। सृष्टि के इस संप्रेषण के बारे में जागरूक बनना सीखें, जो हर पल आपसे बात कर रही है और आपका मार्गदर्शन कर रही है। यहाँ कोई दुर्घटनाएँ नहीं होतीं; कोई संयोग नहीं होते। हर विज्ञापन जिस पर आप गौर करते हैं, हर शब्द जिसे आप सुनते हैं, हर रंग, हर गंध, हर ध्वनि, हर घटना और स्थिति के ज़रिये सृष्टि आपसे बात कर रही है और आप ही अकेले ऐसे व्यक्ति हैं, जो अपने लिए उसकी प्रासंगिकता जानते हैं और यह जानते हैं कि संप्रेषण में क्या कहा जा रहा है।

देखने के लिए अपनी आँखों का इस्तेमाल करें! सुनने के लिए अपने कानों का इस्तेमाल करें! अपनी सभी इंद्रियों का इस्तेमाल करें, क्योंकि उन सभी के ज़रिये आपको संदेश मिल रहा है!

## दिन 269

---

**या**द रखने को याद रखने का मतलब है जागरूक बनने को याद रखना। इसी पल, अभी जागरूक बनने की याद रखें। जागरूक बनना अपने आसपास की हर चीज़ को देखना है, अपने आसपास की हर चीज़ को सुनना है, अपने आसपास की हर चीज़ को महसूस करना है और उस पर पूरा ध्यान केंद्रित करना है, जो आप इस वक्त कर रहे हैं।

आम तौर पर लोग अनचाही चीजों को अपनी ओर ले आते हैं, क्योंकि वे जागरूक नहीं होते हैं कि वे अतीत और भविष्य के बारे में अपने दिमाग़ के विचार सुन रहे हैं। वे तो इस बारे में भी जागरूक नहीं हैं कि इन विचारों से वे सम्मोहित हो रहे हैं और इस वजह से अपना जीवन अचेतन रूप से जी रहे हैं।

जब आप जागरूक बनने की याद रखते हैं, तो आप तुरंत जागरूक बन जाते हैं। आपको तो बस याद रखने की याद रखना है!

## दिन 270

---

**कि**सी चीज़ की इच्छा करना नियम के सही तालमेल में है। आप उसे ही आकर्षित करते हैं, जिसकी इच्छा करते हैं। किसी चीज़ की ज़रूरत होना नियम का दुरुपयोग है। आप उसे आकर्षित नहीं कर सकते, जिसकी आपको ज़रूरत है। अगर आप महसूस करते हैं कि आपको इसकी तुरंत या बुरी तरह से ज़रूरत है, तो इसमें डर जुड़ा होता है। इस तरह की “ज़रूरत” चीज़ों को दूर रखती है।

हर चीज़ की इच्छा करें। ज़रूरत किसी चीज़ की न रखें।

## दिन 271

---

### सृजन करने के लिए:

क़दम 1 - माँगें। इसका मतलब है कि आप पूरी तरह सोच-विचार कर यह स्पष्ट कर लेते हैं कि आप क्या चाहते हैं। अपनी मनचाही चीज़ को माँगते वक्त यह याद रखें कि यह पहले से आध्यात्मिक जगत में मौजूद है। माँग करना सृजन का सक्रिय क़दम है।

क़दम 2 - विश्वास करें। इसका मतलब है कि आपके मन में यह विश्वास होना चाहिए कि आपने जिसे माँगा है, वह तुरंत आपका हो चुका है। आपका विश्वास आपकी इच्छा को एक माध्यम देता है, जिससे यह आध्यात्मिक से भौतिक जगत में आती है। विश्वास करना सृजन का निष्क्रिय क़दम है।

क़दम 3 - पाएँ। अगर आप यक़ीन करते हैं कि आपको पहले ही मिल चुका है, तो आपको मिल जाएगा। पाना सृजन का तीसरा क़दम है और यह सक्रिय व निष्क्रिय को मिलाने का परिणाम है, जिससे आदर्श सृजन होता है।

सृजन किसी बैटरी जैसा होता है। बैटरी का पॉज़िटिव सिरा सक्रिय है और निगेटिव सिरा निष्क्रिय है। दोनों को आदर्श तरीके से जोड़ दें और आपके पास शक्ति आ जाती है।

## दिन 272

---

**अ**नंद अस्तित्व की एक अवस्था है और यह आपके भीतर से आता है। आकर्षण के नियम के अनुसार आपको पहले भीतर से वह बनना होता है, जो आप बाहर चाहते हैं।

आप या तो इस वक्त आनंदित होने का चुनाव कर रहे हैं या फिर आनंदित न होने का चुनाव करने के बहाने बना रहे हैं। लेकिन नियम के सामने कोई बहाने नहीं चलते हैं!

## दिन 273

---

“हमें बुद्धिमत्ता अथवा विवेक कहीं से प्राप्त नहीं होते हैं; हमें एक समय के बाद इन्हें खुद खोजना होता है, जिसे कोई दूसरा हमारी खातिर नहीं कर सकता या हमें नहीं दे सकता।”

**मार्सेल प्रूस्त**(1871-1922 )

इन सर्च ऑफ़ लॉस्ट टाइम

## दिन 274

---

हम अपने भविष्य की हर चीज़ देखने में सक्षम नहीं होते हैं, लेकिन सृष्टि की सर्वोच्च शक्ति हर संभावना को देख सकती है। संबंधों के संदर्भ में आपको यह लग सकता है कि आपके लिए हर चीज़ सही है, जबकि हो सकता है कि हक्कीकत में ऐसा न हो। आप किसी खास व्यक्ति के साथ सद्वावपूर्ण, सुखद, प्रेमपूर्ण संबंध की माँग कर सकते हैं, लेकिन अगर सृष्टि यह देखती है कि उस व्यक्ति के साथ आप सुखद संबंध क्लायम नहीं रख पाएँगे, तो सृष्टि उसे आपके पास नहीं लाएगी।

सद्वावपूर्ण, सुखद, प्रेमपूर्ण संबंध की माँग करें और फिर सृष्टि को अवसर दें कि वह आपके आदर्श साझेदार को आप तक पहुँचाए - चाहे वह जो भी हो।

## दिन 275

---

चुनौतीपूर्ण स्थितियों के ज़रिये सबसे तेज़ी से अपने विचारों और भावनाओं का स्वामी बना जा सकता है। अगर आपका जीवन सुचारू ढंग से चल रहा है, तो ऐसे अवसर नहीं मिलते हैं, जो आपकी शक्ति को मज़बूत बनाएँ या आपको अपने विचारों और भावनाओं का स्वामी बनने में सक्षम बनाएँ।

चुनौतियों में भी सुंदर अवसर छिपे होते हैं।

## दिन 276

---

**ज**ब आप अपनी भावनाओं और विचारों के गुलाम नहीं रह जाते - जब कोई भी विचार आपकी सहमति के बिना आप पर हावी नहीं हो पाता - तो समझ लीजिए कि आप अपने जीवन के स्वामी बन चुके हैं। बाहरी संसार में आपके पूरे जीवन का कायाकल्प हो जाएगा। आप नियम के, स्वयं के और अपने जीवन के स्वामी बन जाएँगे।

## दिन 277

---

**मा**नसिक चित्रण के ज़रिये अच्छाई की शक्ति का इस्तेमाल करने के लिए हर साँस के साथ यह कल्पना करें कि आप शुद्ध, श्वेत, दैदीप्यमान ऊर्जा में साँस ले रहे हैं। कल्पना करें कि आपका शरीर इस सुंदर, शुद्ध, ज्वलंत ऊर्जा से भर रहा है। देखें कि यह ऊर्जा आपके शरीर की हर कोशिका को रोशन कर रही है, जब तक कि आपका पूरा अंदरूनी और बाहरी शरीर किसी चमकते सितारे जैसा चमकदार व प्रकाशमान नहीं हो जाता।

## दिन 278

---

हम सृष्टि के सटीक लघु रूप (या संक्षिप्त संस्करण) हैं और जब हम खुद को जान लेते हैं, तो पूरी सृष्टि को जान लेते हैं।

प्लेटो ने कहा था, “स्वयं को जानिए।”

## दिन 279

---

**स**बसे सुंदर बात यह है कि हर दिन, हर स्थिति में हम यह देख सकते हैं कि हम जीवन में कैसा प्रदर्शन कर रहे हैं। हमारा संसार और हमारा जीवन, ऊर्जा के क्षेत्र में हमें लगातार फ़िडबैक दे रहे हैं। जब हम ऊर्जा (अच्छे विचारों और भावनाओं के ज़रिये) का एक नया क्षेत्र बनाने लगते हैं, तो हमारे आसपास होने वाले परिवर्तन चमत्कार से कम नहीं होते।

यह प्रयास अवश्य करने लायक है, क्योंकि सृष्टि के सामंजस्य में जीने से ज़्यादा बड़ी कोई दूसरी बात नहीं है।

## दिन 280

---

“ज़्यादातर लोग अपने संभावित अस्तित्व के बहुत सीमित दायरे में जीते हैं, चाहे यह शारीरिक हो, बौद्धिक हो या नैतिक। वे आम तौर पर अपनी चेतना और आत्मा की शक्तियों के बहुत ही छोटे हिस्से का इस्तेमाल करते हैं, काफ़ी कुछ उस व्यक्ति की तरह, जो अपने पूरे शरीर में सिर्फ़ छोटी अँगुली का इस्तेमाल करने और हिलाने की आदत रखता हो। आपातकालीन स्थितियाँ और संकट हमें दिखाते हैं कि हमारी अत्यंत महत्वपूर्ण शक्तियाँ हमारे अनुमान से कितनी ज़्यादा बड़ी होती हैं।”

**विलियम जेम्स**(1842-1910 )

## दिन 281

---

“वर्तमान” में ही आपकी सारी शक्ति विद्यमान है। इसका कारण यह है कि “वर्तमान” ही एकमात्र समय है, जब आप किसी नए विचार को सोच सकते हैं और नई भावनाएँ महसूस कर सकते हैं। हम वर्तमान से तीस सेकंड बाद का नहीं सोच सकते या दो घंटे पहले की घटना को महसूस नहीं कर सकते। हम केवल वर्तमान में ही सोच सकते हैं। वर्तमान में ही महसूस कर सकते हैं। इसलिए यह पल ही शक्ति का आपका सबसे बड़ा बिंदु है।

आपका बाकी जीवन आपका इंतज़ार कर रहा है!

## दिन 282

---

**कि** सी देश में परिवर्तन एक व्यक्ति से शुरू होता है। हर देश अपनी सामूहिक आबादी की आंतरिक शांति या अशांति का प्रतिबिंब होता है, इसलिए जब एक व्यक्ति बदलता है, तो वह बाकी आबादी को प्रभावित करता है। एक व्यक्ति के भीतर इतनी शक्ति होती है कि वह अपने भीतर के अपार प्रेम और शांति के ज़रिये देश में भारी परिवर्तन ले आए। लेकिन आप अपने देश में शांति और कल्याण तब तक नहीं ला सकते, जब तक कि उन्हें जीत न लें। क्या आप यह देख सकते हैं? आप वह दे ही नहीं सकते, जो आपके पास नहीं है।

हर व्यक्ति का काम अपने जीवन में पूर्ण सद्ग्राव और सामंजस्य लाना है; फिर वे अपने देश और संसार के लिए सबसे बड़ा मानवीय उपहार बन जाएँगे।

## दिन 283

---

**कोई** भी व्यक्ति गरीबी का जीवन जीने के लिए अभिशप्त नहीं है, क्योंकि हममें से प्रत्येक व्यक्ति में इस जीवन की हर चीज़ को बदलने की क्षमियत है। आकर्षण का नियम सृजन का नियम है और यह हर व्यक्ति को अपने मनचाहे जीवन का सृजन करने की अनुमति देता है। हर व्यक्ति को अपनी परिस्थितियों पर विजय पानी होती है, लेकिन उसके पास कोई भी चीज़ हासिल करने और हर चीज़ बदलने का अवसर होता है।

## दिन 284

---

**H**विष्य हमारे अतीत के विचारों, शब्दों और कार्यों से बनता है। यह उन बीजों की फ़सल है, जो हमने अतीत में बोए हैं, चाहे वे बीज अच्छे हों या बुरे। हर क्रायम रखा गया विचार, हर बोला गया शब्द और हर किया गया कार्य एक बीज है, जिसकी फ़सल हम भविष्य में काटेंगे।

सुंदर भविष्य का सृजन करने के लिए अपने अधिकाधिक विचारों को अच्छा बनाएँ, अच्छे और दयालुतापूर्ण शब्द बोलें तथा यह सुनिश्चित करें कि आपके कार्य अच्छे हों।

आपका भविष्य इसी पर निर्भर करता है।

## दिन 285

---

**अप** अपने जीवन में जो चाहते हैं, उसे आकर्षित करने के लिए आपको यह समझने की कोशिश नहीं करना है कि यह **कैसे** होगा। आपका काम सृष्टि से मँगना है, परिणाम पर ध्यान केंद्रित करना है, कल्पना करना है कि वह आपके पास है, यक्तीन करना है कि वह आपके पास है, जानना है कि वह आपके पास है और धन्यवाद देना है कि वह इसी समय आपके पास है।

अपनी इच्छा की तीव्रता बढ़ाकर अपना काम पूरा करें। फिर सृष्टि को अपना काम करने दें और उस इच्छा को आपकी ओर लाने दें।

## दिन 286

---

**ज**ब आप अपने अस्तित्व की शक्ति, प्रेम और आनंद में जीते हैं, तो करोड़ों लोगों का उत्थान करते हैं।

स्वयं के मार्ग पर चलें। स्वयं के सत्य पर चलें। स्वयं के हृदय का अनुकरण करें। अपने आंतरिक आनंद का अनुसरण करें और सभी को ऐसा ही करने दें, चाहे वह जो भी हो। हर व्यक्ति और हर वस्तु में अच्छाई खोजें। हर दिन संसार के प्रति अपने प्रेम व आनंद को प्रसारित होने दें।

## दिन 287

---

“कृतज्ञता न सिर्फ़ सबसे महान सद्गुण है, बल्कि यह बाकी सब सद्गुणों का जनक भी है।”

**मार्क्स टुलियस किकरो** (106-43 ईपू)

## दिन 288

---

पृथ्वी की वर्तमान दशा मानव जाति के सामूहिक मन का मात्र आईना है। आप हमारी पृथ्वी पर जो सद्ग्राव का अभाव देखते हैं, वह इंसानों के भीतर सद्ग्राव के अभाव का प्रतिबिंब है। हमारी पृथ्वी और मानव जाति के बीच की कड़ी एक ऐसा संबंध है, जिसे तोड़ा नहीं जा सकता। जब हर इंसान अंदर से बदल जाएगा, तो संसार बदलेगा और हमारी पृथ्वी भी बदल जाएगी।

एक व्यक्ति से कई लोग प्रेरित होते हैं, वे कई लोग हज़ारों अन्य को प्रेरित करते हैं, हज़ारों लोग लाखों को प्रेरित करते हैं, लाखों करोड़ों को प्रेरित करते हैं, और इस तरह हम पृथ्वी पर सद्ग्राव ले आते हैं।

## दिन 289

---

द सीक्रेट (रहस्य) में दिए गए सिद्धांतों को जानना ही काफ़ी नहीं है - आपको हर दिन उनका पालन करना होगा, लगातार करना होगा। आपको उन सिद्धांतों के अनुरूप जीना होगा। क्रदम दर क्रदम आप अपने विचारों और भावनाओं तथा अपने जीवन के स्वामी बन जाएँगे।

इससे ज़्यादा महत्वपूर्ण कुछ नहीं है, क्योंकि आपका पूरा भावी जीवन आप पर ही निर्भर है।

## दिन 290

---

खुद से पूछें कि एक दिन में आप जितने नकारात्मक विचार सोच रहे हैं, क्या उससे ज़्यादा सकारात्मक विचार सोचते हैं। खुद से पूछें कि आप एक दिन में जितने नकारात्मक शब्द बोलते हैं, क्या उससे ज़्यादा अच्छाई, प्रशंसा, संवेदना, कृतज्ञता और प्रेम के शब्द बोलते हैं। खुद से पूछें कि क्या आप एक दिन में दूसरे कार्यों के बजाय अच्छाई, प्रशंसा, दयालुता, कृतज्ञता और प्रेम पर आधारित कार्य ज़्यादा करते हैं।

दिन में हर पल आपके सामने दो मार्ग रहते हैं। अच्छा यही रहेगा कि आप अच्छाई के मार्ग को चुनें।

## दिन 291

---

**य**दि कोई आपसे कोई नकारात्मक बात बोले, तो प्रतिक्रिया न करें। आपको खुद को ऐसे बिंदु तक लाना होता है, जहाँ आप शांत बने रह सकें, भले ही बाहर कितनी भी नकारात्मक चीज़ें क्यों न हो रही हों।

बाहर कैसी भी स्थिति हो, अगर आप उसके बावजूद अपने भीतर शांति और आनंद को बनाए रख सकें, तो इसका मतलब है कि आप हर चीज़ के स्वामी बन चुके हैं।

## दिन 292

---

**र**या यह जानना बेहतरीन नहीं है कि आप बाहर से अपने संसार को नियंत्रित नहीं कर सकते? बाहरी चीज़ों को नियंत्रित करने की कोशिश असंभव सी लगती है, क्योंकि इसमें बहुत मेहनत लगेगी और दरअसल आकर्षण के नियम के अनुसार यह असंभव है।

अपने संसार को बदलने के लिए आपको तो बस इतना करना है कि आप अपने अंदर के विचारों और भावनाओं का प्रबंधन करें; इससे आपका पूरा संसार बदल जाता है।

## दिन 293

---

**या**द रखें, अगर आप आलोचना कर रहे हैं, तो कृतज्ञ नहीं हो रहे हैं। अगर आप दोष दे रहे हैं, तो कृतज्ञ नहीं हो रहे हैं। अगर आप शिकायत कर रहे हैं, तो कृतज्ञ नहीं हो रहे हैं। अगर आप तनाव महसूस कर रहे हैं, तो कृतज्ञ नहीं हो रहे हैं। अगर आप हडबड़ी कर रहे हैं, तो कृतज्ञ नहीं हो रहे हैं। अगर आप खराब मूड में हैं, तो कृतज्ञ नहीं हो रहे हैं।

कृतज्ञता आपके जीवन का कायाकल्प कर सकती है। क्या आप छोटी-छोटी चीजों को अपने कायाकल्प और अपने उस उज्ज्वल भविष्य की राह में बाधा बनने की अनुमति दे रहे हैं जिसके आप हक्कदार हैं?

## दिन 294

---

“आप चाहे जो हों या चाहे आपके साथ कुछ भी हुआ हो, बस खुश रहें। खुश इसलिए रहें, क्योंकि आप यहाँ पर हैं। आप यहाँ एक सुंदर संसार में हैं; और जो भी सुंदर है, वह इस संसार में पाया जा सकता है... बस खुश रहें और इस तरह आप हमेशा खुश रहेंगे। आपके पास खुश रहने का हमेशा बेहतर कारण होगा। आपके पास खुश करने वाली ज़्यादा से ज़्यादा चीजें होंगी। क्योंकि धूप, खास तौर पर इंसानी धूप, की शक्ति बहुत बड़ी है। यह किसी भी चीज़ को बदल सकती है, उसका कायाकल्प कर सकती है, दोबारा बना सकती है और उसे अपनी तरह सुंदर बना सकती है। बस खुश रहें और इसी से आपकी तक़दीर बदल जाएगी, एक नई ज़िंदगी शुरू हो जाएगी और आपके लिए एक नए भविष्य की भोर हो जाएगी।”

**क्रिश्मियन डी. लार्सन** (1874-1954 )

जस्ट बी ग्लैड

## दिन 295

---

**कृ**तज्ञता आपके जीवन का कायाकल्प करने के सबसे आसान और शक्तिशाली तरीकों में से है। अगर आप वाक्रई कृतज्ञ बन जाते हैं, तो चाहे कहीं भी जाएँ और जो भी करें, अपनी ज़रूरत की हर चीज़ को चुंबक की तरह आकर्षित कर लेंगे। वास्तव में, कृतज्ञता के बिना कोई भी चीज़ कभी नहीं बदल सकती। आपका जीवन उसी हृद तक बदलेगा, जिस हृद तक आप कृतज्ञ महसूस करना शुरू करते हैं और कृतज्ञता का इस्तेमाल करते हैं। अगर आप बस थोड़े ही कृतज्ञ हैं, तो आपका जीवन भी थोड़ा सा बदलेगा। अगर आप बहुत कृतज्ञ हैं, तो आपका जीवन ज़्यादा बदलेगा। यह आप पर ही निर्भर है।

## दिन 296

---

**ज़**यादातर समय आनंदित और खुश रहना संभव है। आप तो बस छोटे बच्चों और उनके नैसर्गिक आनंद को देखें। आप कह सकते हैं कि छोटे बच्चे स्वतंत्र होते हैं और उन्हें कोई चिंता नहीं होती, लेकिन आप भी तो स्वतंत्र हैं! आप चिंता को चुनने या आनंद को चुनने के लिए स्वतंत्र हैं और आप जो भी चुनते हैं, वही आपकी ओर आकर्षित होगा। चिंता अधिक चिंता को आकर्षित करती है। आनंद भी अधिक आनंद को आकर्षित करता है।

## दिन 297

---

**मा**ता-पिता सकारात्मक बनने में अपने बच्चों की मदद कर सकते हैं और इसका सबसे शक्तिशाली तरीक़ा यह है कि वे स्वयं सकारात्मकता और प्रेम की ज़िंदा मिसाल बन जाएँ। जब अभिभावक इन गुणों पर अपना ध्यान केंद्रित करते हैं, तो उनके बच्चे भी उनकी सारी सकारात्मकता को ग्रहण कर लेंगे।

जब हम ज़्यादा से ज़्यादा सकारात्मक बनते हैं और ज़्यादा से ज़्यादा आनंदमय बनते हैं, तो अपनी शक्तिशाली मिसाल से अपने आसपास के सभी लोगों को ऊपर उठा देते हैं।

## दिन 298

---

**अ**च्छी चीजें नकारात्मक आवृत्ति पर नहीं रहती हैं। खुद को सकारात्मक स्थिति में ले आएँ, क्योंकि आपको अपनी इच्छित चीजें वहीं मिलेंगी। ऐसा करने के लिए अपने जीवन की हर चीज़ को एक **नई नज़र** से देखें: कृतज्ञ नज़र से, सकारात्मक नज़र से और उस नज़र से जो सिफ़्र अच्छाई देखती है।

अपनी दृष्टि को बेहतर बनाएँ और स्पष्ट रूप से देखना शुरू करें। जीवन भव्य और सुंदर है।

## दिन 299

---

**दि**न में बार-बार यह देखना याद रखें कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं। अपने शरीर के अहसास की जाँच करते रहें और यह सुनिश्चित करें कि आपका शरीर तनावमुक्त हो। अगर आपको कोई तनाव नज़र आए, तो उसे मुक्त करने और पूरे शरीर को शिथिल करने पर एक मिनट तक ध्यान केंद्रित कर लें। अपने शरीर और मन में शांति की भावना महसूस करना ही आपका लक्ष्य है, क्योंकि यह स्थिति आपको सृष्टि के साथ सामंजस्य में ले आएगी।

## दिन 300

---

**ठ**या आपने आज के दिन के लिए अपना इरादा तय कर लिया है या आज भी बीते हुए कल के विचारों से ही संचालित होने वाले हैं? ये शब्द शुरुआत करने में आपकी मदद करेंगे:

आज सारी अच्छाई मेरी ओर आ रही है।  
आज मेरी सारी इच्छाएँ पूरी होंगी।  
आज जादू और चमत्कार हर जगह मेरे पीछे-पीछे चलेंगे।

आपका आज का जीवन सर्वश्रेष्ठ हो!

## दिन 301

---

“मनुष्य अपने भाग्य के कैदी नहीं,  
वे तो केवल अपने मन के कैदी हैं।”

**फ्रैंकलिन डी. स्ट्रजवर्ल्ट** (1882-1945 )

## दिन 302

---

**ज**ब कोई परिवार स्वप्न बोर्ड बनाता है, तो यह महत्वपूर्ण है कि उसे बनाने में शामिल परिवार का हर सदस्य इसमें सम्मिलित होना चाहता हो। यह काम हर व्यक्ति के लिए आनंददायक होना चाहिए। फिर परिवार का हर सदस्य बगैर किसी सीमा या बंधन के यह चुन सकता है कि वह बोर्ड पर क्या लगाना चाहता है। चित्र, कटआउट और शब्द - सभी बहुत अच्छे हैं। जो लोग सबसे ज़्यादा रोमांचित होंगे, वे अपने आप हर दिन बोर्ड पर ध्यान केंद्रित करेंगे और वही बोर्ड पर लगाई चीज़ों को अपने जीवन में साकार करेंगे। जितनी ज़्यादा ऊर्जा दी जाएगी, चीज़ें उतनी ही ज़्यादा जल्दी साकार होंगी।  
रोमांच और जोश से प्रज्वलित हृदय में बड़ी चुंबकीय शक्ति होती है।

## दिन 303

---

हम इतने बुद्धिमान होते हैं कि जब हमारी पुरानी कार अपने उद्देश्य को पूरा नहीं कर पाती है, तो उसकी जगह नई कार ले आते हैं। हम पुरानी कार लौटा देते हैं, नया मॉडल ले आते हैं और अपनी नई कार में यात्रा जारी रखते हैं।

आपके भीतर भी कुछ इतना बुद्धिमान होता है कि जब आपका वाहन यानी शरीर अपने उद्देश्य को पूरा नहीं करता है, तो यह उसे बदल देता है, एक नए, बेहतर मॉडल को ले आता है और नए वाहन में आपकी यात्रा को जारी रखता है। इंसान का शरीर और कार वाहन हैं - और आप अनंत काल तक ड्राइवर हैं।

ऊर्जा का निर्माण या विध्वंस नहीं किया जा सकता - यह तो बस स्वरूप बदलती है।

## दिन 304

---

**अ**पने जीवन की सारी अच्छी चीज़ों के बारे में सोचें। और अब यह अहसास करें कि आप ही उन सबको अपने जीवन में लाए हैं। आपके विचारों और भावनाओं ने ही उन तमाम अच्छाइयों को आपकी ओर लाने के लिए सृष्टि की ऊर्जाओं को प्रेरित किया था।

आप बहुत शक्तिशाली प्राणी हैं।

## दिन 305

---

**कि**सी को बदलने की कोशिश करना समय की बर्बादी है। किसी को बदलने का विचार यह कहना है कि वे अभी जैसे हैं, उस रूप में बहुत अच्छे या योग्य नहीं हैं। यह कथन आलोचना और नापसंदगी में डूबा होता है। यह सराहना या प्रेम का विचार नहीं है। इस तरह के विचार आपको और उस व्यक्ति के बीच दूरी बढ़ा देंगे।

आपको लोगों में अच्छाई की तलाश करनी होगी, ताकि यह और बढ़े। जब आप किसी व्यक्ति में सिर्फ अच्छाइयों की ही तलाश करेंगे, तो आपके सामने जो उजागर होगा, उसे देखकर आप हैरान रह जाएँगे।

## दिन 306

---

**अ**प अपनी आवृत्ति तरंगों के लिए खुद ज़िम्मेदार हैं, क्योंकि यह आपके विचारों, शब्दों, भावनाओं और कार्यों से तय होती है। जब आप प्रेम, करुणा और अच्छाई के ज़्यादा ऊँचे विचार सोचते हैं, बोलते हैं और उन पर आधारित कार्य करते हैं, तो आपकी आवृत्ति और भी ऊँची हो जाती है। जीवन में आपका सर्वोच्च काम अपनी आवृत्ति को ऊपर उठाते रहना है। यह हर चीज़ का अंतिम निष्कर्ष है, क्योंकि आपके जीवन में हर चीज़ उसी आवृत्ति की बदौलत आती है, जिस पर आप हैं। हर चीज़!

## दिन 307

---

“कोई भी चीज अच्छी या बुरी नहीं होती,  
सिर्फ सोच ही उसे ऐसा बना देती है।”

**विलियम शेक्सपियर**(1564-1616 )

हैमलेट

## दिन 308

---

**प**हले यह पता लगाएँ कि आप वास्तव में क्या चाहते हैं। फिर कल्पना करें और यह नाटक करें कि आपकी मनचाही चीज़ पहले से आपके पास है। जब आप यह नाटक कर रहे हैं या मान रहे हैं कि आपके पास अपनी मनचाही चीज़ है, तो अपनी भावनाओं पर ध्यान दें। जब बच्चे खेल रचते हैं, तो उनकी कल्पना इतनी शक्तिशाली होती है कि वे अपने-आप अपनी भावनाओं से जुड़ जाते हैं। छोटे बच्चों को खेलते हुए देखें और आप सृष्टि के इस नियम का अधिकतम लाभ लेना सीख जाएँगे।

## दिन 309

---

या दरखें, आकर्षण का नियम यह नहीं जानता है कि आप नाटक रच रहे हैं या कोई चीज़ वास्तव में है, इसलिए नाटक करते वक्त आपको इसे वास्तविक महसूस करना होता है। जब आपका नाटक वास्तविक महसूस होने लगे, तो आप जान जाएँगे कि आप अपनी मनचाही चीज़ को वास्तविक बनाने में सफल हो रहे हैं।

## दिन 310

---

**जी** वन को ज्यादा खुशहाल बनाने वाली चीज़ों को आकर्षित करने के लिए आपको खुशी का चुंबक बनना होता है। खुशी ही खुशी को आकर्षित करती है। खुशी का चुंबक बनने के लिए खुशी महसूस करने, खुशनुमा विचार सोचने और दूसरों के लिए खुशी-खुशी काम करने की आवश्यकता होती है। अगर आप खुद को गहरी खुशी से भरना चाहते हैं, तो हर वह चीज़ करें, जिससे दूसरों को खुशी दे सकें।

## दिन 311

---

**अप** जिस भी चीज़ का प्रतिरोध करते हैं, वह क्रायम रहेगी। इसका मतलब है कि आप जिसे शिद्धत से नहीं चाहते हैं, उसे अपनी ओर आमंत्रित कर रहे हैं। इसके बजाय अपनी जोशीली भावनाओं की शक्ति उसमें लगाएँ जिसे आप चाहते हैं और उन्हें अपनी ओर लाएँ।

ध्यान केंद्रित करने का मतलब है सृजन या निर्माण करना। भावपूर्ण ध्यान केंद्रित करना शक्तिशाली सृजन है।

## दिन 312

---

**जूँ**यादातर लोगों को यह अहसास नहीं होता कि वे अपनी अनचाही चीजों में कितनी अधिक ऊर्जा लगा देते हैं। जब आप किसी मित्र से बात करते समय किसी “खराब” स्थिति का वर्णन करते हैं, तो आप अपनी प्रबल ऊर्जा उस चीज़ में लगा रहे हैं, जिसे आप नहीं चाहते हैं। जब आप किसी घटना पर नकारात्मक तरीके से प्रतिक्रिया करते हैं और कहते हैं कि यह “भयानक” है, तो आप अपनी शक्ति अनचाही चीज़ में लगा रहे हैं।

आप सुंदर व जोशीले इंसान हैं, इसलिए यह सुनिश्चित करें कि आप अपने भावावेग का समझदारी से प्रयोग करें।

## दिन 313

---

**अप** आकर्षण के नियम के साथ भागीदारी में हैं और इस साझेदारी के ज़रिये ही अपने जीवन का सृजन कर रहे हैं। हर व्यक्ति आकर्षण के नियम के साथ भागीदारी में है और स्वयं के जीवन का सृजन कर रहा है। इसका मतलब है कि आप किसी दूसरे की स्वतंत्र इच्छा के खिलाफ़ नियम का इस्तेमाल नहीं कर सकते। अगर आप कोशिश करते हैं, तो आपको इस बात का खतरा होता है कि आपकी स्वतंत्रता भी आपसे छिन जाएगी।

## दिन 314

---

**अ**प किसी दूसरे की स्वतंत्र इच्छा के खिलाफ़ आकर्षण के नियम का इस्तेमाल नहीं कर सकते। अगर आप इस बारे में गहराई से विचार करें, खास तौर पर प्रेम संबंधों के बारे में, तो केवल एक ही निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं: ईश्वर का शुक्र है कि यह नियम इस तरह से काम करता है। अगर ऐसा नहीं होता, तो कोई दूसरा आपको अपने जीवन का प्रेम बनाने का निर्णय ले सकता था और आप पर इस नियम का इस्तेमाल कर सकता था। वे ऐसा नहीं कर सकते और आप भी नहीं कर सकते।

## दिन 315

---

हर सकारात्मक विचार जिसका आप चिन्तन करते हैं, हर अच्छा शब्द जो आप बोलते हैं, हर अच्छा भाव जो आप महसूस करते हैं और हर अच्छा कार्य जो आप करते हैं, वह आपके अस्तित्व को नई ऊँचाइयों तक ऊपर उठा रहा है। और जब आप अपने स्तर को बढ़ाना शुरू करते हैं, तो खुद-ब-खुद एक नया जीवन और संसार आपके सामने उजागर हो जाएगा। आप ऊर्जा की सकारात्मक शक्तियाँ पूरी पृथ्वी पर भेजेंगे, जो इस पर रहने वाले हर जीवित प्राणी तक पहुँचेंगी।

आप अपना स्तर ऊपर उठा लेंगे। और जब आप खुद को ऊपर उठा लेते हैं, तो पूरे संसार को ऊपर उठा देते हैं।

## दिन 316

---

हम विकासशील मानव हैं और जैसे-जैसे हम विकास करते हैं, हमारी आवृत्ति भी बदलती है। दो लोगों के बीच संबंध खत्म होना इसी का परिणाम होता है, क्योंकि अब वे दोनों एक ही आवृत्ति पर नहीं हैं। जब लोगों की आवृत्तियाँ समान नहीं रह जाती हैं, तो आकर्षण का नियम अपने आप प्रतिक्रिया करके उन्हें अलग कर देता है। आवृत्ति का परिवर्तन विकास है, विकास जीवन है और जीवन अच्छा है।

## दिन 317

---

**ज**ब आप सुबह पर्दे खोलते हैं और जब रात को उन्हें बंद करते हैं, तो आप क्या सोचते हैं? जब आप सुबह पहली बार जूते पहनते हैं और जब शाम को उन्हें उतारते हैं, तो आप क्या सोचते हैं? रोजमर्रा की इन चार गतिविधियों के दौरान सृष्टि की शक्ति का इस्तेमाल करें और अपने पूरे दिल से कहें:

“सबसे बेहतरीन दिन के लिए धन्यवाद!”

## दिन 318

---

**अ**प चाहे जहाँ जाएँ, सकारात्मक शक्तियों को अपने पहले भेज सकते हैं, लेकिन इसके लिए आपको भविष्य में सोचना होता है। कोई भी चीज़ करने से पहले आगे की सोचें। उस गतिविधि के पूर्ण होने पर खुद को खुशहाल देखें और इसे बिना कोशिश के पूरा होते देखें। अब आप आगे बढ़ सकते हैं।

सकारात्मक शक्तियाँ आपके इशारे पर आ जाती हैं - लेकिन आपको उन्हें अपने जीवन में बुलाना होता है।

## दिन 319

---

**अप्य** जो चाहते हैं, उसे करने का मन बना लें! अगर आप नकारात्मक विचारों को दूर हटाने और अपने जीवन को बदलने को लेकर सचमुच गंभीर हैं, तो आपकी मदद के लिए यहाँ एक आसान प्रक्रिया बताई जा रही है। बिना किसी अपवाद के हर दिन सौ चीज़ें लिखें, जिनके लिए आप कृतज्ञ हैं। ऐसा करके आप अपने मन की बागडोर अपने हाथों में थाम रहे हैं और इसे अच्छे विचार सोचने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। अगर आप हर दिन ऐसा करेंगे, तो अपने विचारों को नियंत्रित करने में कामयाब हो जाएँगे।

अपने विचारों को नियंत्रित करने का संकल्प लें। जब आप अपने मन का नियंत्रण हासिल कर लेते हैं, तो स्वयं अपने स्वामी बन जाते हैं।

## दिन 320

---

**ज**ब भी आप कार में कहीं जाते हैं, तो कुछ सेकंड का समय निकाल कर खुद को अपनी मंज़िल पर खुश और अच्छी तरह पहुँचते देखें। चाहे आप कोई भी यात्रा कर रहे हों या यातायात के किसी भी साधन का इस्तेमाल कर रहे हों, अपने इरादे के ज़रिये सृष्टि की शक्ति का इस्तेमाल करें और एक सुंदर, सुरक्षित यात्रा का सुजन करें।

## दिन 321

---

**सु**जन की प्रक्रिया बहुत आसान है और अगर आपको यह मुश्किल लग रही है, तो ऐसा सिफ़्र इसलिए है क्योंकि आप विश्वास नहीं कर रहे हैं। याद रहे, किसी चीज़ को देखने के लिए आपको उस पर विश्वास करना होता है! और यह पेचीदा हो सकता है, खास तौर पर तब, जब आपने अपने जीवन में अधिकतर चीज़ों को देखने के बाद ही उन पर विश्वास किया हो। आपको अपने मन को दोबारा प्रशिक्षित करने की ज़रूरत है। आपको अनदेखे में विश्वास करना होता है और यह विश्वास ही वह मार्ग है, जिसके ज़रिये न दिखने वाली चीज़ें साकार होती हैं।

## दिन 322

---

“आनंद चीजों में नहीं हैं; वह तो हममें है।”

विलहेम रिचर्ड वैगनर (1813-1883)

## दिन 323

---

**बच्चों** के साथ स्वप्न बोर्ड बनाएँ और उन्हें मानसिक चित्रण का खेल खेलना सिखाएँ। उन्हें बताएँ कि उन्हें यह खेल रचना है कि जो चीज़ वे बोर्ड पर लगाते हैं, वह उनके पास पहले से है। बच्चों की कल्पनाशीलता इतनी अद्भुत होती है कि नाटक करना उनकी आदत में शामिल होता है और वे आपके लिए ज़बर्दस्त प्रेरणा बन जाएँगे।

“छोटे बच्चों जैसे बनें और खेल रचें,” ये सच्चे शब्द आज से दो हज़ार साल पहले बोले गए थे।

## दिन 324

---

**अ**गर आप नकारात्मक आवृत्ति पर नहीं हैं, तो कोई भी अपने नकारात्मक विचारों से आपको प्रभावित नहीं कर सकता। आप अपने विचारों और भावनाओं के ज़रिये अपनी आवृत्ति खुद तय करते हैं। आप जितना बेहतर महसूस करते हैं, उतनी ही ज़्यादा ऊँची आवृत्ति पर होते हैं और उतने ही ज़्यादा ऊँचे विचारों तक आपकी पहुँच होती है। वहाँ दूसरों के नकारात्मक विचार आप तक नहीं पहुँच सकते।

## दिन 325

---

**वि**श्वास करने में माहिर बनने के लिए आपको बस अपने विचारों, शब्दों और कार्यों को “विश्वास न करने” से विश्वास करने की ओर झुकाना है। आप जो चाहते हैं, उसे साकार करने की राह में जो **एकमात्र** चीज़ आड़े आ सकती है, वह है विश्वास करने के बजाए “विश्वास नहीं करना” के ज़्यादा विचार होना, “विश्वास न करने” के ज़्यादा शब्द बोलना, और “विश्वास न करने” के ज़्यादा कार्य करना।

अपने ज़्यादातर विचारों, शब्दों और कार्यों में विश्वास करने का विकल्प चुनें; आकर्षण के नियम को आपका आदेश मानना ही होगा।

## दिन 326

---

“आप किसी से पैसों में जितना मूल्य लेते हैं, उपयोगिता में हर व्यक्ति को उससे ज़्यादा मूल्य लौटाएँ।”

**वॉलेस वैट्ल्स**(1860-1911 )

द साइंस ऑफ़ गेटिंग रिच

**Y**ह बात याद रखें और कभी भी किसी से तब तक पैसा न लें, जब तक कि आप बदले में उपयोगिता का उससे ज़्यादा मूल्य न लौटा रहे हों। लोगों के जीवन में यह धन के अभाव, नौकरी के असफल अनुभवों और असफल कारोबारों के मुख्य कारणों में से एक है। आपको जितना धन मिल रहा है, उससे ज़्यादा मूल्य प्रदान करें - अपनी नौकरी में, अपने कारोबार में और अपने जीवन के हर क्षेत्र में।

## दिन 327

---

**Q**या आज आपने प्रकृति के प्रति कृतज्ञता महसूस की है?

अगर प्रकृति आपको लगातार नहीं दे रही होती, तो आप आज या एक भी दिन ज़िंदा ही नहीं रह पाते। प्रकृति आपको हवा का असीमित स्रोत दे रही है ताकि आप साँस ले सकें, यह पूरे ग्रह की आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त पानी उत्पन्न कर रही है ताकि आप जीवित रह सकें और सूर्य द्वारा दी गई जीवनदायी शक्तियों के बिना हममें से किसी का अस्तित्व संभव ही नहीं था।

यह शुद्ध दान है! कोई भी इस बात पर कैसे विश्वास कर सकता है कि उससे प्रेम नहीं किया जाता है?

## दिन 328

---

**ज**ब आप अपने जीवन में किसी चीज़ के खिलाफ़ अपना बचाव करते हैं, तो उसी चीज़ को ला रहे हैं जिसे आप नहीं चाहते हैं। बचाव करना समस्या पर ध्यान केंद्रित करना है। बचाव करने से बचाव करने की स्थितियाँ ज़्यादा आकर्षित होती हैं। इसके बजाय सृजनात्मक बनें और अपनी सारी ऊर्जा उस परिणाम पर केंद्रित करें, जिसे आप चाहते हैं। सृजन करना समाधानों पर ध्यान केंद्रित करना है।

रक्षात्मक नहीं, सृजनात्मक बनें। समस्याओं पर नहीं, समाधानों पर ध्यान केंद्रित करें।

## दिन 329

---

“मुझे विश्वास है कि जो व्यक्ति विचार-शक्ति का इस्तेमाल करना जानता है, वह खुद को जो चाहे बना सकता है।”

“मुझे विश्वास है कि मन सिर्फ़ शरीर को ही नियंत्रित नहीं करता है, बल्कि नकारात्मक की जगह सकारात्मक विचार रखकर इंसान माहौल, ‘भाग्य’ और परिस्थितियों को भी बदल सकता है। मैं जानता हूँ कि ‘मैं कर सकता हूँ और मैं करूँगा’ वाला नज़रिया इंसान को ऐसी सफलता की ओर आगे ले जाएगा, जो ‘मैं नहीं कर सकता’ के धरातल पर रहने वाले व्यक्ति को चमत्कारी दिखेगी।”

**विलियम वॉकर ऐटकिन्सन**(1862-1932 )

माय वर्किंग क्रीड

## दिन 330

---

**अ**पका जीवन सीखने की प्रक्रिया है - आप सिर्फ़ सीखकर ही ज़्यादा समझदार बन सकते हैं। कई बार हो सकता है कि कोई महत्वपूर्ण चीज़ सीखने के लिए आपको किसी दर्दनाक ग़लती को आकर्षित करने की ज़रूरत हो, लेकिन ग़लती के बाद आप ज़्यादा बुद्धिमान बन जाते हैं। बुद्धिमत्ता पैसे से नहीं खरीदी जा सकती - यह ज़िंदगी जीकर ही हासिल की जा सकती है। बुद्धिमत्ता के साथ शक्ति, साहस, ज्ञान और शांति भी आती है, जो बढ़ती जाती है।

## दिन 331

---

**अ**गर आपमें प्रेम नहीं होता, तो आप इंसान के रूप में जीवित ही नहीं रह सकते थे। अगर आप अपने चारों ओर लिपटी हुई सारी परतों को एक के बाद एक हटाते जाएँ, तो अंततः आप चेतना के शाश्वत प्रकाश तक पहुँच जाएँगे, जो विशुद्ध प्रेम से बना है।

आपकी जीवन यात्रा परतों को हटाने के बारे में है, जब तक कि आप अपने उस मूल केंद्र तक नहीं पहुँच जाते, जो पूर्ण रूप से प्रेम है।

## दिन 332

---

**चा**हे आप जो सोचें, आप हर दिन बेहतर से बेहतर बनते जा रहे हैं। कोई भी इंसान पीछे की तरफ़ नहीं जा सकता। आप सिफ़्र आगे और ऊपर की तरफ़ ही जा सकते हैं। जब आपको महसूस हो कि परिस्थितियाँ बेहतर नहीं हो रही हैं, तो खुद को याद दिलाएँ - कल आप जो थे, आज उससे कहीं ज़्यादा हैं।

## दिन 333

---

**ज**ब चुनौती सामने आने पर आपको लगे कि यह आपके जीवन में नकारात्मक परिवर्तन ला रही है, तो याद रखें कि जो भी होता है अंततः हमारे भले के लिए ही होता है। महत्वपूर्ण यह नहीं है कि क्या होता है; महत्वपूर्ण तो यह है कि हम उस अवसर के साथ क्या करते हैं और उसकी ओर किस नज़र से देखने का चुनाव करते हैं।

सृष्टि को अगर बेहतर और ज़्यादा अद्भुत चीज़ें प्रकट करनी हैं, तो इसे चीजों को आगे बढ़ाना होता है। इस बात को जानें कि यह परिवर्तन इसलिए हो रहा है, क्योंकि कोई बहुत अच्छी चीज़ आने वाली है!

## दिन 334

---

“मैं जो भी करने का निर्णय लेता हूँ, उसमें सफल होने में सक्षम हूँ।”

यह पूर्ण सत्य है, लेकिन मुद्दे की बात यह है कि क्या आपको इस पर विश्वास है?

## दिन 335

---

शुद्ध प्रेम की कोई शर्तें या सीमाएँ नहीं होतीं। प्रेम स्वयं को रोकता या पीछे नहीं रखता। प्रेम हमेशा सिफ़्र देता है और बदले में कुछ भी नहीं चाहता। प्रेम बगैर सीमा वाला सतत प्रवाह है। और यह सारा प्रेम आपके भीतर है।

## दिन 336

---

“चाहे मैं किसी भी स्थिति में रहूँ, खुशनुमा और प्रसन्न होने का संकल्प लेती हूँ; क्योंकि अनुभव से मैंने सीखा है कि हमारी खुशी या दुख का ज़्यादातर हिस्सा हमारी परिस्थितियों पर नहीं, बल्कि हमारे स्वभाव पर निर्भर करता है।”

**मार्था वॉशिंगटन**(1732-1802 )

## दिन 337

---

**य**ह निर्णय लें कि आज आप जिस भी व्यक्ति के संपर्क में आएँगे, उससे प्रशंसा की कम से कम एक बात अवश्य बोलेंगे। जितने ज़्यादा लोगों से मिलें, उतना ही बेहतर है। इस बात पर ग़ौर करें कि दिन की शुरुआत में आप कैसा महसूस कर रहे हैं, और फिर खास तौर पर ग़ौर करें कि दिन खत्म होने पर आप कितना बेहतर महसूस कर रहे हैं।

सप्ताह के किसी एक दिन को प्रशंसा दिवस का नाम दें, यही प्रक्रिया बिना चूके हर सप्ताह उसी दिन करें। और फिर देखें कि आपके जीवन में क्या होता है!

## दिन 338

---

पृथ्वी का हर इंसान खुश रहना चाहता है। इंसान जिस भी चीज़ की इच्छा करता है, इसलिए करता है क्योंकि उसके हिसाब से उसकी इच्छा पूरी होने पर वह खुश हो जाएगा। चाहे यह स्वास्थ्य हो, पैसा हो, प्रेमपूर्ण संबंध हो, भौतिक वस्तुएँ हों, उपलब्धियाँ हों, नौकरी हो या कोई भी चीज़ हो, खुशी की इच्छा उन सबका अंतिम लक्ष्य है। लेकिन याद रखें, खुशी हमारे भीतर की अवस्था है और बाहर की कोई भी चीज़ सिर्फ़ क्षणिक खुशी ही ला सकती है, क्योंकि भौतिक चीज़ें अस्थायी होती हैं।

स्थायी खुशी हमेशा खुश रहने के आपके चुनाव से मिलती है। जब आप खुशी का चुनाव करते हैं, तो आप सारी सुखद चीज़ों को भी आकर्षित करते हैं। सुखद चीज़ें केक के ऊपर की सजावट हैं; खुशी तो केक ही है।

## दिन 339

---

**अ**गर आपको अपने परिवार के किसी सदस्य की नकारात्मक प्रवृत्ति से कोई समस्या है, तो उन सारी बातों की सूची लिखकर शुरुआत करें जिनके लिए आप उस व्यक्ति की प्रशंसा करते हैं। उन्होंने आपको जीवन में सकारात्मक बनने की प्रेरणा भी दी, इसके प्रति कृतज्ञता को भी इसमें शामिल करें, क्योंकि यह एक ऐसा उपहार है जो वे आपको दे रहे हैं। जब आप अपनी पूरी शक्ति के साथ प्रशंसा पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो आप न सिफ़्र नकारात्मकता के प्रति अपने रुझान को कम कर लेंगे, बल्कि अपने जीवन में सकारात्मक लोगों को भी आकर्षित करेंगे।

खुद को प्रशंसा की आवृत्ति पर ले आएँ। इसके बाद आकर्षण का नियम आपको सिफ़्र सकारात्मक अवस्था वाले लोगों से घेरे रखेगा।

## दिन 340

---

**अ**गर आप किसी बीमार व्यक्ति की मदद करना चाहते हैं, तो आप यह शक्तिशाली काम कर सकते हैं। अपने मन में चित्र बनाएँ कि वह व्यक्ति शक्तिशाली, खुश और स्वस्थ है। इसे असरदार तरीके से करने के लिए अपने मन में एक दृश्य बनाएँ, जिसमें आप और वह व्यक्ति हो। उस दृश्य को अधिक से अधिक सक्रिय करें। कल्पना करें कि आप दोनों कौन से शब्द बोल रहे हैं और उस व्यक्ति को वे चीज़ें करते देखें, जो सिफ़्र एक खुश और स्वस्थ व्यक्ति कर सकता है। इस दृश्य को बार-बार दोहराएँ और अपने मानसिक चित्र को उतनी ही गहराई से महसूस करें, मानो आप सचमुच उसे जी रहे हों।

हालाँकि वह व्यक्ति खुद अपने जीवन का सृजन कर रहा है, लेकिन यह प्रक्रिया उसकी बेहद मदद कर सकती है।

## दिन 341

---

असीमित शक्ति में विश्वास रखें, जो आपके माध्यम से काम कर रही है। यह एक विशुद्ध सकारात्मक शक्ति है जिसे आप अपनी मानसिक एकाग्रता के ज़रिये अपनी मनचाही दिशा में मोड़ सकते हैं। हालाँकि आपको असीमित शक्ति के सामंजस्य में रहना होता है और इसका मतलब है कि आपको सकारात्मकता पर एकाग्र होना चाहिए। जब आप नकारात्मकता पर एकाग्र होते हैं, तो असीमित शक्ति से आपका संपर्क टूट जाता है।

सृष्टि में एकमात्र असीमित शक्ति है और इसका प्रयोग सिर्फ़ सकारात्मक तथा अच्छे कार्यों के लिए ही किया जा सकता है।

## दिन 342

---

**अ**पके भीतर एक दिव्यता मौजूद है। यह वही जीवन शक्ति है, जिसने आपके पैदा होने पर पहली साँस ली थी। यही वह जीवन शक्ति है, जो इस वक्त आपमें साँस ले रही है। यह अविश्वसनीय सद्ग्राव, शांति तथा प्रेम की उपस्थिति है और यह आपके भीतर है। अपने जीवन की इस उपस्थिति के साथ जुड़ने और इसे महसूस करने के लिए ठहरें, अपनी आँखें बंद कर लें, तनावरहित हो जाएँ, विचारों को जाने दें और चंद मिनटों के लिए अपने शरीर के भीतर गहरा ध्यान केंद्रित कर लें।

आप यह अभ्यास जितना ज्यादा करेंगे, आपके भीतर शुद्ध सद्ग्राव, शांति और प्रेम उतना ही ज्यादा उभर आएगा।

## दिन 343

---

“मन और आत्मा के सर्वोच्च विकास को बढ़ावा देने के लिए प्रसन्नचित्त स्वभाव अनिवार्य है; स्वभाव जितना ज्यादा उज्ज्वल, खुश और मधुर होगा, कोई भी गुण उतनी ही ज्यादा आसानी और तीव्रता से विकसित होगा। यह बिलकुल सच है कि प्रसन्नचित्त स्वभाव भी मानसिक गुणों के लिए वैसा ही है, जैसे उजला दिन खेत के फूलों के लिए होता है।”

**क्रिश्मियन डी. लार्सन**(1874-1954 )

द ग्रेट विदिन

## दिन 344

---

**अ**गर आप प्रेम को आकर्षित करना चाहते हों और खुशनुमा रहना चाहते हों, तो क्या करें? लेकिन फिर आप कौन के विवरणों में उलझ जाते हैं और सोचने लगते हैं कि कोई खास व्यक्ति ही आपके आदर्श संबंध का जवाब है। सृष्टि भविष्य में काफ़ी आगे तक देख सकती है और यह जानती है कि कोई खास व्यक्ति आपके सपने को पूरा करेगा या आपका बुरा सपना बन जाएगा। जब आपको किसी खास व्यक्ति का प्रेम नहीं मिलता है, तो आपको ऐसा लग सकता है कि यह नियम काम नहीं कर रहा है। लेकिन यह काम कर रहा है। आपकी सबसे बड़ी इच्छा प्रेम आकर्षित करने तथा बेहद खुश रहने की है, और सृष्टि कह रही है, “वह आपके लिए सही नहीं है, और कृपया रास्ते से हट जाएँ, मैं आदर्श व्यक्ति को आप तक पहुँचाने की कोशिश कर रही हूँ।”

“कौन,” “कहाँ,” “कब,” या “कैसे” में उलझने के बारे में बहुत सावधान रहें, क्योंकि हो सकता है कि इस तरह आप अपनी प्रिय इच्छा को अपने तक पहुँचने से रोक रहे हों।

## दिन 345

---

**अ**प अपने जीवन के लिए स्वयं ही ज़िम्मेदार हैं। जब आप खुद को दोष दिए बिना अपनी सारी पुरानी गलतियों की ज़िम्मेदारी ले लेते हैं, तो यह इस बात का सबूत होता है कि आपने अपनी चेतना में परिवर्तन कर लिया है और अपने जीवन के सत्य को स्पष्ट रूप से देख रहे हैं। इस नई चेतना से आप उस जीवन को खुद-ब-खुद आकर्षित कर लेंगे, जिसके आप हक़दार हैं।

## दिन 346

---

**जू**यादातर लोग अच्छी सेहत के बारे में तभी सोचते हैं जब यह उनके पास नहीं होती है, लेकिन आप बेहतरीन सेहत का इरादा किसी भी समय कर सकते हैं। हर दिन अपने इरादे की शक्ति का इस्तेमाल करें और खुद को स्वस्थ व अच्छे रूप में देखें।

अपने लिए स्वास्थ्य की इच्छा करें और दूसरों के भी स्वस्थ रहने की कामना करें।

## दिन 347

---

**अ**प अपने इरादे की शक्ति से अपना भविष्य बनाते हैं। इरादा और कुछ नहीं, बल्कि वर्तमान में अपने भविष्य को तय करने का चेतन कार्य है। इस समय आपके इरादों के आधार पर ही स्वास्थ्य, संबंधों में सद्ग्राव, खुशी, धन, सृजनात्मकता और प्रेम भविष्य में आपकी ओर आएगा।

हर दिन इच्छा करें और अपने भावी जीवन का सृजन करें।

## दिन 348

---

**ज**ब आप द सीक्रेट पुस्तक पढ़ें या द सीक्रेट फ़िल्म देखें, तो सिर्फ़ उसी आवृत्ति पर मौजूद ज्ञान ग्रहण कर सकते हैं, जिस पर आप उस वक्त होते हैं। अगली बार जब आप पुस्तक पढ़ते हैं या फ़िल्म देखते हैं, तो आप ज़्यादा ग्रहण करते हैं, कहीं ज़्यादा। और यह प्रक्रिया कभी खत्म नहीं होती। हर बार पढ़ने या देखने पर आपको ज़्यादा चीज़ें मिलती रहेंगी और सिद्धांत ज़्यादा स्पष्ट होते जाएँगे। ऐसा इसलिए है, क्योंकि आपकी चेतना का हर बार विस्तार हो रहा है।

## दिन 349

---

**अ।** ज कृतज्ञ बनें। अपने प्रिय संगीत के लिए कृतज्ञ हों, उन फ़िल्मों के लिए जो आपको अच्छा महसूस कराती हैं, अपने फ़्रोन के लिए जो आपको लोगों से जोड़ता है, अपने कंप्यूटर के लिए और बिजली के लिए जो आपके जीवन को प्रकाशित करती है। वायु यात्रा के लिए कृतज्ञ हों, जो आपको कहीं भी उड़ाकर ले जाती है। सड़कों और ट्रैफ़िक लाइट के लिए कृतज्ञ हों, जो ट्रैफ़िक को व्यवस्थित रखती है। उन लोगों के प्रति कृतज्ञ हों, जिन्होंने हमारे लिए पुल बनाए। अपने प्रियजनों के प्रति, अपनी संतान के प्रति, अपने पालतू पशु के प्रति कृतज्ञ हों। उन आँखों के लिए कृतज्ञ हों, जिनकी बदौलत आप यह शब्द पढ़ने में सक्षम हैं। अपनी कल्पना के लिए कृतज्ञ हों। कृतज्ञ हों कि आप सोच सकते हैं। कृतज्ञ हों कि आप बोल सकते हैं। कृतज्ञ हों कि आप हँस सकते हैं और मुस्करा भी सकते हैं। कृतज्ञ हों कि आप साँस ले सकते हैं। कृतज्ञ हों कि आप जीवित हैं! कृतज्ञ हों कि आप ही आप हैं!

कृतज्ञ हों कि एक ऐसा शब्द है, जो आपकी ज़िंदगी बदल सकता है और उन्हें बारम्बार कहें।

धन्यवाद! धन्यवाद! धन्यवाद!

## दिन 350

---

“कोई भी कर्तव्य इससे ज़्यादा अनिवार्य नहीं है, जितना कि दयालुता को वापस सृष्टि में  
लौटाना।”

**मार्कुस टुलियस किकेरा** (106-43 ई.पू.)

## दिन 351

---

**नि**यम सटीक है, नियम निश्चित है और यह कभी असफल नहीं होता। इसलिए जब यह लगे कि यह काम नहीं कर रहा है, तो आपको इस बात की गारंटी दी जा सकती है कि यह नियम नहीं है, जो असफल हो रहा है। ग़लती सिफ़्र इसका इस्तेमाल करने वाले व्यक्ति की ही हो सकती है। यह बेहतरीन खबर है! क्या चलने में अभ्यास की ज़रूरत नहीं पड़ी थी? क्या कार चलाने में अभ्यास की ज़रूरत नहीं पड़ी थी? मगर अभ्यास के साथ आप चल पाए और अभ्यास के साथ आप गाड़ी भी चला पाए।

अभ्यास ही वह चीज़ है, जो आपके और हर चीज़ के बीच खड़ी है!

## दिन 352

---

**जी** वन का खेल विश्वास करने के शक्तिशाली तरीके बनाने के बारे में है, ताकि आप अपना मनचाहा प्राप्त कर सकें। आप जो भी बड़ी चीज़ माँग रहे हैं, इसी समय उसका जश्न मनाने के बारे में सोचें, मानो वह आपको मिल चुकी हो।

## दिन 353

---

अपने कल की इच्छा करने के लिए आज दो मिनट न देने का कोई बहाना नहीं है।

## दिन 354

---

**सृ**जनात्मक बनें और अपनी मनचाही चीज़ की प्राप्ति दिशा में शक्तिशाली कार्यों का इस्तेमाल करें। अगर आप आदर्श साथी को आकर्षित करना चाहते हैं, तो अपनी अलमारी में जगह बनाएँ। अगर किसी नए मकान को आकर्षित करना चाहते हैं, तो अपने वर्तमान मकान को व्यवस्थित कर लें, ताकि पैकिंग आसानी से हो सके। अगर आप किसी यात्रा पर जाना चाहते हैं, तो सूटकेस बाहर निकाल लें, उस जगह के चित्रों से खुद को घेर लें और खुद को चित्रों में रख लें।

इस बारे में सोचें कि अगर आपके पास आपकी मनचाही वस्तु हो, तो आप क्या करेंगे और फिर सृजनात्मक कार्य करें, जिनसे यह स्पष्ट हो जाए कि वह आपको इसी समय मिल रही है।

## दिन 355

---

धन्यवाद। धन्यवाद। धन्यवाद। धन्यवाद। धन्यवाद। धन्यवाद। धन्यवाद।

किसी भी दिन को तुरंत बेहतर बनाने के लिए लगातार सात बार “धन्यवाद” कहें और उसे दिल से महसूस भी करें।

## दिन 356

---

**अ**र्थात् कर्षण का नियम सटीक है और जब आपको मनचाहे परिणाम नहीं मिलते हैं, तो ऐसा सिफ़्र इसलिए होता है, क्योंकि आपने नियम का दुरुपयोग किया है। अपनी मनचाही चीज़ के बजाय आप उन चीज़ों का सृजन कर रहे हैं जिन्हें आप नहीं चाहते। लेकिन दोनों तरह से आप ही सृजन कर रहे हैं।

नियम अचूक है, अमोघ है और यह हमेशा आपके लिए प्रतिक्रिया कर रहा है।

## दिन 357

---

“जो कुछ भी हम देखते हैं, वह उसकी छाया है, जिसे हम नहीं देखते हैं।”

**डॉ. मार्टिन लूथर किंग जूनियर**

(1929-1968 )

मेज़र ऑफ़ अ मैन

## दिन 358

---

सप्ताह के सात दिन लें और आकर्षण के नियम के शक्तिशाली इस्तेमाल से अपनी पूरी ज़िंदगी बदल लें। अगर आप चाहें, तो सिफ्ट एक दिन से शुरुआत करें और कुछ सप्ताह तक उस दिन को अपनी आदत बना लें, इसके बाद ही दूसरा दिन जोड़ें। वही करें, जो आपके लिए सबसे अच्छी तरह काम करता हो, क्योंकि अहम बात यह है कि आप इसे करें।

## सुविचार वाला सोमवार

हर सोमवार यह इरादा करने का दिन है कि आप सिफ्ट अच्छे विचार ही सोचेंगे। अपने लिए अच्छे विचार सोचें और दूसरों के लिए अच्छे विचार सोचें। हर उस चीज़ को नज़रअंदाज़ कर दें, जिससे अच्छे विचार उत्पन्न नहीं हो रहे हैं। दिन की शुरुआत में अपनी तमाम इच्छाशक्ति के साथ आदेश दें और संकल्प लें, “मैंने आज हज़ारों अच्छे विचार सोचे हैं।” इंसान एक दिन में औसतन 50,000 से ज़्यादा विचार सोचता है, इसलिए आपके पास आज अच्छे विचार सोचने के 50,000 मौके हैं।

## दिन 359

---

### प्रशंसा वाला मंगलवार

हर मंगलवार प्रशंसा, प्रशंसा और केवल प्रशंसा करने का दिन है। मौसम, अपने कपड़ों, परिवहन के साधनों, महान आविष्कारों, अपने घर, अपने भोजन, बिस्तर, परिवार, कामकाजी सहकर्मियों, वेटर, स्वास्थ्य, शरीर, आँखों, कानों और अपनी सभी इंद्रियों की प्रशंसा करें। खास तौर पर अपने अतीत और भविष्य के बेहतरीन समय की प्रशंसा करें। और अंत में, यह प्रशंसा करें कि हर प्रशंसा वाले मंगलवार को आप एक आश्वर्यजनक जीवन का सृजन कर रहे हैं!

## दिन 360

---

### सत्कार्य वाला बुधवार

हर बुधवार सृष्टि के बैंक के आपके खाते को अच्छे कर्मों से भरने का दिन है। अपने आसपास के लोगों को प्रोत्साहन दें। दयालुता का व्यवहार करें। हर मिलने और बात करने वाले को अच्छे शब्द कहें। आज बड़ी टिप दें। बिना किसी कारण के उपहार दें। दूसरों के लिए दरवाजे खोलें। किसी के लिए कॉफ़ी या लंच खरीदें। प्रशंसा करें। हर एक को मुस्कान दें। जो आपकी सेवा करते हैं, उनमें सच्ची रुचि दिखाएँ। अपने क्ररीबी लोगों पर ध्यान दें। सड़क पर ड्राइवरों के प्रति करुणा रखें। दूसरों को बैठने के लिए अपनी सीट दें और खड़े हो जाएँ। अच्छे काम करने के अवसरों की तलाश करें; आकर्षण का नियम आपके सत्कार्य वाले बुधवार को इन अवसरों की प्रचुरता से भर देगा।

जब आप सत्कार्य वाले बुधवारों को अपना सब कुछ देते हैं, तो सृष्टि प्रतिक्रिया करेगी और यह आपके सप्ताह का अब तक का सबसे अच्छा दिन बन जाएगा।

## दिन 361

---

### धन्यवाद वाला गुरुवार

हर गुरुवार “धन्यवाद” कहने और महसूस करने का दिन है, जितने भी तरीकों से आप कर सकें। उन सभी लोगों और घटनाओं की सूची बनाएँ, जिन्हें आप धन्यवाद देना चाहते हैं। आज उन लोगों को धन्यवाद दें, जिन्होंने आपके लिए कुछ किया है। जब आप पैदल चलें, तो हर क़दम उठाते समय मन ही मन “धन्यवाद” कहते रहें। जब कार चलाएँ, तो हर बार कार रुकने को “धन्यवाद” कहने का संकेत मानें। दिन में कई बार और मन में सात बार लगातार “धन्यवाद” सोचें और महसूस करें। दूसरे लोगों को “धन्यवाद” कहने के हर अवसर की तलाश करें और इसे इतनी गहराई के साथ कहें कि वह व्यक्ति सीधे आपकी ओर देखने लगे। हर गुरुवार पूरे समय धन्यवाद दें और धन्यवाद को दिन का अपना प्रमुख विचार, भावना व शब्द बना लें।

धन्यवाद - एक शब्द, बेहद आश्वर्यजनक शक्ति, और इसे बोलकर इसमें शक्ति भरने के लिए इसे बस आपकी ज़रूरत है। धन्यवाद!

## दिन 362

---

### अच्छी भावनाओं वाला शुक्रवार

हर शुक्रवार आपके लिए वह दिन है, जब आप अपने भीतर की सभी अच्छी भावनाओं का उपयोग और विस्तार करते हैं।

आज जब आप दिन में आगे बढ़ें, तो पूरा ध्यान इस बात पर दें कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं। अपने अंदर बेहतर भावनाएँ भरते रहें, बार-बार भरते रहें। अच्छी भावनाओं के सैलाब से खुद को भरने के लिए अपने दिन को उन चीज़ों से भरें, जिनसे आपको अच्छा महसूस होता हो। अपना प्रिय गीत सुनें। प्रिय लंच लें। प्रिय मित्र से मिलें। वे चीज़ें करें, जिन्हें करने से आपको प्रेम है और जो आपको इतना अच्छा महसूस कराती हैं कि आप अच्छी भावनाओं से लबरेज़ हो जाते हैं और अपने चेहरे से मुस्कान नहीं हटा पाते। आप अच्छी भावनाओं से इतने ओत-प्रोत हो जाएँगे कि आप दिन भर प्रफुल्लित रहेंगे।

## दिन 363

---

### तनाव से मुक्ति वाला शनिवार

हर शनिवार आपके लिए वह दिन है, जिसमें आप खुद को किसी पक्षी जितना स्वतंत्र महसूस करें; उतना ही स्वतंत्र, जितना बचपन में करते थे। खेलें! मौज करें! यह दिन अपने आनंद को खोजने और उसमें जीने का दिन है।

ऐसी चीज़ें करें, जिनसे आपको अद्भुत महसूस होता है। ऐसी चीज़ें करें, जो आपको हँसाती हैं। ऐसी चीज़ें करें, जिनकी बदौलत आप खुशी से उछल पड़ते हैं। पूरे दिन नाचें, गाएँ, कूटें और सीटी बजाएँ। आज अपने जीवन का जश्न मनाएँ! जब आप खेलते हैं, हँसते हैं, मुस्कराते हैं और मज़े करते हैं, तो आप आलोकित हो जाते हैं। आलोकित होने पर आप नकारात्मकता को मुक्त कर देते हैं। आप जितना ज़्यादा आलोकित महसूस करते हैं, उतनी ही ज़्यादा नकारात्मकता दूर हो जाती है। शनिवार आपके आलोकित होने का दिन है!

याद रखें, जीवन कभी न खत्म होने वाला खेल है और आप यह खेल अनंत काल तक खेलने वाले हैं!

## दिन 364

---

### सब अच्छा करने वाला रविवार

हर रविवार एक पल निकालकर पिछले सप्ताह को पलटकर देखें और सभी अच्छी चीज़ों को याद करें। फिर अपने भविष्य की ओर ध्यान दें। आने वाले सप्ताह को देखें और उसमें होने वाली सभी अच्छी चीज़ें देखें।

अब आप आराम कर सकते हैं, क्योंकि आपका सृजन आदर्श है और आप संतुष्ट हैं कि यह सब अच्छा है।

## दिन 365

---

**अप** अपनी आदर्श यात्रा में आदर्श जगह पर हैं। आप ठीक वहीं हैं, जहाँ आपको होना चाहिए था, क्योंकि आप ही ने इसे चुना था। आप इस समय जितने आदर्श हैं, उससे ज़्यादा आदर्श नहीं हो सकते थे।



## रॉन्डा बर्न के बारे में

रॉन्डा ने अपनी यात्रा द सीक्रेट फ़िल्म से शुरू की, जिसे संसार के लाखों लोगों ने देखा। इसके बाद उन्होंने द सीक्रेट पुस्तक प्रकाशित की, जो पूरी दुनिया में बेस्टसेलर बन गई। यह 50 भाषाओं में उपलब्ध है और पूरे संसार में इसकी 2.4 करोड़ से अधिक प्रतियाँ बिक चुकी हैं।

द सीक्रेट 198 से अधिक हफ्तों तक न्यू यॉर्क टाइम्स बेस्टसेलर सूची में रह चुकी है। इसे हाल ही में यूएसए टुडे द्वारा पिछले 15 वर्षों की शीर्षस्थ 20 बेस्टसेलिंग पुस्तकों में से एक घोषित किया गया है।

उन्होंने अपना उल्लेखनीय कार्य 2010 में द पावर और 2012 में द मैजिक के साथ जारी रखा। ये दोनों पुस्तकें भी न्यू यॉर्क टाइम्स बेस्टसेलर रही हैं।